राजस्थान प्रकाशन, जयपुर-2


सामाजिक उपन्यास

प्रकाशक राजस्थान प्रकाशन त्रिपोलिया बाजार जयपुर-302 002

संस्करण प्रथम 1986

मूल्य पच्चीस रुपये

मुद्रक मॉडर्न प्रिण्टर्स गोधों का रास्ता जयपुर-302 003

लेखक मुकर्रब खान आजाद

Phisle Paanw (Novel) by Mukarab Khan Azad Rs 25/-

फिसले पाँव

सम्प्रति शिक्षक महाविद्यालय, जोधपुर मे कार्यक्रमानुसार आलोचना पाठ चल रहे थे। प्रशिक्षणार्थ आए अध्यापक बडे व्यस्त थे, क्योंकि बी एड मे ये पाठ विशेष महत्त्व रखते हैं। आलोचना पाठ, एक तरह से फाइनल पाठो की रिहर्सल होती हैं। इनकी सफलता असफलता ही बी एड कोर्स का आधार बनती हैं। अत शिक्षक कडी मेहनत करते हैं।

क्रिटिसिजम लेशन दे रहे अध्यापक की कक्षा मे छात्रो के अलावा कुछ साथी शिक्षक भी होते हैं। ये कक्षा म पीछे बैठकर पाठ की त्रुटिया देखते हैं तथा पाठ की सफलता का मूल्याकन करते हैं। बाद मे पढाने वाला इन ऑब्जर्वेशन करने वालो की क्रिटिसाइज देखकर अपना आत्म निरीक्षण करता है तथा अगले पाठ मे यथेष्ट सुधार करता है। ऐसे पाठो मे कॉलेज के दो-तीन प्राध्यापक भी निरीक्षण कार्य करते हैं।

इस महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी जिनमे महिला शिक्षको की सख्या भी पर्याप्त होती है – उम्मेद, सरदारपुरा, सिवाची गेट, श्यामसदन और महेश इङ्गलिश स्कूलो मे अपने सामान्य, आलोचना व फाइनल पाठ देते हैं।

आज सरदारपुरा स्कूल मे लेसन देने वाले शिक्षक तो पाँच ही थे, किन्तु ऑब्जर्वेशन करने वालो की भीड थी। हर कोई शमा का लेसन देखने के लिए उत्सुक था। कुछ उसके अध्यापन कौशल से प्रेरणा लेने के वास्ते, कुछ उसे छकाने व चूकाने के वास्ते। शमा वाकई शमा थी और उसका अध्यापन कौशल देखते ही बनता था। साथी शिक्षक ही नहीं महाविद्यालय के प्राध्यापक भी उसका पाठ खूब सराहते थे।

शमा एक मुस्लिम युवती थी प्रतिभा सम्पन्न किन्तु स्वच्छन्द प्रकृति वाली। उत्तर प्रदेश मे जन्मी और वही पढ़ी। पिता जुबैर साहब भारतीय वायुसेना में अधिकारी थे और आजकल उनकी पोस्टिंग यहीं थी। एक दिन एम ए पास व्यर्थ हो बैठी अपनी बेटी से वह बोले—'बी एड म दाखिला ले लो। वक्त भी गुजरेगा और एक डिग्री भी मिल जायेगी।'

शमा को खुदा ने प्रभावशाली व्यक्तित्व गजब की वक्तृत्व शक्ति और समग्र प्रतिभा खुले दिल से अता फरमाई थी। लिहाजा प्रवेश के कुछ दिनो बाद ही बी एड कालेज म उसकी तूती बोलने लगी थी।

प्रतिभा, जाति धर्म से ऊपर होती है। उसे ये आडम्बर परिवेष्टित नही कर पाते। यह एक उजाला होता है पात्र नही। यह कोई नही देखता कि दीपक लोहे का है मिट्टी का बना है या स्वर्ण जडित है। सबका रोशनी से मतलब होता है और यही रोशनी सबको आकर्षित करती है।

शमा मे जो प्रतिभा थी वह यहाँ उपयोगी रही। दकियानूस और सकीर्ण अध्यापक, अध्यापिकायें भी उसके साथ खडा रहने म भी गर्व अनुभव करते। सरोज शर्मा, कामिनी पडित जैसी नाक भौं सिकोडने वाली अध्यापिकायें उसके साथ बैठकर खाना पीना कर लिया करती और गट-गट हँसती। यह सब उदारता व सहिष्णुता की राह मे अनुकरणीय कदम था। शमा ने जैसे सबको मिलाने के लिए एक कडी का काम किया। पूरा शिक्षक महाविद्यालय ही इस सब मे तो जैसे एक हार मे गुथ कर फूल रहा था।

इस आलोचना पाठ से पहले पढाए गए सैंतीस पाठों मे सबने देखा कि बच्चो का ध्यान अपने मे केन्द्रित रखने की शमा मे अपूर्व क्षमता है। वैसे अध्यापन काय मे कुछ अन्य अध्यापक भी माहिर थे, पर शमा के मुकाबले मे निस्स देह व उन्नीस ही थे।

वे पढाते समय कक्षा म गम्भीर हो जाते जबकि शमा के चेहरे पर घुले फूल सी कोमल मुस्कान तैरती होती और शायद यही फर्क उसे इक्कीस बनाए हुए था।

घण्टा बजा। सरदारपुरा स्कूल के प्रधानाध्यापक कक्ष से दो प्राध्यापक

फाइलें लिए बाहर निकल कर ऊपर वाली मंजिल की तरफ लपक गए। वहाँ जितने छात्र थे उतनी ही संख्या में आब्जर्वेशन करने वाले भी मौजूद थे।

शमा ने कक्षा के छात्रों को स्नेह पूर्वक देखा और खड़ा करके व्यवस्थित कर पाठ शुरू कर दिया। शांत सरिता की तरह वह आगे बढ़ रही थी। और कक्षा में यह शांति जैसे पालथी मार ही बैठ गई। कोई आवाज नहीं। बच्चे मन्त्र मुग्ध। बस एक सुरीली आवाज गूँज रही थी। कक्षा में सफेद साड़ी और नीले ब्लाउज में कसी एक सम्भ्रान्त भावी अध्यापिका नन्हे नागरिकों की भावनाओं को समझती हुई अपनी बात समझाए जा रही थी।

किन्तु तभी शमा के पाँव लड़खड़ाए। वह रुक गई। किताब छोड़कर तब उसने पानी माँगा और पानी आता इससे पूर्व ही वह सिर पकड़ कर धम से कुर्सी पर बैठ गई। ऑब्जर्वेशन करती अध्यापिकाओं ने उसे संभाला किन्तु वह बेहोश होकर लुढ़क गई।

पाठ में तन्मय बच्चों के मासूम चेहरे उतर गए। कइयों की तो हठात् आँखें ही डबडबा आईं। सभी 'क्या हुआ, क्या हुआ' कहते हुए वहां एकत्र हो गए और पाठ जहाँ था वहीं छूट गया।

अचेत शमा को बैंच पर लिटाया गया और प्राथमिक उपचार के बाद उम्मेद जनाना अस्पताल से डॉक्टर को भी बुला लिया। वैसे शिक्षक महाविद्यालय का भी एक डाक्टर था। वह उस दुबली पतली कुँआरी प्राध्यापिका का पापा मेडिकल फीस लेनेके सिवा कोई काम का न था। उसने शायद ही कभी प्रशिक्षणार्थियों के स्वास्थ्य की जाँच की हो। शायद ही कभी कोई स्वास्थ्य सम्बन्धी भाषण या चर्चा की हो। बस प्राध्यापिका का बाप था अतः उसे यह 'पेंशन' मिलती थी। लिहाजा मौके बेमौके दूसरे डॉक्टरों की सेवाएँ ही लेनी पड़ती थी। उम्मेद जनाना अस्पताल से आया डॉक्टर अपने साथ नर्स भी लाया था। उसने शमा को देखा।

डॉक्टर ने नर्स की तरफ देखा और फिर इर्द गिर्द खड़ी अध्यापिकाओं को अर्थपूर्ण दृष्टि से निहारते हुए बोला—

"क्या यह शादीशुदा है ?"

"जी नहीं" वफा नाम की एक अध्यापिका आगे आई—"क्यों ?"

"क्यो क्या ? खैर, आप इधर आइये।"

डॉक्टर ने वफा को एक तरफ ले जाकर जो कुछ कही यह बात बेहूद बुरी थी। जैसे अगारा छू गया हो उछली वफा। 'सत्यानाश !' उसके होठ बुदबुदा कर रह गए। "यह माँ बनेगी ?'

अगले दिन यह मनहूस बात पर लगाकर इधर-उधर उड़ने लगी। शमा की तमाम चहेती सहेलियो मे हडकम्प मच गया और कॉलिज के चारो सेक्शनो म यही चर्चा थी।

सरोज और कामिनी पडित वफा के पास दौड़ी आई 'क्या यह सच है ?" उनके हाथा मे किताबें बेतरतीब थी और वे स्वय बदहवास।

"सब कुछ सही है। निगोडी से पूछा ता मुस्करा कर जवाब दिया—खुदा करे यह झूठ न हो। मैंने उस समझाया था पर कम्बख्त ने ध्यान ही नही दिया। हम कित्ता अच्छा मानते हैं उसे।' वफा ने अफसोस मे हाथ मले।

"और उसने हमारे समाज की नाक उतार ली। देख, वफा ! ये काम अच्छे थोडे ही है। जवानी उसी को आई थी क्या ?"

'सवाल जवानी का नही, व्यवस्था का है। कुआरियाँ यह सब कसे कर सकती हैं। फिर यहा प्रशिक्षण मे ? हे राम ! बहुत बुरा किया शमा ने।' सराज शर्मा दुखी हो रही थी।

"पर उसे तो रच मात्र ही रज नही। अल्ला कसम साली मुस्करा रही थी। मैंने हजार बाते सुनाई, खूब कोसा। पर कमाल है उसके चेहरे पर एक भी शिकन नही। कहती रही माँ बनना तो काल की सार्थकता है। मातत्व की बेशकीमती सफलता।" वफा ने हाथ हिलाए और फिर गहरा सास खीच कर जैसे चेतावनी दी— अब प्रिंसिपल हम सबको खबर लेगा और उस कम्बख्त का नाम कालेज से कटा ही समझो।'

जिसकी आशका थी वही बात हो गई। प्रिंसिपल भाटिया को जो

खबर लगी तो ग्रादत के मुताबिक वह खुर्राट चीख पडा। फिर सिर थाम कर मि० राही से बोला—

"हमारे यहाँ बरसो से सह शिक्षा है। अध्यापिकाएँ खूब दूर दराज इलाको से जोधपुर ग्राती हैं ग्रौर प्रशिक्षण पाती हैं। जम्मू कश्मीर से लेकर दक्षिण पूर्व तक के हमारे यहाँ ट्रेनीज हैं। फिर ? फिर इस बार ही यह क्यो हुआ ? शमा जो कॉलेज का चमकता सितारा है वही फिसली ! पता करो इसे किसने चक्कर मे चढा लिया ?"

"सब पता कर लिया है सर ! मिस लूथरा से पूछा था मैंने।" ग्रौर राही साहब रुक गए।

"क्या कह रही थी वह ?"

"उसने बताया जैंदी के साथ इसके ताल्लुकात रहे हैं।"

"जैंदी ? ग्राश्चय है। यह ग्रच्छो ग्रच्छों को क्या हो गया इस बार।"

"यही तो मैं सोच रहा हूँ। दोनो ही कॉलेज के अच्छे स्कोलर हैं। मति कैसे मारी गई इनकी। इन्होने जरा भी नही सोचा कि ग्रन्य प्रशिक्षणार्थियो पर ग्रौर सस्थान पर इसका क्या प्रभाव पडेगा।"

"व्यवस्था ग्रौर इज्जत के लिए कोई क्यो सोचेगा ? चिन्ता तो मुझे है। मैं ही तो हूँ यहा का प्रिंसिपल।" भाटिया उद्विग्न होकर गिरगिट की तरह गदन हिलाने लगा—"मिस्टर राही ?"

"यस सर !"

'मैं इन दोनो को ग्राज ही कॉलेज से दफा कर देता हूँ। नही चाहिए हमे यह घिनौना विकार।'

राही चुप। कुछ सोचते हुए पेपरवेट को हथेली पर रगडने लगे। 'शमा की प्रतिभा, उसकी समझदारी हमे प्रिय है। उसने यह कदम क्या कुछ सोचकर उठाया यही एक उलझनहै मेरे लिए। सर, हम यहाँ ग्रपने टीचस को सायकोलोजी का भी ग्रध्ययन कराते हैं। ग्रत किसी भी काय मे की गई जल्दी शायद ठीक न हो। ग्रच्छा रहे जैंदी से बात कर ली जाय।"

"आप का कहा ठीक है । मैं बात कर लेता हूँ ।" प्रिंसिपल ने घंटी बजाई ।

'इस जैदी में बच्चे का पूरा नाम क्या है ?'

'सरवर जैदी । 'डी' सेक्शन में है ।'

'हूँ । इस घटना की बदबू तो सब जगह फैल गई होगी ।'

'यस सर ! अखबार ने इसे छापा है । 'जलते दीप' का यह अंक देखिए ।' राही ने पत्र का एक पन्ना प्रिंसिपल के आगे फैलाया तो वह चश्मा टेढ़ा कर खबर पढ़ने लगा ।

इस समय भाटिया की गोरी सिकुड़ी पेशानी पर अनेक रेखाएँ बनी और मिटी । चेहरा लाल हो रहा था और नासिका जैसे फूल रही थी ।' 'चपरासी नहीं आया । उसने फिर घंटी बजाई तो राही साहब बोले—

'यहीं खड़ा है न यह ।'

'ठीक है प्रिंसिपल ने ऊपर देखा । 'डी सेक्सन से सरवर जैदी को बुलाओ । यह चिट ।'

रामनाथ चिट लेकर ऊपर चला गया ।

शिक्षक महाविद्यालय में ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों से लेटर बोर्ड तक पहुँच कर उत्तरी गैलेरी में मुड़ना पड़ता है । वहाँ दाहिने हाथ में सर्व प्रथम डी सेक्शन है । आगे 'सी और ठीक सामने 'ए' तथा बाएँ बाजू 'बी' सेक्शन ।

यह पहला पीरियड ही था । डी सेक्सन को पी माथुर पढ़ा रहे थे । उन्होंने रामनाथ से चिट ली और देख कर पुकारा मि० जैदी, इस पीरियड के बाद प्रिंसिपल साहब से मिल लेना—उन्हीं के आफिस में ।'

'जैदी तपाक से खड़ा हुआ— जी बुरा न मानें तो अभी चला जाऊँ ।'

'जा सकते हो ।'

—और माथुर पढ़ाने में पुनः संलग्न हो गए । पर क्लास की एकाग्रता भंग हो चुकी थी । सभी खुसर फुसर करने लगे तो उन्होंने टोका—'अटेंशन प्लीज ।'

प्राध्यापक की चेतावनी का थोडा सा प्रभाव दिखा फिर वही दबी दबी आवाजें। अध्यापिकाएँ भी शमा की खाली कुर्सी को देख कर मुस्कराने लगी। शमा अस्वस्थता के कारण कॉलेज नही आ रही थी और उसकी अनुपस्थिति साथ वालियो को बेतुकी बातें बनाने के लिए सुनहरा मौका दे गई।

'मे, आई कम इन सर!' दरवाजे पर पडी चिक उठाई जैदी ने!

'हूँ आ जाओ।' प्रिंसिपल ने दृष्टि उठाई। जैदी भीतर आकर राही साहब के सकेत पर सामने वाली कुर्सी तक बढ गया। वह बैठा ही था कि प्रिंसिपल बोला—'तुमने अशोभनीय काम किया है जैदी। वैसे तुम कितने अच्छे और योग्य हो। यह मैं बखूबी जानता हूँ। वह शमा भी प्रतिभा की खान है। मडोर मे पिकनिक हुई थी न, मैं तभी से उसे जानता हूँ। प्रभावित भी हूँ उससे।—हमारी आशाएँ हो तुम लोग। किन्तु '

भाटिया ने मुँह इस तरह बनाया मानो कोई कडवी चीज जीभ पर रख दी गई हो और वह बेस्वाद को थूकना चाह रहा हो। किन्तु तुम दोनो रगे सियार निकले। वह फिर पूरे कडुवाहट से उत्तेजित सा होकर बोला—'एकदम गैर जिम्मेदार, बेवकूफ और आवारा" '

'सर!' जैदी का समूचा अस्तित्व कसमसा उठा। वह कम से कम 'आवारा' शब्द कतई बर्दाश्त न कर पाया था।

सट अप' भाटिया चीखा और सरवर का आक्रोश कुछ दब गया। वह नत मस्तक जरूर था पर परस्पर गुंथे हाथ यह बताने को काफी थे कि वह भीतर उठ रहे भयकर तूफान से जूझ रहा था।

'यह शिक्षक महाविद्यालय अपने आप मे एक शानदार इतिहास समेटे है। यहा अनुशासन, प्रशासन और बेजोड अध्ययन सदैव रहा है। पर तुम तो न जाने किस वातावरण मे पलकर यहाँ आए कि सब कुछ मटियामेट कर दिया। सुनो, यह तुम्हारी नहीं महाविद्यालय की बदनामी हुई है।'

प्रिंसिपल ने राही साहब की तरफ देखा—'आप क्या कहते हैं, अपने प्रिय छात्राध्यापक को।'

'मैं? मैं क्या कहूँ आप जो कह रहे हैं। फिर भी अच्छे लोगो के

चरित्र मे ऐसी कमजोरी असह्य होती है, काश ! शमा और जैंदी इस महाविद्यालय का नाम उज्ज्वल करते ।'

'आह ! मि० राही मैं अत्यन्त दुःखी हूँ मेरे सपने ढह गए । वरना शमा और जैंदी को शिक्षक दिवस पर क्या कम सराहा गया था ! मैंने सगर्व अपने अच्छे शिक्षकों की वहाँ सूची देकर पारितोषिक बटोरे थे । शमा को मान पत्र भी मिला था ।'

इसके बाद देर तक भाटिया सिर थामे बैठा रहा । उसने अपने हाथ से प्रशिक्षणार्थियो का कभी बुरा नही किया था । वह ऊपर से खौलता था पर अन्दर से साफ होता था, पर आज की स्थिति भिन्न थी । अपनी भावुकता, उदारता व शिष्य स्नेह को प्रशासन की धार से काट कर जो फैसला दिया वह चौंकाने वाला था ।

'मि० जैंदी ! खेद है कि तुम्हें और शमा को यह संस्थान सदा के लिए अलविदा कह रहा है । तुम अपना नाम अब बी एड कॉलिज से कटा समझो । जाओ यहाँ इश्क विश्क के लिए कोई स्थान नही । डेटिंग कॉलिजो मे होती होगी, टीचर्स कॉलिजो मे नही—जाओ ।'

भाटिया गुस्से मे अपने आपको भूलकर अनर्गल भी कह जाता । उसकी यह सनक देर तक नही कभी कभी तो दिनो तक रहती । मि० राही ने इशारा किया तो जैंदी उठा और बाहर आ गया ।

सरसर सीधा अपनी क्लास के सामने आकर रुका । वह भीतर न जाकर वहीं ठिठका खडा था कि मिसेज सक्सेना ने देख लिया । दूसरा पीरियड इसी का था डी सेक्शन में ।

बाहर क्यो ठहर गए अन्दर आ जाओ जैंदी ।' मिसेज सक्सेना घटना से परिचित थी और इसे प्रिंसिपल के बुलावे के बारे मे उसे कक्षा ने बता दिया था । अत उसने फिर कहा—'मि० जैंदी कम इन ।'

'मेडम ! कैसे आऊँ मैं अन्दर । मेरा नाम कालेज से हटा दिया गया है ।'

मेडम थोड़ा मुस्कराई। फिर शांत स्वर मे बोली—'ऐसा क्यों कहते हो। यह तो प्रिंसिपल साहब गुस्से मे हैं यों ही कह दिया होगा। यह शांत होकर सब कुछ माफ कर देंगे। उनके स्वभाव की यही विशेषता है। तुम अन्दर आकर बैठो। टॉपिक इम्पोर्टेंट है।'

सरवर उलझन की स्थिति मे किंकर्तव्य विमूढ़ खड़ा रहा। फिर हँसकर बोला—'मेडम! प्रिंसिपल पूरी बेइज्जती पर उतारू है। अभी तो वह ओपन थियेटर मे सबको इकट्ठा कर अपनी भड़ास निकालेगा। वह देखो चपरासी यही सूचना ला रहा है।'

कॉलिज के पिछवाड़े मे मच के सामने जहाँ प्रेयर होती है, वही है ओपन थियेटर। घुसते ही बाईं तरफ कैंटीन तथा दाईं तरफ वाली सीढ़ियाँ चढ़ें तो पहले रीडिंग रूम है और आगे शानदार लायब्रेरी।

कोई तीन सौ अध्यापक अध्यापिकाएँ जब सेक्शन वाइज खड़े हो गए तो पी टी आई ने सावधान विश्राम करवाकर प्रिंसिपल के आने की घोषणा की। खिन्न मुद्रा मे तब प्रिंसिपल आया और कुछ देर मौन खड़ा सबको खा जाने वाली दृष्टि से घूरता रहा। विज्ञान कक्ष वाले और लायब्रेरी कर्मचारी ऊपर से झुककर नीचे झाँकने लगे थे। इस घटना को सुनने सुनाने मे सभी दिलचस्पी ले रहे थे।

तब इस भयावह सन्नाटे को भाटिया ने भंग किया। प्रिंसिपल बगैर भूमिका ही बड़बड़ाया—'तुम लोग टीचर हो। कुछ फ्रेश कंडीडेट्स हैं पर वे भी अध्यापक ही बनेंगे। यही तो ट्रेनिंग है यहाँ। लेकिन सोचो, चन्द महीनों के लिए ही तो आए हो यहाँ। सब साथ रहते हो। साथ पढ़ते हो। सहशिक्षा ही है यह। परस्पर मित्रता भी हो सकती है। किन्तु अपना चरित्र ही गँवा बैठो यह कैसे बर्दाश्त हो। क्या बचपना है—किशोर अवस्था भी नहीं… फिर यह भटकाव क्यों?'

यहाँ एकत्र होने और मेरी खीज का कारण उम्मीद है तुम लोग समझ गये होंगे। दो नादान बेवकूफों की बेजा हरकतों के सबब आप सबकी शान को बट्टा लगा है, इसका मुझे दुःख है। पर कोई फिक्र नहीं, मैं आपकी

जानकारी के लिए बता दूँ कि शमा और जैदी के नाम कॉलेज से हटा दिए जायेंगे ताकि न रहे बाँस और न बजे बाँसुरी।'

उसने रुक कर इधर-उधर देखा फिर गला साफ करके आगे कहने लगा—'हमारे जोधपुर में विश्वविद्यालय के छात्र उच्छृंखल रहे हैं। हड़ताल अभी भी जारी है पर इस सबका हमारे इधर कोई असर नहीं पड़ने का। तुम लोग जैदी के मामले का गहराई से न लेना और बहकावे में आकर कोई गलत कदम न उठा लेना। मैं भाटिया कुछ भी बर्दाश्त न करूँगा। याद रखो यह प्रोफेशनल कॉलेज है।'

भाटिया फिर अटक गया। आश्चर्य की बात है कि वह धारा प्रवाह बोल नहीं पाता। उसके अन्दाज व विषय की रोचकता ने चुहल बाजी को जन्म दे दिया। अध्यापक नहीं अध्यापिकाएँ भी परस्पर फुसफुसाने लगी थीं। कुछ झेंपी निगाह नीची किए चुप खड़ी थीं।

सभी सरवर जैदी ने पिछले दरवाजे से थियेटर में प्रवेश किया और बिना अनुमति ही सबके सामने आकर खड़ा हो गया। उसके हाथ में स्कूटर की चाबियाँ खेल रही थीं और बाल इधर-उधर बिखर कर उसे परेशान साबित कर रहे थे। पर वह मुस्करा रहा था।

सर जब आपने इस खुले थियेटर में एक गुप्त बात भी खोल दी है तो मैं हरगिज चुप नहीं रह सकता। चुप रहने से अनेक भ्रान्तियाँ जन्म ले सकती हैं। लिहाजा मैं कुछ कहने को उद्यत हूँ।

सब चुप। किसी छात्र प्रश्रावक का यह दुस्साहस कालेज इतिहास में पहला ही रहा होगा। सो सभी अवकचा कर उसे देखने लगे। उस पर टिकी अनेक आँखों में तारीफ के भाव थे। प्रिंसिपल जरूर उखड़ा हुआ था।

सरवर जैदी बोला—'भाइयो और बहनो! मैं एक मुसलमान हूँ। हमारे धार्मिक और सामाजिक कानून कायदे—मेरा मतलब—रस्मो रिवाज कुछ चौंकाने वाले, कुछ बेहद भिन्नता लिए होते हैं और इन बातों से हमारे प्रिंसिपल जी बिलकुल अनजान हैं।

शमा और मुझे लेकर जो हंगामा खड़ा किया गया है वह आश्चर्य-

जनक और पूर्वाग्रह ग्रस्त है। हममे मित्रता है, हमारी डेटिंग मे विश्वास है और अब तो हम दोनो परस्पर सब कुछ हैं। 'हमने मुता' किया है। कहिए किसी को क्या एतराज है ?'

सरवर बावजूद उत्तेजना के हँस पड़ा। उसने प्रिंसिपल की ओर अर्थ पूर्ण दृष्टि डाली तो वह खिसियाने होकर बुदबुदाया—'मुता !'

'जी हाँ' और जैदी वहा से फौरन ही चला गया।

भाटिया का मुँह लटक गया। उसने पास ही खड़े पी टी आई रशीदखान की तरफ देखा। 'खान साहब, यह 'मुता' क्या होता है ?'

'सर, मैं तो कुछ समझा नही।' खान साहब असहाय बगलें झांकने लगे। इस स्थिति को देखकर 'ए' सेक्शन वाला इकबाल शायर आगे आया।

'खान साहब को मजहबी मसलो मे दखल नही ये तो सावधान, विश्राम तक सीमित हैं। या फिर बटेरो का शिकार कर सकते है। दरअसल 'मुता' एक अस्थाई विवाह होता है। जिसके बारे मे अगर ज्यादा जानकारी चाहिए तो शहर से किसी आलिम से सम्पर्क किया जा सकता।'

इकबाल मुस्कराया। 'मैं प्रिंसिपल साहब से दरख्वास्त करूँगा कि वह इस मामले मे उलझें नही। मुसलमानो मे बहत्तर फिरके हैं और उनमे उतनी ही अजीब व्यवस्थाएँ लोगो ने प्रस्थापित कर रखी हैं। रही उचित व अनुचित की बात, सो जो जैसी होगी अपना वैसा ही असर दर्शा देगी'

भाटिया चुप हो गया। सच मे उसे मुस्लिम रस्मो रिवाजों के बारे मे कोई जानकारी न थी। वह चकरा रहा था और 'मुता' के बारे मे सोच सोचकर सभी अध्यापक चकित हो रहे थे।

जब रशीदखान पी टी आई ने विसर्जन कहा तो अनेक अध्यापक इकबाल को घेर कर खड़े हो गए। वे 'मुता' के बारे मे अधिकाधिक जानने को उत्सुक थे। उधर वफा, आबेदा और कुलसूम को भी सहेलियों ने खीचना शुरू कर दिया।

जब सब वापस क्लासो की ओर जा रहे थे, तब जैदी स्कूटर को स्टार्ट कर रहा था। उसने कॉलेज छोड दिया और शिवाजी गेट पहुँचा जहाँ

कुछ फल खरीदे और पलट कर फिर उसी सड़क पर अपना स्कूटर दौड़ाने लगा। वह सोच रहा था। कमाल है छोटी-सी बात का बतगड़ कैसे बन गया? फिर जो किसी के धर्म में दखल नहीं रखते वे उसे भला-बुरा किस आधार पर मान लेते हैं।' जैदी आप ही आप हँसा। वह पन्द्रह मिनट बाद ही शास्त्रीनगर स्थित अपने मकान पर आ गया। दरवाजे पर स्कूटर रोक कर जैदी ने हॉर्न बजाया वह देर तक टी टी करता रहा पर किवाड़ न खुले, शमा बाहर न निकली।

हूँ तो तबियत अब भी नहीं सँभली है' उसने स्कूटर छोड़ा और सीटी बजाता हुआ चबूतरे पर आकर घण्टी बजाने लगा। शमा ने दरवाजा खोल दिया। आ गए।'

ओ यस तबियत कैसी है?'

म काफी ठीक हूँ।' शमा की बड़ी बड़ी आँखें हँस पड़ीं।

खुदा का शुक्र है' चाबियों का गुच्छा उछाल कर जैदी शमा की तरफ लपका।

'नहीं, नहीं। अभी तबियत पूरी तरह सँभलने दो' शमा ने जैदी का मीठा विरोध किया जिसे वह मान गया। फिर कुछ सोचता हुआ फुसफुसाया। 'आज कॉलिज म कहर बरपा हो गया। प्रिंसिपल ने मुझे तलब किया और धमकी दी कि शमा और तुम्हारा नाम कालेज से काट दिया जाएगा।'

'नहीं, नहीं, हाय अल्ला तब मेरा क्या होगा। मैं क्या करूँगी शमा घबरा गई।

'करना क्या है, मौज मस्ती मारना, लो यह फल रखो। बड़ी जल्दी घबरा जाती हो।'

'फिर भी' शमा ने फलों का पैकेट सँभाला।

फिर भी क्या? मने बताया कि हमने अनाचार नहीं किया, बल्कि 'मुता' किया है और शमा जानती हो? 'मुता' के नाम पर वे सब चकित से एक दूसरे का मुँह देखने लगे।'

'इसके बाद क्या हुआ ?'

'मैं उन्हें 'मुता' के नाम पर उलझाकर चला आया। अब शायद प्रिंसिपल किसी आलिम या मौलवी को बुलाकर जानकारी प्राप्त करेगा।'

'मौलवी गड़बड़ न कर दे। शमा ने शंका व्यक्त की।

'नहीं, नहीं। हमने जो कुछ किया है धर्म सम्मत है और हम हर तरह से सुरक्षित हैं। देखना, भाटिया नाम काटना तो दूर उलटे हमसे खेद प्रकट करेगा। खैर तौलिया दो मैं नहा लूँ।'

'अन्दर रखा है' शमा ने उसके कपड़े तह करके अलमारी में रखे। वह बाथरूम में घुसकर नहाने लगा। तो उसने पत्रिका उठा ली। पर मन नहीं लगा।

कॉलेज में उसको लेकर जो बातें हुईं वे साधारण तो न थीं। अब वह किस मुँह से जायेगी वहाँ ? सहेलियाँ क्या-क्या नहीं पूछेंगी। लोग कनखियों से घूरेंगे और प्राध्यापक गण ? उनसे वह क्लास में जिरह कर सकेगी।

शमा का मन कड़ुवा हो गया। क्या यह सब उचित हुआ ? 'मुता' को शायद धार्मिक मान्यता हो पर यह सामाजिक भी है या नहीं ? उसे तब क्या हो गया था। क्यों नहीं पहले ही इतना विचार किया। अब ? वह बीते दिनों के बारे में सोचने लगी।

पन्द्रह अगस्त की पूर्व सन्ध्या। कालेज में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन था। जैदी तथा शमा ने एकाभिनय प्रस्तुत किए और खूब वाहवाही लूटी। इकबाल जैसा गम्भीर प्रकृति वाला शायर भी जब उन्हें बधाई देने लगा तो दोनों कृतार्थ हो गए। इकबाल निस्सन्देह ऊँचा और अच्छा शायर था। बहुत जानदार कविता करता था। अब अगला कार्यक्रम कविता पाठ ही का था। इकबाल तटस्थ रहने वाला संजीदा प्रशिक्षणार्थी था और लड़कियों से सदैव अलग व यथासम्भव दूर रहने का आदी लगता था।

वह बोला—'यार सरवर, तुम और शमा की जोड़ी ने कमाल कर

दिया अभिनय में । मैं बेहद खुश हूँ और अब तो तुम दोनों पर शायद कविता लिखनी पड़ेगी ।'

शमा ने शर्मा कर सरवर की ओर कनखियोंसे देखा और फिर इकबाल का आभार प्रकट करती हुई बोली—

मुझे भी कविता का शौक है, कभी कभी लिख लेती हूँ ।'

'अच्छा ! तब तो हमें भी सहयोग दोगी न ! विचारों का आदान-प्रदान होता रहे तो सृजन बखूबी आगे बढ़ता रहता है ।'

'जहे नसीब, इकबाल साहब ! जर्रे को आफताब न बनाएँ ।' सहयोग और इस्लाह तो मुझे मिलेगा ।' शमा खिलखिला पड़ी । 'खैर बाद में मिलना अभी तो अगला कार्यक्रम देखें ।' और वे सभी कलाकार आगे की तैयारी में सलग्न हो गए ।

अब इकबाल था मच पर । उस ने रोशनी में डूबे खचाखच भरे पंडाल को एक नजर देखा । फिर माइक पर गुनगुनाकर शमा व जैंदी को इङ्गित करते हुए वह कविता पढ़ी कि श्रोता चकित रह गए । प्रिंसिपल भाटिया स्वय खुशी से चिल्ला उठा । लोगों ने देर तक उसे तालियाँ पीटते देखा था ।

असल बात तो यह है कि इकबाल माइक पर खड़ा ही जँच रहा था । उसका लखनवी अन्दाज मधुर स्वर और दिल की गूँजती हुई आवाज ने समा बाँध दिया ।

शमा ठगी सी मेकअप रूम में से झाँक रही थी । जैंदी दीवाना बन गया था और हथेली पर ताल देता हुआ मुग्ध खड़ा था—कि कविता खत्म हो गई । तालियों की गड़गड़ाहट ने उन दोनों का मोह भग किया तो वे बेसाख्ता वाह-वाह कर उठे । जैंदी ने अन्दर प्रवेश कर रहे इकबाल को बाहों में भर लिया । शमा भी कुछ करना चाहती थी, पर रुक गई । हाँ दिल का भाव दृष्टि डोर से उसने फेंक दिया जिसे इकबाल ने देखा या नहीं वह जाने ।

जैंदी चहका—'भाई बहुत बढ़िया कविता करते हो । तुम्हारे फन के

आगे हमारी क्या बिसात ! हम तो कुछ नहीं । न तुम्हें मेकअप की जरूरत, न रिहर्सल की और न हमारी तरह नाटक बाजी की । तुम सच्चे कलाकार हो ।'

इकबाल प्रत्युत्तर मे मुस्कराया—'अपना अपना क्षेत्र है । फिर भी हम एक दूसरे की कला की तारीफ करते हैं यह सन्तोष की बात है । वरना देखा यह गया है कि ऐसे मे लोग ईर्ष्यालु हो जाया करते हैं ।'

'खुदा करे हमारे बीच मधुर सम्बन्ध प्रगाढ़ हो । कला से कला निखरती रहे और बी एड का यह सत्र हमसे रौनक पाए ।' शमा ने मधुर स्वर लहराया तो इकबाल उधर पलटा ।

'तुम भी पढ दो एक आध कविता ।'

ना बाबा तुम्हारे मुकाबले मिट्टी पलीद करानी है । वह देखो नृत्य शुरू हो चुका पर श्रोता अभी तक तुम्हारे लिए वंस मोर का शोर मचा रहे हैं ।'

'यह सब तो खर होता रहता है । तुम लोग कपडे नही बदलोगी ? कब्वाली की तैयारी करलो । मै अभी आया ।'

पन्द्रह अगस्त मे जलसे मे कितनी ही आँखें इकबाल को देख रही थी । जिस किसी ने रात का कार्यक्रम देखा था, वे सभी उसकी कविता की प्रशंसा कर रहे थे । शमा को तो इकबाल अलौकिक दिखने लगा । वह भावुक थी और भावुक दिलो के लिए ही काव्य कीमती होता है ।

झण्डा रोहण से लेकर अन्तिम कार्यक्रम तक कवि की चर्चा एकत्रित जन समुदाय करता रहा जिसे सुनकर बी एड कॉलेज के अध्यापक और प्राध्यापक सभी हर्षित होते रहे ।

16 अगस्त की शाम, शमा सरदारपुरा गई । इकबाल की बीबी उमदा ने दरवाजा खोलकर आगन्तुक को अपरिचित पाया तो वह समझ गई । 'जी, मैं शमा हूँ—बी एड कॉलेज मे इकबाल साहब के साथ पढती हूँ । क्या वह अन्दर हैं ?

'हैं, तशरीफ लाइये। मुझे उमदा कहते हैं, मैं उनको' उमदा हँस पड़ी तो शमा भी हँसने लगी। 'अच्छा, अच्छा भाभी जान को हमारा सलाम।' उसने हाथ उठाया।

'जीती रहो शमा जी।' और फिर दोनों खिल खिलाकर हँस दीं। 'इकबाल साहब कहाँ हैं, दिखे नहीं?'

'वह छत पर बैठे बादलों को घूर रहे होंगे—कविता रानी के वास्ते। लो कुर्सी पर बैठो।'

'तब नहीं भाभीजी! मैं भी छत पर जाऊँगी। कविता करते, उनका मूड देखने की बड़ी तमन्ना है। आखिर मैं भी तो कविता करती हूँ।'

'अच्छा! तब तो फौरन जाइएगा। चाय लेकर मैं भी वहीं आ रही हूँ।' उमदा उसी लहजे में बोली और शमा को धकेला।

आहिस्ता, दबे पाँव आकर शमा ने इकबाल को 'हो ऽऽ' करके चौंकाया। इकबाल क्षितिज पर उभर रहे काले भूरे बादलों की परतों में खोया था कि उछला। 'अरे तुम! शमा, आज रास्ता तो नहीं भूल गई।' कापी छोड़कर उसने पेन बन्द कर दिया था।

रास्ता तो सच में भूल गई थी लेकिन पूछते पूछते देखो आखिर आ ही गई। क्या कविता कर रहे थे? मैंने तब तो रंग में भंग डाल दिया, गुस्ताखी माफ!' और हँसी का ठहाका।

'खैर कहो कैसे आना हुआ?' इकबाल ने बादलों की तरफ देखकर सिगरेट सुलगाई।

'वैसे ही आ गई मैं। सोचा देखूँ विशेष लोग कविता बनाते समय कैसा मूड अख्तियार करते हैं। फिर मैं अपनी कविता भी दिखाकर संशोधन चाहती हूँ। यह लायी हूँ मैं।'

शमा ने अपनी नोटबुक इकबाल के आगे करदी और उसकी कापी खुद ने खींचली। कुछ देर के लिए तब वहाँ शांति रही और वे एक दूसरे को पढ़ने लगे। शमा ने इकबाल की कविता की एक एक पंक्ति पढ़ने के मध्य

बादलों को जरूर घूरा। वह कल्पना की वास्तविकता से तुलना करके आश्चय चकित थी। 'प्लीज, इकबाल साहब! इसे पढ़कर यानी जरा तरन्नुम से सुना दीजिए न।'

इकबाल ने अतिशय गम्भीरता से मौसम को निहारा और गुनगुनाने लगा तो नीचे आँगन से आवाज आई। 'थोड़ा ठहरो, मैं भी सुनूँगी बस चाय प्यालों में भरलूँ।

उमदा की आवाज सुनकर इकबाल मुस्कराया। शमा उसे ठहरा देखकर बोली— कमाल है, हर पल साथ रहकर भी उमदा भाभी इतनी लालायित!'

'शमा, इसमें आश्चय की क्या बात है! यही तो है मुझे भाव, शब्द और सौन्दय बोध देने वाली प्रेरणा। मेरी पहली श्रोता उमदा ही होती है। आज तुम सुन लेती, पर यह हुआ नहीं।'

'क्या आप अपनी बीवी से प्रेरणा पाते हैं?'

'और नहीं तो' प्राकृतिक सुषमा सम्पदा और प्रतिक्रियाओं के बाद मेरी दूसरी सृष्टा पत्नी ही है।'

'लोग तो कहते हैं, रचना धर्मिता के लिए एक दूसरे सहारे की भी आवश्यकता रहती है।

शमा के दृष्टिकोण पर इकबाल को हँसी आ गई— क्या तुमने जैनेन्द्र कुमार का वह वक्तव्य पढ़ लिया था कि—पत्नी के अतिरिक्त एक प्रेयसी की भी आवश्यकता होती है!'

'हाँ ऽ नहीं।' शमा झेंप गई। लो आ गई भाभी जान! और सचमुच उमदा चाय लेकर आ गई तो शमा का बचाव हो गया वरना बात की बात में न जाने कौनसी बेहूदा बात निकल आती। इकबाल क्या सोचता खैर बला टल गई शायद।

शमा, इकबाल और उमदा की गृहस्थी देखकर खुश और खूब प्रभावित हुई पर जिस इरादे से आई थी वह पूरा न हो सका। इधर-उधर की बातों और फिर आने की बात करके ही उसे लौटना पड़ा।

इकबाल का पिछले वर्ष विवाह हुआ था। पत्नी उमदा मात्र मैट्रिक पास किन्तु काफी समझदार थी। माँ बाप देहात मे खेती का काम करते थे। उन्होने होस्टल मे रहने के लिए बेटे को मनाकर बहू को जोधपुर साथ भेज दिया और इस प्रकार सरदारपुरा मे किराये का मकान लेकर वह बी एड का कोर्स कर रहा था। छोटे से इस मकान मे इकबाल और उमदा सन्तुष्ट और खुश थे।

आज कॉलेज मे फाथ पीरियड वैकेंट था। अध्यापक अध्यापिकाएँ रेफरस रूम, रीडिंग रूम, लायब्रेरी और कैंटीन मे इधर उधर छितरे थे। इकबाल लायब्रेरी के पिछले केबिन मे बैठा शिक्षा सिद्धान्त की किताब देख रहा था कि एक पुर्जा नीचे गिरा उठाकर इकबाल उसे पढ गया। थोडी देर के लिए उसने कुछ सोचा और फिर मुस्कराने लगा। 'तो यह बात है ?'

कुछ देर बाद एक निश्चय के साथ उसे उठना पडा। शमा कैंटीन म खडी उसी को देख रही थी। गैलेरी मे चलते वक्त इकबाल ने सकेत से उसे बुलाया तो वह हिरणी की तरह कलाचे भरती हुई लपकी आई।

वे दोनो ठेठ ऊपर वाली छत पर पहुँचे। सैकडो सीढियाँ धीरे धीरे चढे पर बोला कोई नही। कालेज की छत पर हमेशा की तरह तीन चार अध-टूटी कुर्सियाँ पडी थी। इकबाल ने उनमे से दो अलग खीचली। 'बैठो।' कुछ देर फिर कोई न बोला।

'लो, लाइटर। सिगरेट सुलगाओ।' इधर इकबाल ने डिब्बी से एक सिगरेट निकालकर मुँह से लगा ली। 'हूँ जलाओ'।

शमा ने काँपते हाथो, लाइटर जलाकर इकबाल की सिगरेट सुलगा दी तो वह मुस्कराकर कस खीचने लगा था।

'शमा, मेरी किताब म यह कागज का पुरजा किसने डाला क्या तुमने?'

शमा की धडकने धडधडाई। मुँह मारे सकोच के लाल चिरमी हो गया। क्या बोलती वह ! बस सिर झुक गया था उसका।

इकबाल ने उस नत हुए मस्तक को देखा। कितने ही विचार आए और गए मन मे। ऐसे क्षण बहुधा निर्णय की द्विविधा में फँसा दिया करते हैं।

और अनेको दिल के हाथो हार कर अपना भविष्य चौपट भी कर लेते हैं। किन्तु इकबाल तो फैसला सोच कर ही आया था। सिगरेट का गुल झाड़ता हुआ बोला—'पगली मैं शादी शुदा, सुखी और पूर्ण सतुष्ट शिक्षक हूँ। मेरा डेटिंग मे यकीन नही—समझी।'

और उसी के सामने उसकी परची के पुर्जे पुर्जे हवा मे उछाल कर इकबाल नीचे आ गया क्योकि पीरियड लग चुका था।

यह एक सामान्य घटना थी। पर शमा देर तक छत पर गुमशुम बैठी रही। उसे इकबाल का यह व्यवहार बडा अखरा। उसका भी तो एक स्तर था। वह प्रतिभा सम्पन्न सभ्य, सुन्दर युवती थी। 'इकबाल ने कद्र न कर ठोकर मारी ?'

'हाँ, और ऐसे ही निरर्थक अन्तर्द्वन्द्व ने शमा को एक दूसरे रास्ते पर छोड दिया।

उस घटना के बाद वह सरवर जैदी की ओर तीव्रता से झुकती ही गई। जैदी के साथ उसका सम्पर्क बदले, जलाने या इकबाल को चिढाने जैसे भावो के कारण ही रहा होगा। किन्तु बाद मे वह उस पर मेहरबान हो गई। सरवर का ठाट, लटका और स्मार्ट होना उसे पसन्द आ गया। घनिष्ठता बढी, बढती ही गई। वह डेटिंग मे लुत्फ लेने लगी क्योकि जैदी उस पर पर्याप्त खर्च कर सकने की स्थिति मे था।

जैदी और शमा कॉलेज साथ आते, साथ ही लौटते। इत्तेफाक से दोनो का 'एस' पर नाम होने के कारण एक ही सेक्शन मे प्रवेश था। सरवर अपने होस्टल से पहले उसे स्कूटर से उतार देता और वह वीमेन होस्टल की ओर बढ जाती। वे क्लास के अलावा लायब्रेरी मे भी साथ ही दिखते थे।

बोम्बे मोटर्स के सामने, संस्थान के तीन होस्टल स्थित हैं। पहला शिक्षक होस्टल, उसके आगे माध्यमिक कक्षाओ वाले छात्रों का होस्टल और अन्त मे अध्यापिकाओ का वीमेन-होस्टल, जिसके मुँह आगे प्रिंसिपल का बगला है।

शिक्षक होस्टल मे 70 80 प्रशिक्षणार्थी थे और वीमेन-होस्टल में सिफ पच्चीस मास्टरनियाँ। जैदी होस्टल की वेस्ट विंग कमरा न० 21 में अपने दो अन्य साथियो सहित रहता था। उधर शमा अपने होस्टल में पाच न० रूम मे वफा और किश्वर के साथ थी।

ईद के दिन इकबाल ने दोनो होस्टलो के मुस्लिम प्रशिक्षणार्थियो को आमन्त्रित किया। नाश्तेके बाद वहाँ एक कव्वाली का प्रोग्राम भी रखा गया। किन्तु शमा और जैदी ने इसमे शिरकत नही की। वफा ने बताया—'शायद वे दोनो पिकनिक पर गए थे। मगर परवेज ने एक दूसरी बात बताई—उसके अनुसार जैदी और शमा 'टीचिंग कम्पीटिशन' की तैयारी मे जुटे थे। परवेज ज-ी की ही कास्ट का सजीदा अध्यापक था।

शिक्षक महाविद्यालय, पाच सितम्बर अध्यापक दिवस पर प्रति वष ऐसी प्रतियोगिता का आयोजन करता था। प्रथम और द्वितीय प्रतियोगियो को एक-एक सौ नक्द पारितोषिक और मानपत्र तथा एक बेज दिया जाता और इस सत्र का प्रथम पारितोषिक जीता शमा ने। इकबाल रह गया उसे तो दूसरा स्थान भी नही मिला। क्लास के शरारती छोकरो ने एक भी प्रश्न का जवाब नही दिया। हाँ, दूसरा स्थान अध्यक्ष रघुवीर को मिला। इकबाल ने शमा का मुबारकबाद दी पर वह कुछ न बोली—जैदी के साथ कैंटीन मे बैठी कॉफी पीती रही और आदतन टाँगें हिलाती रही। जैदी स्कूटर की चाबियो का गुच्छा नचा रहा था।

इसके बाद टीचस कॉलेज की पहली पिकनिक मडोर मे हुई। वहाँ के शानदार कायक्रम शमा और जदी को और करीब ले आए। किसी ने भजन गाया, किसी ने नृत्य किया, किसी ने एकाभिनय, तो किसी ने कविता पढ़ी। इकबाल की कविता पर जब साथी मुग्ध होकर तालियाँ पीट रहे थे। शमा जैदी के साथ पीछे बैठी गप्पें मार रही थी। उसने तालो पीटना तो दूर इकबाल की तरफ देखा तक नही। पाच सितम्बर की जीत ने उसके नखरे और बढा दिए। वह बेहद खुश थी पर इकबाल निराश नही लग रहा था अत कभी-कभी अपनी असफलता पर उसे खीज भी होती।

दिन भर रंगारंग कार्यक्रम के बाद शानदार पार्टी हुई विविध व्यजनो मे दही-बडे सर्वाधिक सराहे गए और भाई लोगो ने खूब छककर खाना खाया ।

अन्त मे बतन, भांडे, बिछायत और बचा हुआ सामान समेटा जाने लगा प्रभारी महोदय ने प्रशिक्षणार्थियो के चार पांच दल बना दिए । अब एक एक दल शहर को लोटने वाला था । बस छोटी थी अत उसे कई चक्कर लगाने थे ।

शमा ने किसी का इन्तजार नही किया । वह जैदी के स्कूटर पर पीछे लद गई । जैदी सोजती गेट आकर पान खाने के लिए ठहरा ।

'शमी ! अभी होस्टल जाकर क्या करोगी ? साथ वाली तो शायद ग्यारह बजे तक पहुँचेगी । वहा अकेली बैठने से तो पार्क मे बैठना बेहतर रहेगा । आओ पब्लिक पार्क चलें ।

जैदी ने स्कूटर पुन स्टार्ट कर लिया ।

'लेकिन वार्डन को पता लग गया तो ?

'कौन मिस लूथरा ! अरी छोडो उस दकियानूस को । तुम बच्ची हो ? जो उसके इशारो पर नाचोगी ! बैठो पीछे, पार्क चलते हैं ।'

स्कूटर टर्न लेकर दोडने लगा तो शमा होले से बोली—'इतना तेज क्यो चलते हो, कही मुझे दिखाने के लिए तो नही ।'

'लो, तुम्हें क्या दिखाना है । तुम कोई खरीददार तो नही ? यह तो मेरी आदत है शमी । मुझे फर्राटे की जिन्दगी पसन्द है ।'

'कभी हाथ-पांव तुडा बैठोगे ।'

'यस मिस ! तुम्हारी शका निर्मूल नही । खैर ध्यान रखूँगा आगे ।' और उसने झट ब्रेक लगा दिया । शमा जैदी से टकराई । 'यो क्या करते हो ।'

'कुछ भी तो नहीं। ऊपरी मंजिल आ गई।' उतर कर वे दोनों लॉन के एक कोने में बैठ गए। जैदी हँस रहा था।

पर अधिक खा जाने के कारण जैदी सीधा बैठने में कुछ दिक्कत महसूस कर रहा था। अत हरी हरी दूब पर वह पसर गया और स्कूटर की ताली उंगली में घुमाते हुए आसमान में उभर आए सितारों को निहारने लगा। हालांकि बिजली की रोशनी के कारण वे स्पष्ट न थे फिर भी जैदी को अच्छे लग रहे थे।

'पिकनिक में इतना खिला दिया कि पेट भारी हो गया है शमी।' वह हँसा।

'भाई खतरा नहीं तो दबा देती हूँ।' शमा ने सरवर के पेट को सहलाया तो जैदी ने हाथ थाम लिया।

'शमी, बड़े नाजुक हाथ हैं तुम्हारे। जी चाहता है इन हाथों से बना पुलाव खाऊँ और गामा बन जाऊँ। कभी खिलाओगी?

'जी तो मेरा भी करता है लेकिन यहाँ यह सब संभव नहीं। कभी हमारे उधर आना।' शमा भी जरा झुकी।

'शमी! हमें होस्टल में एकदम रद्दी खाना मिलता है। दोनों रसोइये शराबी हैं और एक बहू औरत! सच, बड़ी गंदी रहती है। बर्तन भांडे बाबा आदम के जमाने के। गिलास और थालियों को डाइनिंग हाल में देखलो तो उबकाई आए। मोच पड़ी हुई, कलई उड़ी हुई।' जैदी ने नि श्वास छोड़ा और आगे कहा—

'लेकिन मैं तो अक्सर लक्ष्मी लॉज में चला जाता हूँ। या मोहन से दही-अचार मँगवाकर काम चलाता हूँ, खैर।'

'इत्ती दुव्यवस्था! तोबा!! कभी मौका पाकर वीमेन होस्टल आ जाया करो। शमा ने दया दर्शायी।

'तुम्हारी सहेलियाँ मार न डालेंगी! फिर प्रिंसीपल भी वहीं तो रहता है। भई तुम्हारा चौकीदार भी खूँखार है।

'डरते हो ?' शमा ने दुपट्टा सँवारा और हँसी ।

'डर की बात नहीं । हमें यहाँ ढंग से रहना पड़ता है । यह खालिस कॉलिज नहीं, टीचर्स कॉलेज है । और हम लौंडे नहीं, मोहतरमा—टीचर हैं, टीचर ।'

'तब तो हमारे घर ही आना कभी । वहीं खिला सकूँगी इन हाथों से बना । लो छोड़ो ।' शमा ने अपना हाथ छुड़ाया ।

'मैं वहाँ इंशाअल्ला जरूर आऊँगा । हाँ, वहाँ कौन-कौन हैं—तुम्हारे, शमी !'

'बहुत छोटा सा सीमित परिवार है हमारा—पापा, एक खाला । माँ नहीं है और अकेली औलाद—नाजों पली एक मैं । मेरे पापा की पोस्टिंग पहले जोधपुर ही थी । पर मेरा एडमीशन क्या हुआ, उनका भी तबादला हो गया । वह अभी आगरा हैं मैं तुम्हें उनसे मिलाती तो मजा आ जाता, जैदी ।'

'तुम्हारे पापा एयरफोर्स में अधिकारी हैं न ?'

'हाँ, हाँ । तुम्हें शायद एक बार मैंने बताया था ।'

'क्या नाम है उनका ?' जैदी सोचता हुआ बोला था ।

'जुबेर !' शमा ने दूब के कुछ तिनके मुट्ठी में भर लिए ।

'हाँ जुबेर साहब ! एक बार उनका खत भी पढ़ाया था तुमने और वह तुम्हारा ?' जैदी ने शरारत की ।

'वह नदीम' वह मेरा मगेतर है। इस खाला का इकलौता बेटा । अभी विदेश में पढ़ रहा है ।' शमा खिलखिलाई ।

और फिर अनेक घरेलू बातों के बाद बिजली के कुमकुमों की रोशनी में जैदी ने जिद करके शमा का जूड़ा खोल दिया । 'तुम्हारे बाल खुलकर जब शानों पर छितरा जाते हैं तो बेहद प्यारे लगते हैं प्लीज इन्हें खुला ही रखा करो, शमी !'

सरवर ने सब्र त्याग कर आजानु केश राशि में अपना मुँह छिपा लिया । वह देर तक जब उन बालों को चूमता रहा तो शमा ने चेताया—

'सार्वजनिक स्थलों पर यों अपने ढंग से जीने का हमें क्या हक है जैदी ? उठो चलें।–अब तक तो होस्टल में सभी आ गई होंगी।' शमा कपड़े झाड़कर उठ खड़ी हुई तो वह भी उठ गया।

स्कूटर फिर फर्राटे से भागने लगा। रंगीन साइन बोर्ड, विविध रंगों वाली रोशनी म चमकते हुए पीछे छूट रहे थे और जैदी का स्कूटर यों भीड़ चीर रहा था मानो पानी पर एक बतख तैर रही हो।

तभी खटका हुआ और बाथरूम खुला तो शमा चौंकी। जैदी तौलिया लपेटे सामने खड़ा था। विचारों की कड़ी टूटी और शमा वर्तमान में लौट आई। 'नाश्ता बनाऊँ कि चाय लोगे ?' वह जैसे गहरी नींद से जागी। कुछेक मिनटों मे ही पिछली कितनी बातें सोच गई वह।

कॉफी मिल सकती है ?' जैदी ने गीले बालों को झाड़ा और ड्रेसिंग टेबुल के करीब आ खड़ा हुआ।

'दूध कम है। देख लेती हूँ। वरना फिर चाय ही बनेगी। बनाऊँ ?'

'बनाओ जो बन जाए।' जैदी मुस्कराया तो शमा ने झेंपकर ब्लाउज ठीक कर लिया। 'जैदी मेरा आज दूसरा क्रिटिसिज़म था। वह भी गया।' शमा ने ध्यान दूसरी ओर मोड़ा।

'कमाल है। यह लेसन की बात बीच में ही कहाँ से आ गई ? तुम फिक्र न करो। स्वास्थ्य पहले है और बी० एड० बाद म।'

शमा ने सरवर की ओर सूनी आँखो से देखा और फिर किचन मे चली गई। जैदी ने कंघी की और पत्रिका लेकर मोढे पर बैठ गया। वह कोर्स की किताबें कम पत्रिकाएँ ज्यादा पढता था और पत्रिकाएँ भी सतही मॉड किस्म की पश्चिमी।

जब चाय आ गई तो पत्रिका छोड़कर जैदी ने प्याला थाम लिया। 'तुम नहीं लोगी चाय ?'

'इच्छा ही नहीं।' शमा सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।

'खैर ठहरो, तुम्हारी खिदमत मैं करूँगा। खाना बनाया ?'

'नही बाहर ही खा लेना। मुझे तो भूख नहीं।'

'और दवा ?' जैदी ने लम्बा घूँट भरकर शमा की ओर देखा।

"ले ली है। खटाई भी खालो।' वह खिलखिलाई।

पर जैदी कुछ न बोला। उसने पत्रिका फिर उठायी और अधूरी छूटी कोई कहानी पढने मे सलग्न हो गया। शमा चुप बैठी उसे देखती रही। 'ये फल कहाँ से खरीदे ?'

'सिवाची गेट से। अरे हाँ तुम्हारी खिदमत। लो मैं फल तो खिलाना भूल ही गया।'

जैदी ने अलमारी से फल निकाले और छील छीलकर शमा को फाँके खिलाने लगा। वह चुपचाप खाए जा रही थी। बोल कोई नही रहा था। शायद दोनो फिर अपने बीते दिन याद करने लगे थे। शमा ने अभी अभी अधूरी छूटी विचार श्रृङ्खला का सिरा पुन पकड लिया। कायलाना, मडोर, चोपासनी और पहाडी क्षेत्र की तन्हाइयो मे डेटिंग के नाम पर हुई मुलाकातें उसकी आँखो मे तैर गई और फिर याद आया होस्टल पर हुआ हमला।

जोधपुर विश्वविद्यालय के छात्र बी० एड० प्रशिक्षणार्थियो से एकाएक रुष्ट हो गए थे क्योकि बी० एड० वालो ने उनके समर्थन मे हडताल नही की थी। जबकि तोड फोड करते हुए वे कुलपति सिंह को हटाने के लिए जुलूस पर जुलूस निकाल रहे थे।

नाग की नाई छिडे विश्वविद्यालयी छात्रों ने तब मध्य होस्टल, हायर सैकण्डरी वालो को बहकाया। किशोर वय छात्र चक्कर मे आ गए और उन्होने शिक्षक होस्टल मे घुसपैठ शुरू करदी। वे बेहद बचकाना हरकतें करते थे। कभी बाथरूम तो कभी सडास खराब करते। कभी किचन तो कभी पानी की टकी। आए दिन टोटी, बल्ब, साबुन, तौलिया और बाहर सूखते कपडो की चोरी होने लगी।

अध्यापकों ने शिकायत की। वार्डेन बोला—'प्रिंसीपल से बोलो और प्रिंसीपल बोला—'धैर्य रखो' और हद तो तब हुई जब छात्र नेताओं की शह पर ये वीमेन हॉस्टल में भी छेड़छाड़ करने लगे।

एक दिन महेश स्टोर पर कुछ अध्यापिकाएँ स्क्रैप बुक के लिए राष्ट्रीय पुरुषों की तस्वीरें खरीद रही थीं कि जीप लेकर विश्वविद्यालय के छात्र नेता अचानक आ गए। वहाँ भी हड़ताल की बात चली और इसी विवाद को लेकर कहा सुनी हो गई। जब अध्यापिकाओं ने खरी खरी सुनाई तो वे धमकी देकर नौ दो ग्यारह हो गए। पर इस घटना ने इन्हें भी पूरा भयभीत कर दिया था।

यह जाट राजपूत छात्रों के मध्य अकारण उठा विवाद जोधपुर विश्वविद्यालय का सर्वनाश किए जा रहा था। जो जाट चाहते उसका राजपूत विरोध करते और जो राजपूतों को पसन्द होता उसे जाट ठुकरा देते। भले बुरे या हित अहित का नहीं। वहाँ तो जातिगत विरोध था—निराधार।

अगले कदम में उन्होंने शहर बन्द का आह्वान किया। तमाम शिक्षण संस्थाएँ बन्द रही पर शिक्षक महाविद्यालय खुला तो विश्वविद्यालय वाले छात्र नेता बौखला उठे। उन्होंने पाया कि असहयोग में अग्रणी हॉस्टल वाले हैं। अतः कॉलेज को छोड़कर उनका जुलूस बोम्बे मोटर्स की तरफ बढ़ गया। और तब कुछ देर बाद ही लोगों ने दोनों होस्टलों से धुएँ के गुबार उठते देखे।

कॉलेज का समय था अतः होस्टल तो खाली थे किन्तु वीमेन होस्टल में विभा नामक एक अध्यापिका बीमार थी। वह बच गयी लेकिन पाँव काफी झुलस गए थे उसके।

यह घटना अप्रत्याशित थी। पूरे संस्थान में हड़कम्प मच गया। अतः शाम को जनरल मीटिंग हुई। वार्डेन काफी चिन्तित था और आदित्य खामोश निगाहों से होस्टल के जले अध जले किवाड़ों और सामान को देखता हुआ बुत बना खड़ा था।

आखिर तनाव की स्थिति को मद्देनजर रखते हुए यही तय हुआ कि तीनों होस्टल अनिश्चित काल तक के लिए बन्द कर दिए जायें। अध्यापक अध्यापिकाएं सुविधानुसार शहर में कहीं भी रहने की अपनी व्यवस्था करलें। सबने देखा उस दिन मिस लूथरा के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थी और उसकी अध्यापिकाएं बेहद थकी थकी और परेशान थीं।

इस होस्टल में हालांकि समय पर पुलिस के आ जाने के कारण कोई विशेष नुकसान नहीं हुआ फिर भी घटना शर्मनाक, अनैतिक व आधार हीन होने की सबब सबको असुरक्षा का बोध करा गई। अब अध्यापिकाएं तो किसी कीमत पर इस होस्टल में रहने को तैयार न थी। प्रिंसीपल और वार्डेन के आश्वासनों की कलई खुल ही गई। अत रात आंखो मे काटकर अगली सुबह ही उन्होंने अपने सामान बाँध लिए और बाहर बरामदे में व अहाते मे ऐसा डेरा डाला मानो प्रकृति-पीड़ित कोई शरणार्थी कैम्प हो।

ये अध्यापिकाएं कुल पच्चीस थी। कॉलेज की लोकल अध्यापिकाओं ने तत्काल इनकी मदद की और फिलहाल तो इधर-उधर शहर मे रहवास-व्यवस्था हो गई। मुस्लिम अध्यापिकाएं आबेदा के साथ बवा मोहल्ले मे खाली पड़े उसके मकान में जा टिकी। शमा को लेकर खूब खींच तान हुई। उसे सभी अपने साथ रखने को आतुर थी मगर मगरूर शमा ने सबको इन्कार कर दिया। उसका स्टैंडर्ड कदाचित हाई था। वह अभी भी बरामदे में बैठी पहाड़ी पर उड़ती चीलों के झुण्ड को अन्यमनस्क सी देख रही थी। कि तभी जैदी का स्कूटर आ गया। इशारा पाकर वह उधर लपक गई। जैदी मुस्कराया। फिर आगे बढ़कर पूछा—

'कहीं व्यवस्था हुई ?'

'अभी तो नहीं। आबेदा ने कहा पर बवा मोहल्ला पसन्द नहीं है मुझे, उधर वह स्टेडियम सिनेमा हाल भी बेकार है। खैर तुमने क्या किया ?

'मैं अभी अभी शास्त्री नगर म एक अच्छा सा मकान देखकर आया हूँ।' जैदी रुका और शमा का चेहरा देखकर मुस्कराया।

'अगर बुरा न मानो तो मेरे साथ चलो। साथ रह लेंगे। पढाइ भी साथ साथ करेंगे और खाना वगैरह का भी साथ रहने पर झंझट नहीं रहेगा। शमी! शायद खुदा ने यह अवसर जान बूझकर हमे उपलब्ध कराया है।'

'लेकिन लोग बाग बातें बनायेंगे न?'

'वह तो अब भी बना रहे हैं। हमारा साथ कॉलेज वालो को फूटी आँख नही सुहाता। भई देखो, जब हम कालेज मे, बाहर सब जगह इकट्ठा रहते हैं तो घर पर क्यो नही रह सकते! अन्यत्र तुम रहोगी भी तो हिफाजत कैसी? विश्वविद्यालय वालो ने तो सिर म धूल जो डाल ली है। आज निभा जली कल क्या तुम नही जल सकती?

शमा निरुत्तर बैठी अटैची को देख रही थी।

'माना इधर यह सब शोभनीय नही। मिस लूथरा क्या, सारा स्टाफ मुँह बिचकायेगा। लेकिन उन्हें मारो गोली। हम हमारा हित अधिक सोच सकते हैं। न तुम बच्ची हो न मैं भोला। फिर ये दकियानूसी खयालात हमे क्यो डरा रहे हैं?'

यहाँ हम लिहाज ही किसका मानें! राजस्थान म हमारा कोई नही। तुम कानपुर की तो मैं लखनवी। दोनो के वालिद कभी यहाँ सर्विस मे रहे हो, आज इत्तेफाकन वे भी जोधपुर मे नही। हिचक और अनिर्णय की स्थिति से निकलो शमी! मैं टैक्सी ला रहा हूँ, तैयार हो जाओ। और शमा को सोचने बोलने का मौका दिए बिना ही जैदी का स्कूटर मुड़कर ओझल हो गया।

और इस घटना ने शमा व जैदी को नजदीक क्या, एक ही छत के नीचे साथ साथ रहने का अवसर प्रदान कर दिया। जैदी की तमन्ना पूरी हुई। शमा ने अपने हाथो बनाया खाना उसे खिलाया और वे परस्पर अत्यन्त निकट आ गए।

शमी! जैदी अचानक बोला।

'हूँ' वह चौंककर सामने देखने लगी थी।

'क्या बात है ? कहा खोई हो तुम !' हँस पडा वह ।

'यो ही पिछले दिन याद करने लगी थी मैं । मुझे वह हडताल, यूनिवर्सिटी के छात्रो द्वारा होस्टल को जलाने वाली घटना याद आ गई ' मुस्कराई शमा ।

'वह घटना नही । अल्ला का मौजिजा (चमत्कार) था । वरना क्या—'दो जिस्म मगर एक जान हैं हम' होते ?' जैदी ने जोरदार ठहाका लगाया ।

'नही होते । दरअसल 'मुता' की नीव इसी घटना पर रखी जा सकी—क्यों ? यह है न तुम्हारे कहने का तात्पर्य !'

'बिलकुल, अच्छा छोडो । चलो तैयार हो जाओ । पिक्चर चलेंगे । तुम्हारा जी बहल जायेगा । 'स्वर्ग नरक' लगी है मिनर्वा मे ।'

'ठीक है पर मेरा जी ठीक नहीं । आराम करूँगी मैं । कही पिक्चर हाल म चक्कर वक्कर आ जाए तो !'

'पगली, हर वक्त ऐसा थोडे ही होता है । वहम छोडो—उठो ।'

'नहीं, नही । अकेले ही हो आओ । न जाने क्या हुआ गन्ध ही गन्ध आती है मुझे ।' शमा ने मुँह बिसूरा उसके होठ थोहरे हो रहे थे ।

'फिर जाने दो । मैं चला जाता हूँ । खाना भी तो बाहर खाना है ।'

'हाँ खा लेना । प्लीज बुरा महसूस न करना । इस मे जब गध ही गध आती हो घर पर खाना बनाना मुश्किल ही है ।'

स्कूटर मे तेल कम था । डिब्बा कहाँ है और डाल लूँ ।'

'वही पिछवाडे म रखा है ले लो ।'

शमा ने फलों के छिलके प्लेट मे बटोर और उन्ह फकने के लिए धीरे धीरे बाहर आई । बिजली की रोशनी मे शहर का विस्तार झिलमिला रहा था । सामने दूर एरोड्राम की लाल बत्तियाँ हवा मे तैरती और छीतर पैलेस की रोशनी बुलाती सी लग रही थी ।

आसमान साफ तो नहीं था फिर भी बादलो म दादागिरी के भाव

या उठा पटक कहीं नहीं दिखी। बरामदे में खड़ी शमा ने हल्की-सी जम्हाई ली और भीतर पलट आई।

सरवर जैदी के चले जाने के बाद शमा पत्रिका लेकर बैठी। साइकोलोजी के चेप्टर देखने की उसकी इच्छा काफूर हो गई थी। इन दिनों पढ़ाई में उसका मन था ही नहीं। जब भी वक्त मिलता वह अपने बारे में पेट में पल रहे जीव के बारे में या फिर 'मुता व्यवस्था' के बारे में सोचती रहती। उसे भी अब यह धर्म सम्मत वैध कार्य, अनैतिक और असामाजिक लगने लगा था। कल जब अवधि समाप्त हो जायेगी उसके बाद ? जैदी ने इसे विवाह में तब्दील न किया तो ! वैसे इसने इकबाल को तो यही कह रखा है कि मैं शमा को यदि कोई उलझन सामने आई तो सदा के लिए अपना लूँगा। पर स्वयं शादी शुदा है और मेरी भी तो सगाई हो चुकी है। ऊहापोह में थी शमा।

'जैदी टिकट मत लेना।' आवाज पर सरवर ने पलट कर देखा। टिकट खिड़की से दूर इकबाल खड़ा था। 'मेरे पास दो हैं' उसने हवा में हाथ हिलाया।

सरवर भीड़ को धकेल कर उसके पास आया। 'दो टिकट ! किसके लिए खरीदे जनाब ?'

'किसी अन्य के लिए नहीं अपनी बीबी के लिए ही एडवांस मँगवाए पर उमदा आई नहीं। उससे मिलने के लिए बफा वगैरह आ गई थी। अब मैं अकेला पड़ गया। सोचा कोई तो बी० एड० वाला मिल ही जायेगा और देखो तुम मिल ही गए न ? आओ कुछ पी लेते हैं—कॉफी चलेगी न !'

जैदी ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई। हाथ में तो चाबियों का गुच्छा खेल रहा था। 'चलो' और दोनों टहलते हुए बाहर आ गए।

'आज दिन भर कॉलेज में 'तुम्हारे मुता' को लेकर भाई लोग लुत्फ लेते रहे। जानकारी के अभाव में उनकी अटकलें बेतुकी। पर काफी दिलचस्प थी। कुछ अध्यापिकाएँ तो सचमुच चकित थी कि मुस्लिम समाज में यह क्या धांधली है ?'

'प्रिंसीपल के हाल चाल कहो। वह क्या कर रहा था ?'

'उसने बुलाया मुझे। तरह-तरह के सवाल पूछे। मुस्लिम पर्सनल ला का भी जिक्र आया अन्त में कहा—कोई जानकार मौलाना का नाम बताओ जो हमें पूर्ण जानकारी दे सके, संतुष्ट कर सके।'

तुमने मौलवी का नाम बताया क्यों नहीं।'

'बताया यार ! लो सिगरेट पीओ।'

'नहीं, इच्छा नहीं।

'कोई बात नहीं मेरी तो सुलगाओ।' जैदी ने तब इकबाल की सिगरेट लाइटर से सुलगादी। वह ढेर सारा धुंआ उगल कर बोला—'पीछा छुड़ाने के लिए मैंने उसे तीन चार मौलवियों के पते दे दिए। शायद कल बुलाकर उनसे 'मुता' के बारे में जानकारी लेगा। मौलवी कॉलेज में आने के लिए रजामंद हो गए तो यह भी निश्चित है कि वह सभी मुस्लिम प्रशिक्षणार्थियों को भी वहाँ चर्चा में सम्मिलित करे। मुझे पुरोहित सर ने ऐसा संकेत दिया था। तुम कल कॉलेज आ रहे हो न ?'

कल की कल सोचूंगा।'

'वेरी गुड ! आओ उस मेज पर। वहाँ खाली है।' और दोनों आगे बढ गए।

कॉफी आ गई तो इकबाल ने सिगरेट का शेष भाग एस ट्रे में मसल दिया। 'लो कॉफी पीओ जैदी।' एक प्याला उसकी तरफ और दूसरा अपनी तरफ खींच कर इकबाल कॉफी पीने लगा।

जैदी ने भी गम गम घूंट भरी। 'शमा के उस नेशन का क्या हुआ ?'

'वह मान्य हो गया। पता किया था मैंने। बस हिन्दी का और देना पड़ेगा। जो कभी भी दिलवा सकता है भाटिया।'

'कभी मेरे घर आओ। देखो तो सही कविता लिखने लायक है।'

'जरूर होगा जैदी। तुम्हारी पसन्द कभी घटिया नहीं होती। रही बात घर आने की सो शमा हमसे अकारण ही रुष्ट है। शायद मैं दकियानूस हूँ और तुम दोनों बिलकुल मॉड।'

इकबाल ने मनसिया से जैदी को देखा। वह खाइट वाली मेज से अखबार खींच रहा था। जैसे कुछ सुना ही न हो उसने यही दर्शाया और फिर कुछ देर बाद अपनी बात कही—

तो भाटिया हमारे व्यवहार से अभी तक बेचैन है ?'

'हाँ दिन भर परेशान सा ही था। वह क्या पूरा कॉलेज 'मुता' को लेकर उथल पुथल हो रहा है। विशेषकर महिलाओं में कुतूहल और घोर आश्चर्य है। अक्सर प्रध्यापक 'मुता' को उच्छृंखलता की संज्ञा दे रहे थे।'

खैर, 'तुम्हें कैसे लगता है ? जैदी ने आखिरी घूँट भर कर खाली प्याला खट से मेज पर रख दिया।

'क्या ? क्या चीज !' इकबाल जैदी का मतलब न समझा।

'प्रिंसीपल का रुख और हमारा मामला।' जैदी खिल खिलाया।

'मेरे विचार में तुम्हें वह कॉलेज से नहीं निकालेगा।

'किस आधार पर कह रहे हो तुम ?'

'बाद में बताऊँगा। पहले उठो। पिक्चर शुरू होने को ही है।' और वे दोनों काउण्टर पर आए। जिद करके पैसे जैदी ने ही चुकाए। वह न प्रसन्न था न दुखी। हाथों में उछल रही चाबियाँ उसकी मन स्थिति को जरूर स्पष्ट कर रही थी।

उधर शमा घर पर अकेली बिस्तर पर लेटी पत्रिका देखती अपनी दशा पर नए सिरे से सोचने लगी थी। जैदी कभी अकेला पिक्चर में नहीं गया। आज मैं अस्वस्थ हूँ तो भी चला गया। एक दिन नागा कर जाता तो क्या बिगड़ता। वे दिन कहाँ गए ? इसी सरवर ने एक दिन कहा— 'शमी, तुम्हारे बिना मेरा जीवन अब खोखला होगा। तुम क्या महसूस करती हो ?'

'मैं मैं भारी दुविधा मे हूँ। यह कौनसा रोग लगा लिया मैंने। वैसे यह साथ तो बी॰ एड॰ कोर्स तक ही सीमित है। फिर सभी मुसाफिर अपनी अपनी राह कूँच-कर देंगे। कहाँ के तुम और कहाँ की मैं।'

शमा की यथार्थ बात सुनकर जोदी नवस हो गया। उसे लगा—जैसे शमा को मुझ में कोई दिलचस्पी नही है। यह साथ तो परस्पर सहारे के लिए समझो क्या किया जाए कि शमा, शमा नही - मेरे लिए परवाना बन जाए। आखिर जौदी ने एक प्रोग्राम बना डाला।

सितम्बर माह की बात है, एक दिन जौदी ने शमा से कहा—कल सनडे है कहीं बाहर घूमने चलें ?'

"वाह ! तुमने तो मेरे मुँह की बात छीनली। मैं प्रकृति की आशिक हूँ। बहुत दिन हुए कोई कविता लिखे। वहाँ 'एक पंथ दो काज' वाली कहावत चरितार्थ करेंगे।'

जौदी खुश हो गया—'हम मडोर चलेंगे।'

'ओह नो ! कामन प्लेस है। हम- पहाड़ी झील पर कायलाना चलेंगे—ठाट से पिकनिक मनायेंगे—ठीक !'

शमा ने शरारत से जौदी को बाहों में भर लिया। 'जौदी तुम भी कविता किया करो न।'

'यह पागलपन अपने बस का नहीं।'

'क्या नही ? क्या तुम इकबाल से कम हो ?' शमा चिहुकी।

'कम तो मैं किसी से भी नही। सवाल पसन्द और रुचि का है। मैं काव्य-साहित्य से कतराता हूँ।'

'तब ?' शमा के हाथ ढीले पड़ गए, वह सिमिट आई।

'तब क्या ? तुम बनाना और सुनाना कविता। मैं प्रेम से सुनूँगा। तारीफ करूँगा और ज्यादा चाहोगी तो साथ-साथ गुनगुना भी लूँगा।'

'तब ठीक।' शमा खुश हो गई। एक बच्ची की तरह।

पिछले पेज/37

कायलाना, जोधपुर शहर से 5–7 कि मी दूर पहाड़ी में स्थित एक झील है। जैसलमेर सड़क से बाएँ हटकर सुरम्य स्थान, शानदार पिकनिक स्पोट। फिर यहाँ तक पैदल जाया जाए तो हरियाली मन को मोहित करती है, गुदगुदाती है।

सूर सागर चौराहे पर शमा और जैदी कुछ देर के लिए ठहरे। वहाँ उन्होंने फ्रूट खरीदे और बोतल में पानी भरा। वैसे खाने पीने का सामान वे घर से बना लाए थे। थमस में गर्म काफी भी भरी थी। शमा ने आगे पैदल चलने का आग्रह किया पर यह संभव न था क्योंकि जैदी अपना स्कूटर कहाँ छोड़ता।

घुमावदार सड़क पर चलते हुए वे जब कायलाना पहुँचे तो दस बज गए थे। उन्होंने इधर उधर देखा। फिर एक तरफ तन्हाई दिखी तो झील के किनारे पड़ाव डालकर पानी से खेलने लगे।

शमा को पानी से लगाव था। वह घुटनों तक पाँव डुबो कर बैठी पहाड़ी पर घूम रहे राडार की तरफ देख रही थी। जैदी की दृष्टि गेस्ट हाउस और वहाँ छितरी सैलानियों की भीड़ पर थी। फिर पलट कर उसने शमा की नंगी पिंडलियाँ देखीं।' कमाल है, यहाँ भी एकांत नहीं। शमी, उठाओ सामान दूसरी तरफ चलते हैं।'

किन्तु तभी राडार की तरफ जा रहे एक फौजी ट्रक को देखकर शमा बोली—'हम फौजी कैम्प की तरफ चलें। वे कुछ नई बातें बतायेंगे हमें। मुझे इनकी जिन्दगी—साधना से कम नहीं लगती। ये वर्ष भर में मात्र दो माह अपने परिवार के साथ काट पाते हैं। और एक हम हैं कि कोस को भी कोसें नहीं समझ रहे।'

उसने भय भरी दृष्टि से जैदी को देखा—'क्यों जैदी ?'

'ऐसी क्या पाबंदी है। ये परिवार साथ भी तो रख सकते हैं। इन्हें और भी छुट्टियाँ होती हैं फिर छोड़ो। आओ इस पत्थर पर चढ़ेंगे।'

जैदी ने शमा का हाथ पकड़ कर ऊपर खींचा और एकांत में समतल जगह देखकर वे बैठ गए। वहाँ खड़ा लम्बा पेड़ किसका था, वे दोनों ही न जान सके। हाँ छाया घनी और सुहानी थी। 'यहाँ से स्कूटर भी हमारी

नजर मे रहेगा।' जैदी लेट गया। शमा ने बैग खोला और करीने से सामान जमाने लगी। हल्की हवा मे उडते बाल गालो को थपथपा रहे थे मगर वह अनजान सी काम मे लगी थी। उसने जैदी की बात नही सुनी।

कॉफी पीने के बाद शमा ने कहा—'जैदी तुम यही बैठो। मैं कुछ दूर अकेली घूम आती हूँ।' और वह सूखे पत्थरो पर फुदकती हुई आगे निकल गई। इसके बाद वह मुडकर देखने लगी पर मोड आ जाने के कारण जैदी नही दिख रहा था।

कठोर और शुष्क पथरीले धरातल पर जहाँ तहा उभरी पहाडियाँ धूप और हवा से काली पड गई लगती थी। शमा ने कमर पर हाथ बाँध कर इधर से उधर तक दृष्टि दौडाई। फिर रगीन चश्मा उतार कर दुबारा देखा तो ये चट्टानें और खूबसूरत दिखी। एकान्त का सन्नाटा कितना प्यारा होता है। वह बुदबुदा कर एक विशाल शिला पर बैठ गई।

पहाडी का लाली पेटा आसमानी रग लिए था और हर चट्टान के पीछे विविध रहस्यो की उपस्थिति का अहसास कर वह रोमाचित होने लगी। ऊँचाई पर उडते गीध भी उसे भले लगे। देर तक बैठी वह इस दृश्य का आनन्द लेती रही किन्तु जैदी ने मजा किरकिरा कर दिया। वह कवि नही। ऐसे दृश्यो को महत्त्व नही देता। बस डग बढाता हुआ झट पीछे आ गया।

'मैं कितना खुश किस्मत हूँ कि तुम सा हमराही साथ मे है। शमी। इधर देखो। यह पहाडी प्रदेश तुम से शोभा पा रहा है।' और शमा ने उधर देखा तो जैदी का कैमरा 'क्लिक' कर उठा।

'उतार ली न, तस्वीर!' शमा मुस्कराई—'अब मुझे दो यह और तुम उसी शिलाखण्ड पर अधलेटे आसमान की ओर देखो।'

इसके बाद शमा ने जैदी की तस्वीरें खीची। फिर कई कोणो से जैदी ने उसकी।

'झील म नहायें?'

'तुम जरूर नहाओ। मैं डूब जाऊँगी, पानी काफी है।'

क्रिमशः पाँच/3

'मैं भी साथ हूँ !' जैदी बोला। पर शमा तैयार न हुई तो वह कपड़े उतार कर पानी में जा बैठा शमा ने उस पर कंकड़ फेंके।

पहाड़ी एकान्त, झील का किनारा। और दो ही दो। जैदी ने सोचा इससे अधिक उपयुक्त अवसर कभी शायद ही मिले। क्यों न शमा से मन की बात कह दूँ। वह क्या सोचती है। कुछ पता तो चले हमारा यह प्रेम आखिर किस सीमा तक है।

जैदी बुदबुदाया—'शमा, करीब आओ!' और वह पानी से बाहर निकल आया तो शमा करीब आ खड़ी हुई—'कहो!'

क्या जान कहूँ ? बहुधा हम जुबान वाले बेजुबान क्यों हो जाते हैं ? मैं तुम्हें कुछ कहना चाहता हूँ पर जुबान तो चुप है। अच्छा यही रहेगा कि तुम मेरी आँखों की भाषा व दिल की आवाज पहचान लो। ये जुबान से ज्यादा कह जाया करते हैं—शमी।'

बात क्या है जैदी। आज तुम्हारा जी ठीक तो है ?

मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। रोम रोम में बस गई हो तुम।

'ठीक है, नई बात कहो। यहाँ तक तो मैं भी पहुँच चुकी हूँ।' शमा मुस्कराई तो जैदी ने उसका हाथ दबाया।

'अगर सामाजिक बंधन न हों, लोक-लाज न हो तो दो युवा प्रेमी एक दूसरे में समा जाने की भावना रोक पायेंगे ?'

'शायद नहीं। सामाजिक व्यवस्थाएँ ही हमें रोकती हैं। जहाँ ये व्यवस्थाएँ, ये समझ नहीं होतीं वहाँ कोई इच्छा क्यों रुकेगी ?'

'हमारे बीच की दूरियाँ भी इन्हीं मजबूरियों की मारी हैं।

'पश्चिम में ऐसी मजबूरियाँ नहीं।' शमा ने कंकड़ फेंक कर पानी की शान्त सतह को थरथरा दिया। लहरें उठीं तो वह कई कंकड़ फेंकती ही गई।

'पश्चिम क्या, हमारे धर्म में भी मजबूरियाँ नहीं। कोई अपनी स्वाभाविक इच्छा का दमन क्यों करे। हमारे मजहब में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों

से सभी तो चिरस्थायी, पवित्र और पारलौकिक नहीं माना जाता। जहाँ अन्य समाज इसे बहुत अहमियत देते हैं।'

'मुस्लिम समाज मे स्त्री-पुरुष सम्बन्ध क्या पवित्र नही होते ?'

'विवाह के रूप म होते बेशक हैं पर सदैव के लिए और आखिरत मे भी हो यह जरूरी नही। इस्लाम मे विवाह एक सविदा, एक समझौता है जो टूट भी सकता है और जहाँ वफा, इज्जत व सम्मान मिलें—पुन स्थापित भी हो जाता है। फिर इस समाज मे इस समझौते के अनेक रूप भी होते हैं। हाँ व्यभिचार कतई क्षम्य नही है। लोग चाहे तो समझौता करलें पर व्यभिचार हरगिज न करें।'

'ठीक है। पर मन की इच्छा को इतना महत्त्व नही मिलना चाहिए जैदी! वरना पल पल चचल मन के लिए टुकडे टुकडे समझौता सभव कैसे हो ?' शमा हैरान हो रही थी।

'यह भी हमारे मजहब म सभव है। हम चाहे तो एक घटा, एक दिन या कुछ अधिक अवधि के लिए यह समझौता कर सकते हैं।'

'क्या ? क्या, कहते हो ? शमा सभल कर उठी। 'यह कैसे सभव है!'

जैदी मुस्कराया। और उसने बहुत ही मादक मद स्वर मे 'मुता विवाह' की प्रक्रिया शमा के कानो मे अमृत रूप मे उडेल दी।

'पिलानी की गर्ल्स होस्टल की कहानी पढी थी अखबार मे ?'

'हाँ वही न कि छात्राओ के पलगो के नीचे उनके पुरुष मित्र पकडे गए।'

वही। यह सब व्यभिचार, अनाचार और अनैतिक काम था। किन्तु ऐसे युगल प्रेमियो के लिए हमारे मजहब मे 'मुता व्यवस्था' है, जिसे धार्मिक, सामाजिक मान्यता प्राप्त है। अगर वे विधिवत समझौता (मुता) करलें तो वह न व्यभिचार होगा न बुरा कर्म। हाँ, मन मे इच्छा ही न उगे वह दूसरी बात है।' जैदी ने शमा का हाथ पुन थाम लिया।

'यहाँ कोई नहीं हमारे सिवा। यह पहाड़ी, ये पत्थर और ये पेड़ हैं। सच कहो शमा! क्या कभी तुम्हारा मन फिसला?'

'तुम अपनी कहो। मुझसे क्यों पूछ रहे हो?' शमा का मुँह लाल हो गया।'

'मेरे साथ ऐसा हुआ है। ईमानदारी की बात तो यह है कि फिसलन पर जबरदस्ती पाँव जमा कर चलना पड़ रहा है। डरता हूँ कि कोई ऐसी-वैसी बात मुँह से न निकल जाए जो तुम्हें नाराज करदे भला तुम क्या सोचोगी।'

'मैं क्या सोचती! कुछ नहीं मन मे उठे विचार का दबाना तो बुरी बात है। अच्छा यही होता है कि मन का भाव मुँह पर कहदें ताकि उस विकृति का निदान हो सके।'

'कह देना अच्छा है। पर न कह देना और भी अच्छा। मन तो मन है। यह इस अवस्था मे न जाने क्या-क्या सोच जाता है। सभी यदि अपने आन्तरिक भाव अगर यो प्रकट करें तो समाज ही बिखर जाएगा। नफरत, मारा मारी दुश्मनी और विघटन के अतिरिक्त तब शेष क्या बचेगा? लोग अवसर ढूँढते हैं ताकि प्रेम से मन की बात कह सकें फिर हर कोई इतना निडर भी नही होता।'

शमा खिल खिलाई—आज अवसर है। कहो क्या कहते हो?'

'मैं तुम्हें मन से प्यार करता हूँ। अब तन से भी। लेकिन तुम?' जैदी यह कहकर दूसरी तरफ देखने लगा।

'कई बार मीठी बातो की झोंक मे, जब हम अत्यधिक नजदीक होते हैं तो मेरे पाँव भी उखड़ने लगते हैं। यह सच है ईमानदारी की बात है। लेकिन जब यह उचित नही तो'

'तो तुम अपना इरादा बदल कर मन को दूसरी ओर कहीं भी उलझा लेती हो। मैं भी यही करता हूँ। लेकिन जो सयम न रख सके वो?' जैदी ने शमा की ठोडी ऊपर उठाई।

'उनका फिर पिलानी वाली छात्राओ जैसा हश्र होता है।' समाज मे लुके छिपे वो मिलते हैं और यही व्यभिचार होता है जा उन्हें कही का नही छोड़ता।' शमा समझने लगी थी।

'लेकिन मुसलमान को व्यभिचार करने, समाज की आँखों मे धूल झोंकने की जरूरत नहीं शमी ! जब वह यह महसूस करे कि साबत कदम रहना मुश्किल है तो 'समझौता' कर ले—यानी 'मुता' इसके लिए बहुत अच्छी व्यवस्था है?'

'आश्चर्य होता है इस अनोखी व्यवस्था पर।' शमा अविश्वास की अवस्था मे बोल रही थी—'खैर विचार करूँगी मैं और अगर धर्म सम्मत कोई व्यवस्था हुई तो मन मे पाप पालने की क्या आवश्यकता ?'

'तुम बहुत समझदार, बहुत अच्छी हो शमी।' जैदी ने उसे गोद में उठा लिया तो शमा ने पलकें बन्द करली।

जैदी और शमा में 'मुता' हो गया। वयस्क युगल अपने ढङ्ग से जीने के अपने अधिकार का उपभोग करने लगे। यह जब विवाह था तो, दोनों वैवाहिक जीवन क्या नहीं बिताते ? उन्होंने अप्रैल तक मौज मस्ती मारने की गरज से अवधि निश्चित करली और 'मेहर' की राशि के एक हजार रुपये जैदी ने शमा को दे दिए।

बी० एड० कॉलेज मे हर क्षेत्र मे अग्रणी, प्रतिभा की खान, शमा, घर पर भी खूब प्रसन्न रहती। अब आलम यह था कि दोनों एक दूसरे की खुश्बू के पीछे घूमते थे। हाँ 'मुता' का भेद सब पर प्रकट नहीं था। जैदी हुशियार व चालाक था उसने न पार्टी दी, न प्रचार ही किया।

जैदी अक्सर शमा से कहा करता—'हमारा सम्बन्ध जायज है। बस यही सन्तोष की बात है। इस व्यवस्था के प्रवर्तक को धन्यवाद जो हम गुनाह से बचे रहते हैं। इसमे न भय है, न सामाजिक असुरक्षा। फिर भी यदि आवश्यक हुआ तो हम मुता' को स्थायित्व प्रदान कर सकेंगे।

सितम्बर की एक 'शुभ तारीख को उन्होंने 'मुता' किया था। इसके बाद तो डेटिंग का नाटक नाम मात्र को ही रहा। वे अब घर पर ही मियाँ-बीबी की तरह जो थे।

ख्याति, सुख और प्रेम के पहाड़ पर थी शमा ! कनटेटेस्ट मे उसके प्राप्तांक बहुत अच्छे रहे। अत युवा प्रेम की विरोधी अध्यापिकाएँ शमा को

कुछ न कह सकी। समा अभी गिर नहीं, प्रगति पथ में ऊपर चढ़ रही थी और चढ़ते सूय पर उगली कौन उठाए।

किन्तु वास्तविकता? समा चोटी के चक्कर में चढ़ कर अपने पांवों में कुल्हाड़ी मार चुकी थी, लेकिन अभी मदहोशी का आलम था। वैसे उच्च शिखर से उसके पांव फिसल चुके थे। किन्तु चोट न लगने तक फिसलन को वह एक मान-ददायक खेल ही मानती रही। पर आलोचना पाठ के दौरान आए पक्ष ने उसे हिला दिया।

मोब्जर्वेशन को उमड़े उसके सहपाठी। गुरु भक्ति से सराबोर नन्हें नागरिकों के साथ ही उसके अपने प्राध्यापकों ने क्या सोचा होगा? अनेक घटकलें या अस्ला वे 'मुता' का क्या मानेंगे? वेष? नहीं, नहीं। यहां की संस्कृति में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं। कहीं यह मुता' घृणित पाशविक प्रवृत्ति का पर्याय बन गया तो, तु समझने वाले सरकारी लोग तो यही मानेंगे। उफ! समा सिहर उठी।

इस घुटन से छटपटा कर उसने पत्रिका फेंक दी। बिस्तर छोड़ा और खुली हवा में खुली छत पर आ गई। रात कभी की गहरा चुकी थी। हाँ अब चांद निकल आया था।

समा माइटी में थी। बाल बिखरे हुए, मुंह लटका हुआ। मुंह का स्वाद कड़ुवा कसैला और, जिस्म पर एक कपकपी सी तारी थी। उसका दिल जैसे ऐंठने लगा था। वह होठों पर जीभ फेरकर कुछ सोचने के लिए चांद की तरफ मुंह करके बाहों में घुटनों को बांधकर पगली सी बैठ गई थी। विरह में चांद जलता और सयोग में खिलता-हँसता दिखता है। किन्तु प्रज्ञाहीन व्यक्ति को? उसके कानों में तो केवल एक सन्नाटा गूंजता है। वह प्रकृति से नहीं, अपने अन्तर से सम्बद्ध होकर आत्म केन्द्रित हो जाता है।

जिसका मस्तिष्क जितना विकसित होता है उसके दिल में उतनी ही संवेदना होती है। वह उतनी ही गहराई से महसासों की पैनी धार से कटता है।

शमा सुशिक्षित थी। उसका अन्तर्द्वन्द्व इसलिए घोर अन्तर्द्वन्द्व था। जो कुछ उसने किया, मरजी से, स्वेच्छा से किया। फिर जिस किसी महानुभाव ने यह व्यवस्था धर्म के नाम पर दी, क्या वह एम० ए० पास भी नहीं था ? उसकी व्यावहारिक बुद्धि तो सामान्य जन से जरूर ज्यादा रही। फिर मुझे यह कचोट क्यों हो रही है ?

शमा ने चाँद से दृष्टि मिलाकर देर तक सोचा तो एक सूत्र हाथ लगा। सम्भवतः उस जमाने की परिस्थितियों में और आज की परिस्थितियों में भिन्नता है। हर तरह से आदमी ने तरक्की की है। विकास किया है और तब व अब में तभी तालमेल नहीं बैठ रहा। सत्य ही शादी से पूर्व की यह शादी कैसी है ? यह 'मुता' तो आदिवासियों की सी व्यवस्था लगती है। वह बुदबुदाई।

मुता हमारे समाज में विवाह पूर्व यौन सम्बन्धों के लिए एक अस्थाई स्वीकृति है। परिस्थिति वश विवाह न हो तो इस व्यवस्था से स्त्री-पुरुष यौन सम्बन्ध बना लेते हैं। किन्तु उसका परिणाम ? परिणाम तो हमेशा हर स्तर पर नारी के विपक्ष में ही जाता है। अतः यह पुरुष वर्ग के लिए मजे मनोरंजन की बात होकर स्त्री के लिए जी का जंजाल बन जाता है। मेरे साथ घट रही यह घटना इस बात का संकेत है जो आगे चलकर सबूत भी बन जाएगी। मैं परेशान हूँ जबकि जैदी बिंदास देवता सा घूम रहा है गोया कुछ हुआ ही न हो।

मैं सर्वप्रथम इकबाल की ओर आकृष्ट हुई थी। पर वह बेशक सजीदा निकला। दृढ़ता से मेरे प्रस्ताव को ठुकराकर उसने मुझे सचेत कर दिया। पर मैंने उसकी टोक को अपना हित नहीं, अपमान माना और बदले की भावना पैदा की पर मैं क्या बिगाड़ सकी उसका ? हाँ, अपना अहित शायद जरूर करती रही हूँ।

शमा की आँखें भरने लगीं क्योंकि यह दूसरी घटना और बुरी तरह उसे कचोट गई।

'जिस तरह कभी शमा ने इकबाल की किताब में प्रेम निवेदन का

पुरजा दवाण था उसे भी वैसा ही एक पत्र एक दिन किताब के मध्य पृष्ठो में मिला था। ठीक तरह से देखा तो इकबाल की लिखाई थी उसम। पत्र इस प्रकार था—'होस्टल कौड दिनो मे छुट्टी पर था मैं। और जब गांव से लौटा तो उमदा से यह जानकर दुख हुआ कि तुम जैदी के साथ तन्हा मकान मे रह रही हो। अच्छा तो यह रहता कि अन्य बहनो के साथ एडजेस्ट हो जाती और अब ज्ञात हुआ है कि जैदी के साथ तुमने 'मुता' कर लिया है। यह सब क्या—ठीक है ?

शमा! मैं रुबरू बात करके तुम्हे समझाना मगर तुम तो मेरे नाम से ही चिढती हो! क्या कहूँ मैं तुम्हे? तुम दोनो आपस में यदि प्यार करने लगे थे तो भी ठीक बात नहीं थी। हां, मित्रता मे बुराई नही होती। खैर मेरा व्यक्तिगत सुझाव है कि तुम अब भी जैदी से पीछा छुडालो। वरना यह तथाकथित 'मुता' कही का न छोडेगा।'

शमा ने इकबाल द्वारा लिखे गए इस पुरजे को तीन चार बार पढा। वह कौनसी कम थी। झट बुलाया इकबाल को और बुजुग भाव से आँखें तरेर कर कहा—

'मिस्टर इकबाल! सीख सलाह उसे दो जो मांग। मैं अपना भला बुरा खूब सोचती हूँ। जैदी के साथ रहती हूँ तो जलन हुई है जनाब को! इकबाल साहब, मुझे अपने—व्यक्तिगत जीवन मे किसी का दखल पसन्द नही।' और पुरजा चिंदी चिंदी करके इकबाल के मुँह पर मार कर वह रेफरेंस रूम से पांव पटकती हुई बाहर चली आई थी।

वह कौनसी शमा थी? मैं ही न! हां, तब काश! इकबाल की बात मान कर अपना भविष्य सोचती।

एक गहरा नि श्वास छोडा शमा ने पर अब क्या हो सकता है! पानी सिर से गुजर रहा है। ऐसे मे न आगे बढना बस मे है, न वापस लौटना। क्या किया जाए? क्या इसे शादी का रूप दे दूँ? जैदी मान जाएगा? वह तो शादी शुदा ठहरा। और मेरी भी सगाई हो

चुकी। शमा के भीतर एक वायु का गोला सा उठा और गले मे आकर जैसे अटक गया।

सत्यानाश! माटी का खिलौना पकने से पहले ही टूट गया। क्या मैं इतनी कमजोर थी? जो तनिक सुख के लिए ताड सी व्यवस्था को तोड बैठी। या पछता रही थी शमा।

जब आदमी विचारों मे उतरता है तो वक्त तेजी से फिसलता है। शमा ने दृष्टि उठाई। चाँद काफी ऊपर तक चढ आया था। फीकी हँसी हँसकर उसने अपने आपसे कहा। 'शमा! तू भी चाद सी सुन्दर है। इसमे दाग है तो तूने भी लगा लिया—पता लगने पर पापा क्या कहेगे? नदीम स्वीकार कर लेगा मुझे? मेरी खाला वह मोहल्ला। जहा मैं बेदाग बडी हुई, खेली किलकी उफ! कॉलेज के दिनो मे भी ऐसा नही हुआ कदम खूब साबुत रहे।' शमा की आँखें भर आई पर चाद हँस रहा था। इन्सान अपने किए पर रोता रहे प्रकृति क्यो रोए?

तभी सन्नाटा भग हुआ, नीचे सरवर जैदी का स्कूटर घरघराया तो शमा हडबडाकर उठ खडी हुई।

दरवाजे मे घुसते हुए जैदी ने शमा की कमर मे हाथ डालकर कहा—'आज तुम्हारे बिना पिक्चर का कोई मजा न रहा। वैसे 'स्वर्ग-नरक' फिल्म है भी बोगस। कुण्डी चढा लो। मैं कपडे उतारता हूँ।'

दरवाजा बन्द करके शमा जैदी के करीब आ खडी हुई—'मैं कैसे चलती साथ। तबीयत जो ठीक न थी। पर जैदी ने जैसे सुना ही नही। अपने ही धुन मे कह रहा था—'वहा इकबाल मिल गया था। दोनो ने साथ-साथ देखी पिक्चर।'

'अच्छा, तब तो कॉलेज की हवा के बारे मे कुछ बताया होगा।' शमा ने मन की कडुवाहट दबा कर औपचारिकता निभाई तो जैदी बोला—

हाँ, शायद हमारा रेस्टीगेशन न हो। बात भाटिया के दिमाग म बैठ गई लगती है।' जैदी कुर्सी खीच कर बैठ गया था।

'आज खाना खाकर भी तृप्ति नहीं हुई। बाहर का खाना कौन अच्छा होता है। घर तो भई घर ही होता है। फिर तुम्हारे हाथ का बना हो वैसे ही लज्जतदार होता है।'

जैदी ने शमा की तारीफ की पर उसे चापलूसी लगी। हमेशा दिल गुदगुदाने वाली बात आज न सुहाने का कारण शमा का बिगड़ा हुआ 'मूड' ही था। वह कुछ न बोली तो जैदी फिर फुसफुसाया:—'तुम सो जाओ। आराम जरूरी है।'

'और तुम ?'

'मैं लेशन बना लेता हूँ। रफ तैयार करके कल किसी के हाथ एप्रूव करा लेंगे। बात रफा दफा हो जाए और जब भी प्रिंसीपल परमीशन दे। हाथों हाथ लेशन दिया जा सकता है। तुम्हारे लिए हिंदी का बना दूंगा। इतिहास का तो जैसे तैसे हो ही गया।'

'क्या वह अधूरा लेशन मान लिया जायेगा ?

'वह तो मान लिया गया इकबाल बता रहा था। शमा तुम निश्चित होकर नीद लो।'

शमा कुछ न बोली। उसका जी अच्छा भी न था। सो करवट बदल कर लेट गई। जैदी रजिस्टर, पैन लेकर लेशन तैयार करने के लिए टेबुल पर आया और काम में जुट गया।

इस बी० एड० कालेज का प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी यह जानता है कि कॉलेज आते और वापस लौटते वक्त नोटिस बोर्ड जरूर देख लेना चाहिए। कोई सूचना कब लग जाए क्या पता।

हमेशा की भांति कुछ अध्यापक बोर्ड देख रहे थे और उनको पीछे से भीड़ ने घेर रखा था। सूचना 'मुता' से सम्बंधित थी। अतः अध्यापक उसे उत्सुकता से देख रहे थे। कुछ अध्यापिकाएँ भी ऊपर झुकी हुई थी।

इकबाल ने साइकिल रोक ली और पलटा तो रघुवीर ने आँखें बन्द करदी। उसने अपने हाथ इकबाल के दीदों से नहीं हटाए। 'आज प्रिंसीपल

ने तमाम मुस्लिम अध्यापक-अध्यापिकाओ को डेढ़ बजे रूम न० एक मे मिलने को कहा है ।'

'तुम्हे किसने बताया ।' इकबाल ने हँसकर हाथ छुडा लिए ।

'आओ नोटिस बोड देखो ।' रघुवीर उसे धकेलने लगा तो वह बोला—'यार रघु ! मुझे पता है । मैं कल शाम यह देखकर गया था । फिर प्रिंसीपल ने बुलाकर पूछा भी था—'यह व्यवस्था कैसी रहेगी ?'

'सर, ठीक ही है सबको नालेज हो जाएगा ।'

'हाँ भाई, प्रिंसीपल तुमसे राय क्यो न करेगा। तुम साहित्य सास्कृतिक मन्त्री जो हो । रघुवीर हँस पडा और फिर दोनो नोटिस बोड की तरफ चले गए ।

बी० एड० कॉलेज मे ट्रेनिंग कर रहे कोई तीन सौ अध्यापको मे मुस्लिम केवल पैंतीस थे । सत्ताईस अध्यापक और आठ अध्यापिकाएँ । कुछ लोकल थे तो कुछ राजस्थानी और कुछ अन्य राज्यो से । अोपर जोधपुर से महिलाएँ तो मात्र दो थी । शेष छहो बाहर की थी ।

डेढ बजे इकट्ठा होकर ये रूम न० एक मे गए। वहा पूरा फर्नीचर लगा था । सामने एक बडी मेज के इद गिद भी 10 15 कुर्सियाँ लगाई गई थी । शमा और जैदी दोनो ही आज फिर नही दिखे तो भाई लोग 'मुता' को लेकर ऊटपटाँग बातें करने लगे । महिला अध्यापक एक तरफ बैठी थी और मद हास्य के साथ खुसुर फुसुर कर रही थी ।

तभी प्रिंसीपल की आवाज आई, तो भाई लोगो ने दरवाजे के बाहर अहाते मे देखा । पूरा स्टाफ ही चला आ रहा था । उनके साथ दो तीन दाढी वाले मौलाना भी थे । वे अन्दर आए और बडी मेज वाली कुर्सियो पर बैठने लगे । भाटियाने मौलवी को बीच वाली कुर्सी पर बिठाकर ताली पीट दी तो बैठे हुए प्रशिक्षणार्थी भी तालियाँ बजाने लगे ।

जब सभी आसन ग्रहण कर चुके तो मिस्टर पुरोहित ने परिचय दिया और बैठक का मकसद बयान किया । जाहिर था कालेज स्टाफ मौलवी शकूर से 'मुता' के बारे मे जानकारी चाहता था और प्रिंसीपल ने सोचा—इस

वार्ता मे सभी मुस्लिम कंडीडेटस भी शामिल हो ताकि वे भी मजहबी मसले से लाभान्वित हो सकें, शायद इसी वास्ते उसने सबको आमन्त्रित किया था।

इधर उधर की वार्ता के बाद शमा व जैदी को लेकर धीरे धीरे बात शुरू की गई। फिर जब मुता का प्रसग आ गया तो मिस्टर राही ने पूछा—

'मौलाना, हमने यह 'मुता' शब्द पहली बार सुना है। सरवर जैदी जो हमारे यहा प्रशिक्षणार्थी है ने हमें उलझन मे डाल दिया है। मेहरबानी करके इस सम्बन्ध मे प्राथमिक जानकारी दें और अर्ज है—कृपया हिन्दी शब्दावली का ही प्रयोग करें क्योंकि उर्दू के अल्फाज हमारी समझ मे कम आयेंगे। वैसे आप तो हिन्दी, उर्दू, अरबी और फारसी ही नही, अंग्रेजी भी जानते हैं।'

शकूर मौलवी मुस्कराया, कन्धे पर पडे रेशमी रूमाल से होठो का पीक पोछा और जेब घडी निकाल कर वक्त पर नजर डाली। फिर सामने देखकर कहने लगा—

'मुता' विवाह की एक किस्म है, लेकिन है सर्वथा अस्थाई। 'मुता' का अर्थ है आनन्द, एजोयमट या 'उपभोग' (यूज) वैसे इसका मतलब आनन्द के लिए विवाह 'मेरिज फार एजायमेंट' हो सकता है। हाँ, बेशक यह शादी है, पर टूटी हुई। मुसलमानो मे एक निश्चित अवधि के लिए ऐसी व्यवस्था जायज होती है।'

'किन्तु यह व्यवस्था सम्पूर्ण मुसलमानो मे नही, फकत शिया सम्प्रदाय मे मान्य है न?' पीछे बैठा इकबाल उठा और उसने मौलाना को टोका।

'हाँ, आप ठीक फरमाते हैं यह सुन्नी मुसलमानों मे प्रचलित नही है, इस विवाह की अवधि दोनो पक्षो के द्वारा आपसी सहमति से निश्चित की जाती है।'

'क्या शिया पुरुष, शिया स्त्री से ही यह विवाह करता है।' इस बार बोले प्राध्यापक पुरोहित।

'नही तो। वह दूसरी स्त्रियो से भी कर सकता है। यानी पुरुष—किताबिया, ईसाई, यहूदी, सुन्नी मुसलमान और अग्नि पूजक स्त्री से भी 'मुता' कर सकता है।'

'तब तो शिया स्त्री को भी यह छूट होगी ?'

'नही प्रिंसीपल साहब।' मौलवी मुस्कराकर उधर पलटा। उसने एक डिबिया खोली और पान निकाल कर मुँह मे रखा। फिर ऊपर से कुछ छालिया मुँह मे डालकर कहने लगा।

'शिया स्त्रियो को किसी ऐसे पुरुष से 'मुता' विवाह की अनुमति नही है जो उसी मजहब या उसी सम्प्रदाय का नही है जिसकी कि वे स्वय अनुयायी हैं।' इतना कहकर मौलाना उठे और खिडकी से पीक थूक, वापस आसन ग्रहण करके कहा—

'आप बेतकल्लुफ होकर बात करें। शकाएँ पूछें—कहिए आगे क्या पूछना है ?

'आप इसकी आवश्यकताएँ बताने की भी मेहरबानी करें। परवेज ने सवाल किया।

'मुता' विवाह की आवश्यकताएँ ये हैं कि अव्वल तो सहवास की अवधि निश्चित होनी चाहिए। यह एक दिन, एक माह या कई वर्ष भी हो सकती है। अवधि न बढाई जाए तो निश्चित की गई अवधि पर खुद-ब-खुद यह भग हो जाता है।

'फिर 'मुता' विवाह मे कुछ 'मेहर की राशि' का उल्लेख जरूरी है जो लिखित मे हो अन्यथा यह मान्यता प्राप्त न होकर 'शून्य' हो जाता है।

इसके अलावा यदि दो शख्सो ने निश्चित अवधि के लिए विवाह किया है और वे 'मुता' की अवधि समाप्ति के बाद भी पति-पत्नी के रूप मे रहते हैं या उनका यह सम्बन्ध पति की मृत्यु तक पति-पत्नी के रूप मे चलता

रहता हैं तो किसी प्रतिकूल प्रमाण या साक्ष्य के अभाव मे पूर्व धारणा यह होगी कि विवाह को बढाया गया था।

'यानी मुता एक विवाह है, अस्थाई है और शिया मुसलमानो मे वैध होता है, सक्षेप मे यही तो बात हुई ?'

ठीक समझे आप।' मौलवी ने राही की ओर देखा तभी चाय आ गई तो पीछे से उठकर इकबाल आगे आया, उसने मेहमानो को चाय की प्यालियाँ दी। मौलाना ने पान का शेष भाग निगला और इधर उधर देखा तो परवेज ताड गया—'आपको पानी चाहिए न' वह मुस्कराया और मौलवी को पानी पेश किया तो शकूर साहब हँसे बिना न रहे। 'बरखुरदार खूब समझते हो। 'हो, हो' उसके छुटभाई भी दात निकाल रहे थे। फिर चाय की चुस्कियो के बीच वही प्रसग और आगे बढने लगा।

प्राध्यापक राही ने मौलवी के आगे पान की तस्तरी सरकाई। 'कुछ और वैधिक प्रसंगतियाँ मेरा मतलब ?'

'मैं समझ गया जनाब। बात यह है कि इसमे दोनो पक्षो म दाय प्राप्ति के पारस्परिक अधिकार नही होते। सिवाय उस दशा मे जबकि दोना के मध्य इस प्रकार का कोई करार हो।

इसके बाद मौलवी को फिर पीक थूकने के लिए उठना पडा तो अगली बात उनके सहयोगी ने स्पष्ट की—

दूसरे विवाह तथा सन्तान की वैधता की पूर्व धारणा जो पति पत्नी के रूप मे रहने तथा सहवास करने वाले माता पिता से उत्पन्न होती है, उस दशा मे भी बराबर लागू होती है, जहा कि घोषित सभोग शिया कानून के अनुसार 'मुता' या अस्थाई विवाह था और यह 'मुता' अब तक कायम रहता है। शिया कानून मे अन्य स्थायी विवाह की भाति ही मान्य होता है।

तीसरी बात—'मुता विवाह' की सन्तान औरस' होती है और यद्यपि ऐसे विवाह से पति पत्नी को दाय प्राप्ति के आपसी हकूक नही होते फिर भी चूंकि 'मुता विवाह की अवधि के दौरान गर्भ मे आए बच्चे 'औरस' होते हैं—वे माता पिता दोनो के दाय प्राप्ति के अधिकारी है।'

'मतलब यह कि'—मौलवी शकूर ने छोटे मौलाना को रोक कर स्वयं कहा—इस दौरान यानी गम में आई सन्तान जायज (वैध) होगी और अपने वालिद से दाय प्राप्त करने की हकदार होगी।

पाँचवी बात यह कि 'मुता विवाह में पत्नियों की संख्या की कोई सीमा निर्धारित नहीं।'

'इसका अर्थ हुआ—मुसलमान चार पत्नियों से भी अधिक रख सकता है?' मिस लूथरा एकाएक बोली तो कई होठ मुस्कराये।

'हाँ मुता में अधिक रखने का अधिकार है। पर शादी (स्थाई) में एक ही समय में यह संख्या चार से अधिक नहीं होती।'

मौलवी ने जेब घड़ी निकाल कर एक बार फिर समय देखा—'और 'मुता' विवाह के लिए कोई न्यूनतम सीमा नहीं है।' यह कह कर कन्धे पर पड़ा रूमाल मौलवी ने खींचकर अपने भीगे लब पोछे। श्रोता आपस में बतियाने लगे थे—क्योंकि कुछ देर के लिए चर्चा ढीली पड़ गई थी।

दूसरा मौलवी जो अपेक्षाकृत युवा था, कानों में दबे इत्र के फाहे निकालकर चुनने लगा। फिर ठीक फैलाकर पुनः कानों में लगा लिए और अँगुलियाँ सूँघ कर सीधा बैठ गया।

चर्चा में थोड़ा-बहुत सभी ने योग किया। हाँ पी टी आई रशीद खान ने जुबान न खोली थी। प्रिंसीपल ने संकेत में कुछ पूछने को कहा तो वह गला साफ कर बोले—

'मौलवी साहब! अब तक आपने हासिल करने की बातें सुनाई। मैं विपरीत बात पूछ रहा हूँ। मेहरबान, यह बतायें कि 'मुता' किन किन अवस्थाओं में समाप्त होता है?'

'आपने ठीक सवाल पूछा है—यह चार बातों से समाप्त हो जाता है। अव्वल—(1) दोनों में से किसी का इन्तकाल, (2) निश्चित अवधि की समाप्ति, (3) खाविंद द्वारा असमाप्त अवधि के दान (हिबा ए मुद्दत) या (4) आपसी सहमति के द्वारा यह समाप्त हो जाता है।'

' 'मुता विवाह म तलाक होता है ?' सक्सेना मैडम के इस प्रश्न पर न जाने सबने क्यो ठहाका लगाया। पर मौलवी ने बात सभाल ली। झट बोले—

' 'मुता विवाह' मे तलाक का कोई अधिकार नही होता। मौलवी ने भाटिया के बगल मे बैठी मिस रगा की तरफ देखा। 'आप खामोश हैं कुछ पूछिए न ?'

'मैं ?' रगा चौंक पडी।

'यह सोच रही है कि काश ! हिन्दू धर्म मे भी ऐसी कोई व्यवस्था होती।' प्रिंसीपल ने चुटकी ली तो कमरा ठहाको से गूँज उठा। मिस रगा झेंप कर नीचे देखने लगी थी। जब ठहाके कम हुए तो वफा खडी हुई—'बुजुगवार ! तब तो 'मुता म 'इद्दत' की मुद्दत भी होती होगी ?'

'जी हाँ 'मुता मे भी इद्दत की मुद्दत आम विवाह जैसी ही है। मासिक होने वाली स्त्री के लिए दो मासिक और न होने वाली के लिए यह अवधि पैंतालीस दिन है।'

और वह मेहर वाली क्या बात थी ? यानी मेहर होता है लिखित मे होता है। पर कभी कभी आधी राशि कुछ कह रहे थे न आप अभी नीचे आफिस म ?'

प्रिंसीपल भाटिया अटक अटक कर बोला—

'देखिएगा बात ऐसी है कि' मौलाना ने अपनी छडी सीधी करते हुए कहा—'विवाह उपभोग होता है तो पुरुष पूरी मेहर देता है। और विवाह उपभोग न होने की दशा मे बीबी आधी राशि की हकदार होती है। और कभी पत्नी, पति को अवधि से पहले छोड दे तो खाविंद को मेहर राशि मे आनुपातिक कटौती का हक होता है।'

'अच्छा एक अतिम सवाल मेरा भी'—प्रिंसीपल के आग्रह पर मिस रगा को पूछना ही पडा—'आज की परिस्थितियो मे 'मुता' विवाह क्या उचित है ?

'उचित-अनुचित को आप देखें। मैं इस मसले पर कुछ न बोलूँ तो बेहतर रहेगा। अच्छा रहे आप बुद्धि वग इस पर विचार करें। हाँ, इतना जरूर कहूँगा कि हजरत मोहम्मद साहब इसे पसन्द नहीं करते थे। आपके कॉलिजों में बहस हुआ करती है न? क्या कहते हैं उसे डिबेटिंग? हाँ कम्पीटीशन?'

'वाद विवाद प्रतियोगिता' पुरोहित जी हँसे।

'बेशक वही।' मौलवी भी हँस पड़े।

और चर्चा खत्म हुई तो प्रिंसीपल ने मौलाना लोगों का आभार प्रकट करते हुए इस आयोजन का उद्देश्य जाहिर किया—'हमारे कॉलिज की स्वस्थ परम्परा के अनुसार यह तय है कि यहाँ प्रशिक्षणार्थियों में किसी भी तरह की यौन उच्छृङ्खलता सह्य नहीं। सरवर जैदी और शमा में अन्य ऐसे सम्बन्ध पाकर मैं हिल गया। फिर 'मुता' की बात एकाएक सामने आई तो बर्दाश्त करना पड़ा। मैं हैरान हुआ और सत्य क्या है? इसे जानने के लिए यह सब करना पड़ा—अन्यथा किसी धर्म विशेष की व्यवस्थाओं पर महाविद्यालय में चर्चा का प्रावधान नहीं है। अब जबकि मुता व्यवस्था है, मैं जैदी और शमा को गलत नहीं मान सकता। हाँ, यदि यह नहीं होता तो कॉलिज से तो हटाता ही, मैं उन्हें पुलिस में भी देता।'

प्रिंसीपल के चेहरे पर पश्चाताप के भाव उभरे थे। इसके बाद सभी उठ खड़े हुए। भाटिया ने इकबाल को रुकने को कहा और खुद मौलवियों को छोड़ने के लिए बाहर तक आया।

भाटिया दिल का बुरा नहीं था। वैसे अपने छात्र-छात्राओं से उसे स्नेह रहता ही है। उसने लौटकर इकबाल से कहा—

'मैं जैदी और शमा से मिलना चाहता हूँ, अभी इसी वक्त। मैंने उन्हें फिजूल ही जलील किया। ड्राइवर से कहो [illegible]।' और जब तक संस्थान की मेटाडोर गाड़ी नहीं आई प्रिंसिपल [illegible] के आस-पास टहलता रहा।

अपने दरवाजे पर गाड़ी की आवाज सुनकर जैदी ने जब [illegible]

[illegible]

खोला तो अवाक् रह गया। सामने प्रिंसीपल, मिस रमा और इकबाल तथा वफा वगैरह खड़े थे।

'जी! आप? आप यहाँ ?'

'क्यों भई, हम अपने बच्चों के घर नहीं आ सकते ?'

'जी, ऐसी बात तो नहीं, किन्तु ?' जैदी कुछ न समझा।

किन्तु बाद में। पहले भीतर बिठाओगे कि नहीं ?' इकबाल जदी को धकेलकर भीतर आ गया तो शमा ने साश्चर्य उसे देखा। उन दोनों की हैरानी मिटाने के लिए तब इकबाल ने प्रिंसीपल साहब के आगमन का उद्देश्य बयान कर दिया। जिसे सुनकर वे और हैरान हो गए।

कुर्सी पर बैठने के बाद भाटिया इतना ही बोला—'आई अम सारी मि० जैदी। तुम्हें अपमानित किया। भई तुम्हारे मजहब से हम लोग नावाकिफ थे। विचार न करना। मेरे विचार में सब व्यभिचार था बिलकुल अनैतिक कृत्य। मैं तो संयम खो बैठा और हाँ, एक भूल और कर बैठा। यह सब बौखलाहट और शीघ्रता में हो गया। यानी मैंने तुम दोनों के पेरेंटस को भी सूचना दे दी थी। पर खर, यह सब वैध है तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। तुम कल ससम्मान कालेज आओगे। तुम्हारे सेशन करवा दूँगा मैं। शमा तबियत ठीक है न ?

शमा ने प्रिंसीपल का हाथ सिर पर देखा तो आँखें भरली।' जी ठीक हूँ।' 'अच्छा तो अब चलेंगे।' और जदी के आग्रह पर वे चाय नहीं पी सके, बस जैसे आए तुरंत वैसे ही लौट चले। हाँ सरवर जैदी और शमा परस्पर भौंचक्के से एक दूसरे को देखते खड़े थे अब।

फिर अचानक अपनी जगह उछल पड़ा जैदी।' शमा! मजा आ गया। देखो अक्ल आ गई न प्रिंसीपल को। तुम अभी एक घण्टा पहले मुझसे झगड़ रही थी कि यह कौनसी मुसीबत गले बाधदी। मैं अब कॉलिज कैसे जा पाऊँगी? किस तरह दिखाऊँगी अपना मुँह! मेरी इमेज का क्या होगा? और मैं चुप रहा था। पर अब तुम्हारे उन खीझ भरे सभी सवालों का जवाब मिल गया है न!' जैदी ने शमा का हाथ थाम कर झुलाया। 'आओ

कॉफी पीयें गई तीन बज गए खुदा का शुक्र है कि हमारी व्यवस्था को बुरा कहने सोचने वाले 'काफिर' को खेद प्रकट करना ही पड़ा। वह अफसोस जाहिर करने और माफी माँगने हमारे दर पर आया।'

जैदी ताली पीट-पीटकर पागलों की तरह हँस रहा था, जो शमा को अच्छा नहीं लगा—'तुम अपने बाप के समान बुजुर्ग—प्रिंसीपल को 'काफिर' कहते हो?'

'वह और है ही क्या?' जैदी ने लपककर शमा को बाहों में बाँध लिया। तनिक सिर पर हाथ फेरकर कुछ हमदर्दी जताती तो लट्टू हो गई उस पर वैसे सुनो वह बड़ा ही काँइयां प्रिंसीपल है। कभी उसके व मिस रमा के सम्बन्धों के बारे में सुनोगी तो नफरत से मुँह बिसूरोगी।'

'मुझे किसी से क्या लेना देना। 'करता सो भुगतता,' जो रिश्ता हमारे बीच है हम उसी तक सोचें तो बेहतर है। भाटिया का व्यक्तिगत जीवन जो भी हो, प्रिंसीपल के रूप में वह बेजोड़ है। सहयोग दयाभाव उसमें कूट कूटकर भरे हैं। अतः हम प्रशिक्षणार्थियों को उसके प्रति श्रद्धा रखनी ही चाहिए।'

अच्छा जी, हम भी श्रद्धा रखेंगे। पर पहले स्टोव तो जलाओ, कॉफी का वक्त गुजर रहा है।'

'अभी लो' शमा किचन में चली गई। उसने स्टोव जला कर दूध चढ़ा दिया था।

रात भर जिस बात को लेकर वह परेशान होती रही थी, फिर दिन भर भी तनाव बना रहा। वह परेशानी भाटिया के दर पर आकर खेद जाहिर करने के कारण काफूर हो गई। लोग सही बात समझ चुके हैं और 'मुता' को अब कोई गलत नहीं मानेगा। शमा को यह घटना सन्तोष दे रही थी। स्टोव की भरभराहट में वह पुनः पिघलकर जैदी के प्रति उठे आक्रोश को भूल रही थी।

कोई गलत काम तो नहीं हुआ और इस बात पर विश्वास जमा तो शमा के अधर मुस्करा दिए। और जब वह दो प्यालों में गम पेय भर कर

उठी तो उसका भीतर बाहर पुलक रहा था। जैदी ने भी प्याला पकड़ते वक्त शमा की उङ्गलियाँ दबा कर कहा—'मुझसे झगड़ाकर पछता रही हो न!'।

'हा, जैदी मैं व्यथ ही परेशान हो रही थी। बाकी 'मुता' तो सचमुच एक व्यवस्था है जिसे विधर्मी भी मान गए। किन्तु ' वह भी मुस्कराई पास करीब ही कुर्सी खीचकर बैठती हुई बोली—'किन्तु लगता है मीठा खाने वालो के लिए खारा खाने के दिन आ गए।' वह एकाएक गम्भीर हो गई।

'क्या मतलब ?' जैदी ने उसे देखा।

'वह प्रिंसीपल खुशी व चिन्ता एक साथ सौंप गया। हम खुशी तो यह कि 'मुता' मे उन्हे बुराई नही मिली। पर उसने जो हमारे पेरेन्टस को इत्तला करदी वह ?'

'चिन्ता छोडो शमी! वह भी ठीक ही होगा। हमारे पेरेन्टस बेवकूफ नही जो प्रिंसीपल की साधारण सी शिकायत पर कान धरेंगे। इस जीवन मे यह सब चलता रहता है जिसे घर वाले खूब समझते हैं। यकीन करो यहा कोई नहीं आएगा। हा, वे हमे पत्र डाल सकते हैं जिसका जवाब हम दे ही देंगे—क्यो ?'

जैदी शमा का मूड खूब समझने लगा था। झट टालने की गरज से बोला—देखो शमी! भाटिया ने हम पहले खुशी की बात कही है अत पहले उसका खूब जश्न मनायें। उसके बाद अगली 'चिन्ता' के बारे म 'किलाबन्दी' करेंगे।'

'जश्न किस रूप मे मनाने का इरादा है?' शमा ने जैदी को कनखियो से देखा।

'कोई खास प्राग्राम नहीं कालेज की किताबें छोडो और पिक्चर की तरफ दौडो—बस जैदी हँसा, 'यहाँ जोधपुर मे और साधन ही क्या है।'

बार-बार पिक्चर जाना ठीक नही। मेरा तो जी घबराता है।

अच्छा रहे इस खुशी मे जोरदार लेशन बनाकर बेजोड तैयारी करें। मैं उस दिन बिगडे अपने लेशन की कमी पूरी करना चाहती हूँ। प्लीज हेल्प मी।' शमा ने मनुहार की तो जैदी का उत्साह ठण्डा पड गया—'ओह नो! क्या बोगस बात ले बैठो। आज तो पिक्चर ही चलेगे।'

'पर मेरा मूड कतई नही है। नही जाना मुझे सिनेमा।' शमा उत्तेजित हो गई। जैदी उसकी झुँझलाहट से आश्चय चकित हुआ।

'कमाल है! यह तुम्हें हो क्या गया है? आजकल तुम्हारा उत्साह, उमग व चुलबुलाहट कहा गए? शमी, तुम अकारण क्यो परेशान रहने लगी हो? हम परस्पर प्यार करने लगे। एक दूसरे के बिना अधूरापन खलने लगा और जब फिसलने की नौबत आई तो गुनाह से बचने के लिए पारस्परिक सहमति से मुता' कर लिया। हमारे यौन सम्ब ध वैध हैं। तब मानसिक तनाव और यह आत्म हीनता की स्थिति क्यो है?'

मैं क्या करूँ? विपरीत विचार और आशकाएँ पीछा नही छोड रहे? शमा का स्वर लटका हुआ था।

'तुम इस स्थिति से बचो शमी! बहुत सामान्य बात को इतनी गहराई से सोचने की आखिर जरूरत क्या है? शमी! तुम सोचा मत करो। सोचना ही समस्या है। बस अपने जैदी का यकीन करो और मौज मस्ती के मूड मे रहा करो। आज लोग अवैध यौन सम्ब ध यहा तक कि विवाहेत्तर भी रखते हैं और खुश रहते हैं फिर हमारा 'मुता' तो वैध है। क्या विवाहित स्त्री पुरुष यो मुँह लटकाए जि दगी जीते हैं? भला पछतावा, भय और चिन्ता किस लिए? हमे न तो किसी ने ठगा है और न हमने किसी को ठगा है।'

फिर भी कॉलेज वाले क्या सोचेंगे?' शमा बुदबुदाई।'

'खाक सोचेंगे? उन्ह अपने से ही फुरसत नही। अभी भाटिया क्यो आया था यहा! अब कौनसी शका रह गई तुम्हारे मन मे? शमा, उनसे हम सच पूछो तो लाख गुना ठीक है। वे कौन से दूध धोये है? देखो मिस रगा आज तक कुँआरी है। आगे भी रहेगी। पर हर रात उसके बगले पर

भाटिया मेटाडोर लेकर क्यों जाता है ? लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि रंगा की कार भी प्रिंसीपल ने दिलवाई है।'

'तुम्हें यह सब किसने बतलाया ?' शमा हैरान थी।

'उसी के ड्राइवर ने। वह होस्टल के ऊपर वाली कोठरी में रहता है, काफी रात बीतने पर आता तो हम पूछ लेते और वह सब कुछ यह कहकर बता देता किसी से कहना मत।' जैदी मुस्कराया—'उसे बख्शीश मिल जाती है शमा, लिहाजा बहुत खुश रहता है वह।'

शमा खिलखिला रही थी—'और कोई लतीफा ?'

'लतीफा कैसे ? सब कुछ आँखों देखा है। वह गंजा लायब्रेरियन ! या अल्ला हर वक्त लड़कियों को घूरता रहता है। दत्त सर लार टपकाता रहता ही है। तभी उसकी बीबी छोड़ गई। और वह खूँखार हिन्दी वाला सर, तौबा, क्लास में छोकरियों पर चाक के टुकड़े फेंकता रहता है। उसने पिछली साल एक अध्यापिका से प्रथम लाने का झाँसा देकर सोने की जंजीर ही छीनली थी।'

'ओ ! माई गाड !' शमा ने कानों तक हाथ उठाए।

'मिस विमला आज भी कुँवारी है और उसे रह रहकर फीट्स पड़ते हैं। ड्राइङ्ग वाला क्या कम है। कोई चाट माँगो अध्यापक को जरूर मना करेगा और तुम जैसी जरा इच्छा करे कि स्वयं निकाल कर ला देगा। मैं पूछता हूँ यह सब क्या है ? फिर आप ही बेचैनी सी प्रकट कर बुदबुदाया—

'शमी ! ये हरकतें यौन कुंठाएं हैं। यौन विकारों के परिणामों की परिणति ! ऐसा हम पसन्द नहीं। रस्ते आओ और रस्ते जाओ या फिर किसी सबब प्यार व्यार हो जाए तो काला मन करने से तो अच्छा है कि परस्पर 'मुता' करले। हमारे कॉलेज में यह सब चल रहा है। कई प्रशिक्षणार्थी भी इस चक्कर में हैं लेकिन उनको कोई जुबान पर नहीं लाता और हमें उछाल कर रख दिया। अब तुम्हें इस हंगामे से न जाने कौनसा सदमा पहुँच गया

है जो निढाल होकर पड़ गई हो।' जैदी हाथ नचाकर इधर उधर टहलने लगा तो शमा की हँसी छूट गई। 'मदारी कहीं के।'

वह जैदी के पास आकर बोली—'मैं सब समझती हूँ। चलो 'मुता' मे कोई बुराई नही और बुराई है भी तो क्या हुआ। सब कुछ पारम्परिक सहमति से जो हुआ है।'

'फिर डर और सकोच के नीचे क्यो दब रही हो? तरह-तरह की आशकाएँ क्यो तुम्हारा अन्तर मथ रही हैं? शमा, यो अन्तर्द्वन्द्व और ऊहापोह मे उलझी तुम्हारी साँसें मुझे तोड रही हैं। मुझे यह देवदासी जिन्दगी पसन्द नही।'

'मुझे भी कब है। लो रूठो मत। मैं तैयार होकर तुम्हारे साथ पिक्चर चलूँगी।' शमा स्प्रिंगदार खिलौने की तरह उछलकर खड़ी हो गई। उसने नहा धोकर वह लिबास पहना कि जैदी की आँखें खुशी और आश्चर्य से फैल गईं। 'उठो मैं तैयार हूँ।'

इस बी० एड० कालेज मे पढाई कम और सवलो की धपधप ज्यादा होती है। शायद राजस्थान मे अपने ढग का यह एक ही महाविद्यालय है जहाँ इतने सारे सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इस शिक्षक महाविद्यालय मे हर बात के अक हैं और जो जितना 'नाटक' करता है उसका भाग्य भी उतना ही चमकता है।

अध्यापिकाएँ तो आए दिन यहाँ घुँघरू बाँध कर नृत्य को तैयार हो जाती हैं, लेकिन इस बार सितम्बर मे विश्वविद्यालय वालो की हडताल व तोड फोड की कार्यवाही के कारण सास्कृतिक सप्ताह तब सम्पन्न न होकर अब नवम्बर मे हो रहा था। कोई तेरह आइटम्स थे। जिनमे सेक्शन वाइज कम्पीटिशन हेतु तैयारियाँ शुरू हो चुकी थी। और प्रभारी प्राध्यापक कलाकारो को अपने स्तर पर अभ्यास करवा रहे थे।

सोलो डास, ग्रुप डास, सुगम सगीत, सामूहिक गीत, इन्स्ट्रूमेटल म्यूजिक, एकाकी ड्रामा, फैंसीड्रेस, मोनो एक्टिग, इङ्गलिश प्ले और न जाने क्या-क्या आइटम्स यहाँ भव्य रूप म प्रस्तुत किए जाने की अनोखी परम्परा रही है।

सत्र मे एक दो कवि सम्मेलन और साहित्यिक कायक्रम भी होते हैं और इन कायक्रमो मे बाहर के गणमान्य व्यक्ति जरूर शिरकत करते अत अध्यापक ही नही प्राध्यापक भी प्रतियोगिता जीतने के लिए कडी मेहनत करते हैं।

'डी' सेक्शन के दोनो श्रेष्ठ कलाकारो को कॉलेज स्टाफ ने मनाया तब कही जाकर 'मुता' के नाम पर हुए अपमान को भुलाकर शमा व जदी मैदान मे आए। उन्होने कम्पीटिशन की तैयारी जोर शोर से शुरू करदी। और जिस शाम ड्रामा होना था। उसी ऐन दिन फ्लाइङ्ग आफिसर मिस्टर जुबेर आगरा से जोधपुर पहुँचे थे।

ओपन थियेटर मे स्थित मच पर शमा रिहसल कर रही थी कि किसी ने उसे सूचना दी।

'आपके पापा आए हैं, शमा!'

क्या?' शमा का चेहरा तर से उतर गया। और वह ड्रेस उतार कर बाहर भागी। सामने जब बाप का देखा तो बेटी से न रहा गया। वह उनसे लिपट गई। 'आप, कब आ गए?'

'बस अभी आया हूँ। तुम ठीक हो न!' 'जुबेर ने बेटी की पीठ सहलाई।

प्रिंसीपल से मिले? शमा ने हिम्मत करके पूछ लिया।

'नही सीधा ही आ रहा हूँ सोचा पहले तुमसे मिल लूँ। वैसे आज यहाँ यह क्या कर रही हो तुम?'

'हम ड्रामे की रिहसल कर रहे हैं अभी कालेज का कल्चरल वीक चल रहा है। कम्पीटिशन है पापा और आप प्रिंसीपल से नही मिले। सारी बात खुद ही बता दूँगी म। वैसे आप आए तो प्रिंसीपल क पत्र पर ही न?'

'हाँ हाँ। मगर शिकायत क्या है?' अफसर असमजस मे था।

'थोड़ा ठहरें सब बता दूँगी। देखो पापा यह हमारी कैंटीन है। आप इधर बैठिए मैं दो मिनट मे आई।'

और कॉफी का आडर देकर शमा कालेज की ऊपरी मजिल की ओर भागी।

'जैदी तुम यहाँ बैठे हो ? रिहसल मे नही आए ?'

'मैं एकान्त मे बैठ कर अपना पाट याद कर रहा हूँ। मगर तुम्हारे चेहरे पर हवाइया क्यो उड रही है ? खैरियत तो है ?'

'गजब हो गया जैदी। पापा आ गए—मेरे पापा।'

'क्या कहती हो ?' जैदी कुर्सी से उछला।

'सच ही तो कह रही हूँ। तुम स्कूटर की चावी दो मै उन्हे घर ले जा रही हूँ। कहीं यहीं बिगड बैठे तो फिर सभलेगे भी नही। वैसे तुम्हे चिन्तित होने की जरूरत नही सब सँभाल लूँगी मै। तुम अपना पाट याद करलो—अच्छा।'

चावी लेकर शमा नीचे आई तब जुबेर साहब कॉफी पी चुके थे। 'मै स्कूटर की चाबी लाने गई थी। एक मेरा क्लास फैलो है—स्कूटर वाला।'

'लेकिन इसकी जरूरत नही। मैं तो एरोड्राम से जीप लेकर आया हूँ। वापस दे आओ जिसकी भी है।'

अच्छा तो अभी आई मै।' शमा फिर ऊपर दौड गई। और जब लौटी तो जीप स्टाट थी। उसने रास्ता बताया जीप उधर ही फिसलती गई तथा कुछेक मिनटो में ही वे शास्त्रीनगर स्थित मकान मे थे।

जब तक जुबेर साहब नहाए। शमा ने नाश्ता तैयार कर लिया और फिर नाश्ते के दौरान ही बेटी ने बाप का शिकायत की भूमिका बताना शुरू कर दिया।

शमा ने मन मे तय कर लिया था कि अब कुछ भी छिपाना बेकार है। फिर सब कुछ बता देने पर अगर बाप बिगडे तो दृढता से मुकाबला

करना ही होगा। लेकिन जब 'मुता' जायज है तो यह क्यों नाराज होंगे? वैसे मुझ पर पापा हमेशा मेहरबान ही रहे हैं। तो मैं बता ही दूँ।

और शमा ने धीरे-धीरे सारी बात खोलकर रख दी। पर यह नहीं बताया कि मैं माँ बनने वाली हूँ। 'मुता' के बारे में सुनकर जुबेर साहब के मन पर क्या गुजरी यह उनके चेहरे से कतई स्पष्ट नहीं हो सका। वह बोले भी कुछ विशेष नहीं। थोड़ी देर चेहरा निर्विकार रहा फिर वह मुस्कराए।

'तो जैदी के साथ रह रही हो तुम आजकल। खैर तुम्हें क्या कहना है—बच्ची तो हो नहीं तुम। अपना भला-बुरा खुद सोचती हो। अपनी रूह कुछ तो कहती होगी! रूह का अहसास ठीक है तो वह काम अच्छा। और वह दुत्कारे तो बुरा।'

जुबेर साहब ने गिलास उठाकर पानी पिया और फिर बोले—शमा बेटी एक हदीस है—जो काम इन्सान को कचोटे, जिसे करते हुए हिचके और दूसरों से छिपाने की कोशिश करे वही गुनाह है। और वे खड़े हो गए। मैं चलूँगा अब?'

कहाँ? नहीं पापा, अभी आप यहीं ठहरें।' शमा भी खड़ी हुई।

'यहां तुम्हें दिक्कत होगी। मैं एयर क्राफ्ट कैंपस में अपने दोस्त मेहता के यहां ठहरा हूँ, यह जीप उसी की है। घबराओ नहीं तुम्हारा ड्रामा देखने रात्रि में जरूर आऊँगा। अच्छा अभिनय करना। वहाँ वो एड में उसके भी तो मास हैं।

जी पापा।' शमा खुश हो गई। यह आपकी पाकेट में किसका खत है?'

विदेशी पत्र पहचान लेती हो? तुम्हारा आइडिया ठीक है—यह नदीम का ही है। वह कुछ दिनों के लिए कल परसों तक कानपुर पहुँच रहा है। अरे हाँ, रुपयों की जरूरत होगी तुम्हें?'

'नहीं अभी काफी हैं। बैंक से निकाल लूँगी।'

'ग्राल राइट तो मैं चला। तुम भी कॉलेज जाकर तैयारी करो।'

'ग्राप जैंदी से नही मिलेंगे—पापा ?' स्वर धीमा था।

'सवेरे फिर ग्रा जाऊँगा।'

'वह ग्रच्छा कलाकार भी है। मेरे साथ उसका रोल देखें।'

'तभी तो ग्रा रहा हूँ शाम को।' बाप ने बेटी के सिर पर हाथ फेरा ग्रौर रवाना हो गए जुबेर साहब।

ग्रौर जीप के चले जाने के बाद ग्रब शमा की खुशी का पारावार नही था। हर्षातिरेक वह दौडकर कमरे-खिडकियो मे लटकते प्रत्येक परदे से लिपटने लगी। ग्राईने के सामने—बार बार खडी हुई। पापा की फ्रेम फोटो के कितने ही चुम्बन लिए ग्रौर फिर बिस्तर पर पडकर तकियो के साथ लोट पोट हो गई।

इसके बाद उसने टेप रिकार्डर चालू किया ग्रौर उस पर जी भरकर डास किया। पसीने से लथपथ हो गई पर खुशी इतनी थी कि ग्रासानी से ज्वार न उतरा। वह हाँफती हुई हल्की हल्की चालें निकालने लगी। ठण्डे मौसम मे भी तब वह फर्श पर लेट गई ग्रौर ग्राँखें बन्द करके भविष्य की कल्पनाग्रो मे खो गई—जैंदी मेरा मैं जैंदी की।'

शमा जब कॉलेज पहुँची तो उसके पाँव जमी पर नही पड रहे थे। ग्रब 'मुता' की वैधता के प्रति उसके मन मे पूर्ण विश्वास जम गया था। उसने जैंदी को तत्काल यह खबर ग्रौर पापा का उदार बर्ताव बताया।

जैंदी ने पूर्ण ग्रविश्वास के साथ शमा का हाथ पकडकर कहा—'वह सच कह रही हो तुम ?'

'शतप्रतिशत सच—जैंदी—पापा दी ग्रेट।' ग्रौर वह उसकी गर्दन मे झूल गई।

फिर तो शाम हुई, ग्रँधेरा घिरा ग्रौर शिक्षक महाविद्यालय का ग्रोपन थियेटर नियोन रोशनी मे नहा उठा। मच पर नीले पीले ग्रौर लाल परदे

दिए गए। कार्यक्रम से पहले पृष्ठभूमि से उभरता मधुर मंद वाद्य-संगीत माहौल को मादक बना रहा था।

पंडाल अतिथियों, दर्शकों और अध्यापकों से भरने लगा और फिर मिस लालानी उद्घोषक की आवाज माइक पर गूँजी।

'कृपया आसन ग्रहण कीजिएगा। कार्यक्रम अब से ठीक पन्द्रह मिनट बाद शुरू हो रहा है।'

घोषणा सुनते ही सड़क पर खुलने वाले दरवाजे पर इकट्ठी भीड़ ने जोर मारा। वे बिदग्राऊट भीतर प्रवेश के प्रयत्न में लगे अनधिकृत लोग थे। किन्तु पुलिस ने सक्रियता दिखाई और भड़भड़ाकर लोहे का फाटक बन्द हो गया। भीतर वाले भीतर और बाहर वाले बाहर रह गए—कार्यक्रम शुरू हो गया था।

वाद्य की धीमी अनुगूँज के साथ एक परदा उठा तो दूसरे पर एक शीर्षक उभरा और दिप् दिप करते उस नाम को दर्शकों ने पढ़ लिया—'युवा मानस'। फिर पात्रों की सूची और सहयोगियों के नाम। रोशनी हल्की लाल हुई फिर पीली और फिर नीली से क्रमश: जामुनी होकर ठेठ पीछे लुभाता सा अँधेरा, जहां से एक स्त्री और एक पुरुष पात्र उभर कर सामने आए।

वे एक परदे पर उभरे पेड़ की आड़ में बैठे भयातुर से लग रहे थे। उनकी चेष्टाओं ने ऐसे भाव दिए कि पंडाल में नितान्त शांति छा गई। नायिका की भंगिमा, कला में कीर्तिमान स्थापित कर दर्शकों के मनमस्तिष्क पर छाने लगी थी।

वह बोली थी— प्यार देने वाले, रोटी भी दे सकोगे? मुझे भूख लगी है।' मृदङ्ग पर जैसे थाप पड़ी हो। बहुत गम्भीर वाणी थी यह। नायिका ने अपना सिकुड़ता पेट टटोला था।

किन्तु नायक चुप था। पेड़ की सूखी टहनियों को घूरता हुआ कि नायिका ने इशारे से कहा—देखो, पेड़ पर चढ़ भी जाओ। क्या हम सुरक्षित

हैं ? यदि हाँ तो लकडियाँ बीन कर आग जलाकर शिकार सेंक लूँ।' और बेचैनी भरी अपूर्व भगिमाएँ।

नायक पेड पर चढकर दूर दूर तक देखता है, फिर अचानक नीचे कूदता है। 'चलो जल्दी चलो। हमारे पीछे आ रहे हैं वो '

'लेकिन मैं बेहद थकी हूँ, भूखी भी।'

लो प्यार ले लो।' वह उसका हाथ चूमता है।

'नही।' नायिका सुबकी—'मुझे भूख लगी है, प्यार नही रोटीऽऽ!' लेकिन नायक परेशान गठरी उठाकर चल पडता है। नायिका किंकर्तव्य विमूढ खडी होकर अपना आप पास देखकर, फिर घँसते लडखडाते पाँवों— इस तरह आगे बढती है मानो प्यार जीवन का अभिशाप बन गया हो।

यह दृश्य इतना सजीव होता है कि पडाल तालियों की गडगडाहट से गूँज उठता है। किन्तु तभी भीड में से कोई चिल्लाया—'पुरानी पीढी से डर कर भागो मत। 'मुता' करलो—'मुता'।

यह वाक्य नायक ने सुना नायिका ने भी, प्रिंसीपल ने और निर्देशक ने भी, अन्य श्रोताओं ने और आगे बैठे वायुसेना अधिकारी जुबेर ने भी। पर ग्रीन रूम मे शमा कह रही थी। 'जलने वालो को जलने दो जैदी। आओ हम दूसरे सीन की तैयारी करें।'

शमा ने ग्रीन रूम का परदा थोडा सा उठाकर सामने पडाल की ओर देखा। पापा, प्रिंसीपल के बगल वाली कुर्सी पर बैठे दिख गए उसे। पास ही दो तीन वायुसेना अधिकारी और भी थे। सब प्रसन्न थे। पापा से शायद भाटिया अभिनय की तारीफ कर रहा था।

इन सब बातो ने शमा का मनोबल बढा दिया, अत उसका दूसरा सीन और भी जानदार शानदार रहा।

इसके बाद 'ए' सेक्शन वालो की एकाकी आई। जिसने बोर किया। 'बी' वाले भी असफल रहे। हाँ 'सी' वालो का 'इण्टरव्यू' व्यग्य हास्य से भरपूर होने के कारण दर्शको का मनोरजन कर सका।

सफलता की उस रात न जैदी सोया न शमा को नींद आई। अभिनय में सफलता, पापा की उदारता और परिवार की प्रसन्नता ने शमा को विभोर कर दिया था।

'जैदी मॉर्निङ्ग में पापा आयेंगे तो मैं उनके कदमों पर सिर रख दूँगी। बाप हों तो ऐसा हो। कितने उदार, कितने सहिष्णु कितने सजीव हैं मेरे पापा।' वह झूम उठी।

'लेकिन मेरा परिवार इतना उदार नहीं है। 'जैदी ने अपनी बात कही।' मानता हूँ तुम्हारे अब्बा फरिश्ता हैं। पर तुम उन्हें सिजदा मत करना।'

'क्यों? हर्ज ही क्या है।'

'बुत परस्ती का इल्जाम लग जाएगा शमा!'

'जरूर लगने दो। ऐसे वालिद औलाद के लिए खुदा से कम नहीं होते। फिर माँ के अभाव में वही सब कुछ हैं मेरे शमा का स्वर भर्राया— 'जैदी, मैं पापा को सिजदा करूँगी।

'ठीक है करना।' जैदी ने बात का रुख मोड़ दिया। 'ड्रामे के बीच वह कौन चिल्लाया था—'मुक्ता करलो भागो मत!'

'पता नहीं।' शमा ने आँखें मींची।

'मगर पता करना होगा। ऐसे तत्वों को तुरन्त दबा देना चाहिए।'

'नहीं जैदी। कुत्ते भोंक कर स्वयं रह जायेंगे। वैसे हमारा ही कोई साथी है। उसका उद्देश्य हमें नवस करना था ताकि अभिनय बिगड़े और हम कम्पीटिशन हार जांय।

'मुझे तो बुरा लगा। गुस्सा भी चढ़ा। पर कमाल है तुम तो खूब सहज रहीं?' जैदी ने शमा की पीठ थपथपाई।

'मैं ऐसी वैसी बातों से नहीं डरती। पापा का डर जरूर था। सो जब निकल गया तो अभिनय में निखार आता ही। आगे देखना, अब मैं इस शिक्षक महाविद्यालय के सारे रिकार्ड्स तोड़ दूँगी।'

'ग्रोर पढ़ाई म। मेरा मतलब थ्योरी ?'

'वह ता गोल्ड मेडल शमा के लिए ही बन रहा है। अध्यापन म मेरा पूर्ण अधिकार है—शिक्षण म रुचि है। मैं मेहनत मे कोई कोर-कसर न रखूँगी। पर तुम अपनी बात तो कहो ?' वह हँसी।

'तुम प्रथम तो दूसरा स्थान बदे का समझो।'

'गुड, मेरी शुभ कामनाएँ दो ताली' शमा ने गेदी के हाथ मे अपना हाथ दे दिया। जैसी न उस कसकर पकड़ा ग्रीर जोर से दबाया।

'ऊई ई छोड़ो भी। हथेली पीस दोगे ?'

प्यार जता रहा हूँ—माहनरमा।'

'हु हु ! इन चोचलो से पेट नहीं भरेगा। ग्राग्रो कुछ खा तो लें।' ग्रीर शमा मेज कुर्सियाँ ठीक करने लगी।

'रात ग्राग दर क्या ? खाना तो खालेंगे। तुम पहले अपना पूरा मेकग्रप साफ करो। जाग्रो साबुन से मुँह हाथ धालो।'

ग्रोह माई गॉड ! मुझे तो खयाल ही न रहा।'

ग्रीर जब दाना खाना खा रहे थे ता बेहद खुश थे।

'ग्रब कहो 'भुना' मे मौज है न ?' सरवर न शमा के मुँह मे निवाला रखा।

'है। शमा ने उसकी उँगलियाँ दाँता मे भीच ली।

'ग्ररे रे छोड़ो खून आ जाएगा।'

'शमा ! नीद नहीं ग्रा रही तो ग्राग्रो कुछ पढ लें, पर पढ़ें क्या ?' सरवर जैंदी ग्रलमारी मे जमाई किताबो को घूरने लगा।

'थोड़ा ई एम एम जो देख लेते हैं।'

'यह ई एम एम जो है क्या ? पूरा नाम बता सकती हो ?'

'एजूकेशनल मेथोडालाजी, मेजरमेण्ट एण्ड गाइडस' क्या मैं इतना

भी नहीं जानती ?' शमा हँसने लगी। थोड़ा फिज़ँसी समझ लेते हैं। हमारे गजे सर कुछ भी नहीं समझ पाते।'

'अच्छा आज 'मीन, मोड और मीडियन' तैयार कर लेते हैं।' र कापी निकाला।

उस रात न जाने क्या मूड था कि दोनों देर रात तक मीन, मोड होड करते रहे और सवेरे आठ बजे उठे।

कॉलेज में घुसते ही सामने बड़े बाबू का कमरा है। दाएँ हाथ ऊप जाने का जीना। यहीं पानी की बड़ी बड़ी मटकियाँ और लोटे जल व्यवस्थ हेतु रखे हैं। वहीं स्टूल पर एक चपरासन जरूरत से ज्यादा काजल लगा हरदम बैठी रहती है। उसने पानी पी रही शमा को देखा और पीछे आकर कंधे पर हाथ रख दिया।

क्या बात है चाची ?

'बुला रहे हैं। कई बार पूछ लिया।' चपरासन ने प्रिंसीपल आफिस की तरफ उँगली से संकेत किया।

शमा प्रिंसीपल के चेम्बर में घुसी। भाटिया अकेला था। उसने शमा को स्नेह से कुर्सी पर बैठ जाने का इशारा किया और बोला—बधाई हो। रात तो कमाल कर दिया। तुम्हारे पापा ने भी खूब सराहा तुम्हारा प्रयास। उन्होंने कुछ कहा ?'

'जी कुछ नहीं कहा। हालाँकि मैंने उन्हें सारी बात बतादी।'

'दैट्स आल राइट। सवेरे वह आगरा गए न ?'

'पता नहीं। मुझसे तो मिले ही नहीं।'

'मुझे कह रहे थे। वह गए सवेरे। खैर तुम लोग अगली तैयारी करो। शिक्षण तुम्हारा कमाल का है ही। मेरा इरादा है अगर तुम चाहोगी तो इसी कॉलेज में नियुक्ति करवा दूँगा। तुमसी लेक्चरार पाकर कालेज समृद्ध ही होगा। और हाँ, जदी को भी तो मुबारकबाद देना। उसका काम भी अच्छा था—जाओ।'

'शुक्रिया सर !' और चिक उठाकर शमा बाहर निकली तो चपरासन ने पकड़ लिया। 'मिठाई नहीं खिलाम्रोगी ?'

'मगर किस बात की ?' शमा अपने को छुड़ाने लगी तो वह बोली— 'नोटिस बोर्ड तो देखो।

क्या बात है ? कुछ नया ?' शमा नोटिस बोर्ड की तरफ लपकी। वहां भीड़ हो रही थी। बड़ा बाबू पोम्रोन से वहां कलाकार म्रदाकारा शमा की तस्वीरें लगवा रहा था।

हाथों हाथ तैयार करवा ली, कमाल है ?' मुग्ध भाव से मुस्करायी शमा। और गर्व से तन कर उसकी गर्दन ऊपर उठी तो भीड़ ने उसे शुभ-कामनाम्रों से लाद दिया।

दस्तक हुई इकबाल ने उठकर दरवाजा खोला। 'सामने उमदा खड़ी थी।' हो म्राई शमा के घर ? मकान ढूंढने मे कोई दिक्कत तो नहीं हुई !

'बिलकुल नहीं। तुमने पता जो दे दिया था। मैं टम्पो से उसी के सहारे चली गई शास्त्रीनगर। उमदा दरवाजा उढकाकर भीतर म्रा गई। 'म्राज तो दिन मे भी रात जैसी सर्दी है।

'हवा जरा तीखी है म्राज। यह ठण्ड उसी के कारण है। खैर सुनाम्रो तो शमा से क्या क्या बातें कर म्राई हो।' इकबाल ने जलते म्रगारों की म्रगीठी बीवी के सामने रख दी। उमदा तनिक मुस्कराई। म्रौर बोली—

'मैं ज्योंही शमा के दरवाजे मे घुसी कि वह सकपका गई। फिर जब बधाई दी तो वह सँभली। उसने कहा—'म्राप ड्रामे म मिली कामयाबी पर बधाई देने ही म्राई हैं न ?'

'बेशक ! क्या विश्वास नहीं हो रहा ? म्राप तो हमारे यहां मात्र एक बार म्रायी थी बहुत पहले। उसके बाद देखा ही नहीं। फिर मने म्रापके यहां म्राने का इरादा किया पर म्रवसर न मिला। कहीं म्राने जाने के लिए

बहाना भी तो चाहिए। बाकी 'वह' आपके बारे में यदा कदा बताते रहते हैं।'

'तो आज बहाना मिला?' शमा हँस पड़ी।

'हाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम में आपको जो सफलता मिली है। उसकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। उन्होंने भी तारीफों के पुल बांध दिए तो मुझे मुबारकबाद देने के लिए आना पड़ा।'

'मैं आपकी शुक्रगुजार हूँ।' शमा इतना कहकर न जाने क्यों उदास-सी हो गई।

'अच्छा! जैदी नहीं था घर पर?' इकबाल ने सवाल किया।

'नहीं। वह पिक्चर गए बताये।

ठीक इसके बाद?'

'इसके बाद खूब खुलकर बातें हुई। बातों के अंतिम दौर में किन्तु मुझे लगा कि वह परेशानी महसूस कर रही थी। शायद अब वह सांप-छछूंदर वाली स्थिति में जी रही है। सच मानो इकबाल! तुम्हारी थोड़ी-सी आदर्शवादिता ने शमा को गर्त में धकेल दिया है।'

क्या? मैंने? मगर कैसे?' इकबाल, उमदा की इस अप्रत्याशित टिप्पणी पर अचकचा गया था।

'उसने तुम्हारे साथ मानो एक कवि के साथ कवयित्री ने कुछेक पलों का सान्निध्य माँगा था—साथ घूमने, डेटिंग करने और मित्रता का। जिसे तुमने या तुम्हारे कवि ने ठुकरा दिया। परिणामस्वरूप वह दूसरे रास्ते पड़ गई।' यह शमा का नहीं मेरा अपना विचार है।

तुम उसे सहारा दे सकते थे। कोमल और भावुक मन को काश! आघात नहीं लगता। वह तुमसे शादी नहीं फकत साथ चाहती थी। उसे इतना दे पाते तो उसकी। अब तक की पिछली शानदार जिंदगी कदाचित कलुषित न होती। इकबाल! शमा ने मुझे अपने कालेज लाइफ के फोटोज एलबम दिखाए। मैं कह सकती हूँ वह असाधारण युवती है। पर '

मुझे सब मालूम है उमदा।' अंगीठी को हिलाकर अंगारों की राख झाड़ता हुआ इकबाल बोला—'लेकिन वैसा करने में बदनामी होती। तुम्हें भी स देह होता और अकारण परेशानियाँ बढ़ती। फिर पढ़ाई का क्या बनता ?'

'मुझे तो तुम पर विश्वास है। अच्छा रहता हम दोनों इस समस्या पर विचार विमर्श कर लेते। और शमा को प्रेम देते तो मेरा ख्याल है वह रास्ता नहीं भूलती। ' उमदा रुकी। उसने विचारों में खोए इकबाल को घूरा और आगे कहा—

'जानते हो, उसकी अपनी माँ भी नहीं। कोई भाई बहिन भी नहीं। बाप है जो अपनेमें व्यस्त और बेटीसे दूर रह रहा है। ऐसे में लगता है—शमा कहीं न कहीं से अतृप्त है और अतृप्त मन स्नेह व सहानुभूति पाकर यथाथ से दूर हट जाया करते हैं। इकबाल! मैं तो यही कहूगी कि शमा बेकसूर है और दया की पात्र भी।'

उमदा ने अंगीठी पर चाय का पानी चढ़ाया। चाय पीनी पड़ेगी। तभी भीतर की कपकपी दूर होगी।'

शमा ने चाय वाय नहीं पिलाई ?'

'क्यों नहीं। उसने तो नाश्ता करवाया। काफी पिलाई। वह एक सलीकेदार मेहमान नवाज खातून है—जनाब ?'

'हूँ और उसकी कविताएँ सुनी ?' इकबाल ने व्यग्य कसा।

नहीं। मैंने फरमाइश ही नहीं की। फिर माहौल भी वैसा नहीं था।' उमदा ने कह दिया।

चाय का पानी उबलता रहा। इकबाल और उम्दा चुप बैठे उसे देखते रहे। इसके बाद चाय बन गई। प्यालों में डाली गई। और दो प्याले दो हाथों में भी आ गए। लेकिन दोनों मियां बीवी अब भी चुप थे और शमा व जैदी के बारे में सोच रहे थे।

'क्या 'मुता' के बाद शमा और जैदी शादी कर लेंगे ?' उमदा ने अचानक खामोशी भंग करदी। तो इकबाल प्रत्युत्तर में बोला—

'हरगिज नहीं।'

'क्यों ?' उमदा ने इकबाल की तरफ दृष्टि घुमाई।

'क्योंकि दोनों के मानसिक स्तर भिन्न हैं। क्योंकि दोनों की रुचियों में भी भिन्नता है, उनका जीवन भी भिन्न है—शमा कुँआरी तो जैदी शादी शुदा है, क्योंकि शमा का परिवार उदार और जैदी का संकीर्ण विचारों वाला है। और सबसे बड़ा—क्योंकि है—उनका दो भिन्न सम्प्रदायों से होना। तुम्हें पहले भी कई बार बताया था मैंने कि शमा, सुन्नी मुसलमान है और जैदी शिया।'

'तो क्या हुआ ? हैं तो दोनों मुस्लिम ही।

'बेशक हैं मेरी मलका। पर हम मुसलमानों की यही बड़ी कमजोरी है कि बाहर भाई चारे का ढिंढोरा पीटने वाले हम—भीतर से सर्वथा छिन्न-भिन्न हैं। शिया और सुन्नी दो ऐसे सम्प्रदाय हैं जो जबसे जुदा हुए हैं तभी से आज तक जुदा ही चल रहे हैं। दोनों ने एक अल्लाह को मानते हुए अपने ढङ्ग से जीवन व्यवस्था बनाई है और दोनों एक दूसरे के दुश्मन से हैं।'

'तब शमा और जैदी का सम्पर्क कैसे हो गया ?'

'होना था इसलिए हो गया। शिया सम्प्रदाय में 'मुता' है अत जैदी ने कर लिया। उसकी जगह कोई सुन्नी होता तो कतई नहीं कर पाता।'

मगर शमा तो सुन्नी है।' उमदा हैरान हो रही थी।

'स्त्री वर्ग के लिए पाबंदी नहीं शिया पुरुष के लिए शिया स्त्री के अलावा सुन्नी भी जायज हैं।'

'तब तो मामला गडबडाएगा ही। उमदा ने चाय की खाली प्यालियाँ उठाली और उन्हें धोने के लिए वाश बेसिन पर चली गई। इकबाल भी तब उठा। 'आज सनडे मूड है खाना तो दोपहर को ही बनेगा ' इकबाल ने वार्ता का रुख मोड़ा।

कहो तो जल्दी बनालूँ। अभी तो ग्यारह बजे हैं। फिर मुझे तो

बिलकुल भूख नहीं। हम खाना दो बजे ही खायेंगे।'

इकबाल हँस पडा—'बडा नेक इरादा है। पहले आ जाती तो नौ वाला शो अपन भी देख आते।'

'आती कैसे? नौ बजे तो मैं शमा के यहाँ पहुँची थी। एक-डेढ घण्टा वहाँ रुकी बस।

'जाने दो। अब तो तीन वाला शो ही देखेंगे।'

'पर जरूरी है क्या? कोस का मामला है। हम खर्च कम करें तो ठीक रहेगा।' उमदा ने व्यावहारिक बात कही।

'भई, इस महीने एक भी पिक्चर देखी हो तो कसम ले लो। पहले भी वह जैदी ने दिखाई थी। आज तो जरूर चलेंगे। मैं तब तक थोडा पढ लेता हूँ।'

इकबाल किताब लेकर कबल मे घुस गया। थोडी देर मे उमदा भी पत्रिका उठाकर वहा आ गई। उसने सामने वाले पलग पर पालथी मारी और इकबाल को टोका। जब सनडे है तो किताब बद भी रखो आज।

फिर क्या करूँ?' सद मौसम मे शरारत से मुस्कराया इकबाल।

करना क्या है। एक बात बताओ। उमदा ने ठेंगा दिखाया।

मैं तुम्हारा अँगूठा तोड मरोड दूँगा। खैर पूछो क्या बात है?

गोहर ने सॉयकोलोजी की किताब बन्द करदी और प्यार से बीबी की तरफ देखा।

'यह शिया सुन्नी का झगडा है—कबसे? क्यो है इसमे यह बुराई? कारण बता सकते हो?'

'तुम्हारा सवाल गहरा है, फिर भी कुछ प्राथमिक कारण मैं बता दूँ।'

'बताइये।' उमदा, इकबाल के करीब खिसक आई तो वह उसके बालो से शायराना ढङ्ग से खेलने लगा। फिर अपनी बीबी को प्यार करके

बोला—'हजरत मोहम्मद साहब के इन्तकाल के बाद खलीफा पद के लिए झगड़ा उठा। कुछ लोग हजरत अली को उत्तराधिकारी मान रहे थे जबकि बहुतों ने हजरत अबूबक्र का समर्थन किया।

अली के पक्षधर 'शिया' मुसलमानों का कहना था कि हजरत मोहम्मद साहब ने अली को ही उत्तराधिकारी माना था। अली उनके चचेरे भाई एवं दामाद थे। उनकी एकमात्र जीवित सन्तान बेटी 'फातमा' उन्हीं को ब्याही थी। अतः खलीफा अली को ही बनाया जाए क्योंकि वह मोहम्मद साहब के भी सांसारिक व आध्यात्मिक उत्तराधिकारी होते हैं।

लेकिन दूसरा पक्ष वंशानुगत उत्तराधिकार को नहीं मान रहा था। वह 'आयशा' के प्रभाव में था। आयशा हजरत मोहम्मद साहब की चहेती जवान बीवी थी। उसने अपने बाप हजरत 'अबूबक्र' को खलीफा पद के लिए चुनवा लिया।

शिया लोगों के विपरीत सुन्नियों का यह दावा था कि, खलीफा का पद धार्मिक और वंशानुगत न होकर लोकतान्त्रिक है। इसलिए इस समस्या का निराकरण चुनाव द्वारा होना चाहिए।

हजरत मोहम्मद साहब के तीन प्रथम साथी (शिष्य) क्रमशः अबूबक्र, 632 ई०, उमर, 634 ई० और उस्मान 644 ई० में हुए।'

'इसके बाद ?' उमदा कम्बल में से निकलकर उठ बैठी।

इसके बाद की राजनीति बड़ी गन्दी हो गई। मुसलमान अपने आदर्शों से हटने लगे और उस्मान का 656 ई० में कत्ल हो गया।'

'तौबा ! अल्लाह वालों का भी कत्ल ?'

'राजनीति का दूसरा नाम अनीति है—उमदा।'

'खैर, आगे कहो। उमदा बेचारी अल्ला अल्ला करने लगी थी।

'इस दुर्घटना के बाद हजरत अली को उत्तराधिकार यानी खलीफा पद मिला। पर तब भी उनका विपक्षियों ने घोर विरोध किया। 'आयशा

अली के विरुद्ध मोर्चा लगा रही थी और झगडा चलता ही रहा। हार-जीत किसी की नहीं दिख रही थी कि फिर दुर्घटना हो गई।'

'इस बार क्या हुआ ?'

'कूफा की मसजिद मे एक धर्मान्ध मुसलमान ने हजरत अली की हत्या करदी। इसके बाद अली के पुत्र हसन ने अपना अधिकार एक बडी रकम लेकर दमिश्क के माविया को बेच दिया। हसन के बाद हुसैन ने इसका विरोध किया। परिणाम स्वरूप 'करबला' का इतिहास प्रसिद्ध युद्ध लडा गया और हुसैन को बेरहमी से मारा गया। इस युद्ध ने शिया और सुन्नी मुसलमानो के मध्य कभी न पटने वाली खाई खोददी जो आज भी उतनी ही गहरी बनी हुई है।'

इकबाल यह कहकर चुप हो गया। उमदा भी खामोश थी वह अनावश्यक रूप से पनपे इस निराधार विरोध के बारे मे विचार कर रही थी।

'तब सत्ता लोभ के कारण यह विघटन जन्मा। पर अब वही द्वेष-भाव क्यो है ? न वह सत्ता रही, न वे परिस्थितियाँ, न वे लोग ही रहे। मैं चाहती हूँ कि अब हम सभी मुसलमानो को एक हो जाना चाहिए। विरोध मे क्या रखा है ?

'विरोध मे कुछ नही रखा है। पर स्वार्थ इतनी बडी बाधा है कि कोई कल्याणकारी कदम सफल नही होता।'

हमारे मुस्लिम नेता विश्व-स्तर पर या राष्ट्र स्तर पर कोशिश करे तो कुछ फल नही निकल सकता ?'

'नेताओ ने कही कुछ किया है ? वे तो चाहते हैं कि यह खाई, कुआँ बन जाए। हम परस्पर लडेंगे झगडेंगे नही तो वे बेचारे क्या खायेंगे। उमदा, अब यह काम आसान नहीं।'

'क्यो आसान नही ?'

'हजार बारह सौ सालो पहले—जुदा हुए दो भिन्न रास्तो ने भिन्न

अपनी प्रस्थाएँ रीति रिवाज और मूल्य धारण कर लिए अत अब ये दो सम्प्रदाय, 'शिया और सुन्नी अपना शब्दों तक सीमित न होकर सीमा हीन विस्तार तक पनप चुके हैं। दोनों को एक होने के लिए अपनी कुछ मान्यताएँ, अपने विचार त्यागने पड़ते हैं। जो दोनों ही को शायद स्वीकार नहीं।'

'तब तो बहुत ही बुरी चाल रही है यह।' उमदा ने निश्वास छोड़ा, वह कुछ उदास सी हो गई।

'हम नौजवान पढ़े लिखे इस ओर कुछ अच्छे काम जरूर कर सकते हैं। पर धर्मान्धता, अन्धविश्वास और हठधर्मिता हम पंगु गूँगा और कायर बनाए हुए है। तुम देखना—शमा को जैदी कहीं का न छोड़ेगा। अभी वह भी 'हम एक हैं' की बात कह रहा है पर बाद मे जरूर मुकरेगा। तब सुन्नी क्या सोचेंगे? यही न कि एक शिया ने सुन्नी लड़की की जिन्दगी तबाह करदी "और यो हमारी चूकें इस खाई को पाटने की जगह गहरी ही करेंगी।'

'जाने दो छोड़ो। उमदा ने सिर हिलाया। मैं खाना तैयार करती हूँ। फिर सिनमा चलेंगे।' उमदा वहाँ से हट गई। उसका मन खट्टा हो गया।

प्रिंसीपल के कार्यालय मे टीचर्स कॉलेज यूनियन की बैठक चल रही थी। अध्यक्ष रघुवीर अपने सदस्यो सहित वहा बैठा हुआ था। यह बैठक अगले सप्ताह साहित्यिक प्रतियोगिता को लेकर भाटिया ने बुलाई थी। लेकिन सदस्य कालेज की अव्यवस्था को लेकर बहस कर बैठे।

स्वास्थ्य सचिव प्यारेलाल की शिकायत थी कि कालेज मे ढङ्ग का एक भी यूरिनल नही है। लेट्रीन और यूरिनल्स की सफाई वक्त पर न होने के कारण दुर्गन्ध उड़ती रहती है। उधर होस्टल म बिजली कम आती है। पानी नही रहता और गन्दगी दीर्घाओ म फैली रहती है। लेट्रीन म पानी है ही नही। पाइप टूटे हुए हैं जिनकी मरम्मत नही करायी गयी ह—कोई ध्यान नहीं देता।

गगाराम ने भी सहमति प्रकट करते हुए आगे कहा—'बिजली का बिल खूब ज्यादा आता ह। एक कमरे मे तीन अध्यापक रह रह है एक बल्ब

जलता है और आश्चर्य है तीनो से बिल के पैसे वसूले जाते हैं। न, पखा न रेडियो, न इस्त्री, सिर्फ एक बल्ब के तीस रुपये यानी प्रति प्रशिक्षणार्थी दस रुपये पर मथ। क्या कभी इस स्थिति पर यूनियन ने ध्यान दिया ?'

'इधर कॉलेज मे होट एण्ड कोल्ड चाज किस बात के लिए है? यानी सर्दी मे ठण्डा और गर्मी मे गम। क्या इसीलिए ?

तब समाचार सचिव ने शिकायत की। 'प्रशिक्षणार्थियो के पत्र कहा टाँगें, लगाए जाते हैं? लेटर बोड बीस वष पुराना है जिस पर पत्र लगाया कि उडकर नीचे गैलेरी मे आ गिरा। अध्यापिकाओ के पत्र बडे बाबू के कमरे मे कभी कभार दबे मिल जाते हैं। यह कैसी व्यवस्था व सुरक्षा है ?'

यातायात सचिव चुप क्यो रहता—'महोदय, कालेज मे यह अजीब व्यवस्था है कि टूर पर न जाने वाला गरीब अध्यापको स भी टूर का खर्चा वसूल किया जाता है। साथ ही उनके पाँच अक भी काट लिए जाते ह। यह गरीबी की सजा है क्या ?

यहाँ चाट्स, माडल्स के नाम पर कोई काय न करवाकर काफी रुपये ऐंठ लिए जाते है। पर कोई बोलता नही। जो बोले उसे फेल करने या अक काट लिए जाने की धमकी दी जाती है।'

अब साहित्य सचिव इकबाल भी बोला—'महोदय, रीडिंग रूम मे जितनी पत्र पत्रिकाएँ आती हैं उनमे एक भी ऐसी नही जो शिक्षा या शिक्षण सम्बन्धी सामग्री वाली हो—इस कालेज मे यह उदासीनता आश्चयजनक व खेदजनक है। साथ ही पत्रिका शुल्क लेकर पत्रिका का प्रकाशन संस्था नही करती। यह कौनसी विवशता है ?' इकबाल न हाथ नचाया तो सभी हँस पड़े।

प्रिंसीपल भाटिया भी मुस्कराया। वह अब तक चुप था। अध्यक्ष रघुवीर न और जनरल सेक्रेटरी शमा ने उसे सवालिया निगाहो से देखा तो भाटिया बोला—'पुरोहित जी आप यहाँ यूनियन के परामशक हैं। कुछ कहिए न।'

'मैं क्या कहूँ सर ! आप ही शका समाधान कीजिएगा।'

'तब कुर्सी पर पहलू बदल कर प्रिंसीपल बोला

'देखो बात यह है कि यह कॉलेज प्रोफेशनल है। प्राइवट सस्थान। अत गहराई म जाकर अधिकारो की बात करके आपको कुछ नही मिलना। यहाँ अपनी अलग व्यवस्था है वही रहेगी। हाँ, होस्टल की व्यवस्था मे जरूर सुधार किया जाएगा। होस्टल अब दुबारा चालू किया गया है। वीमेन होस्टल मे तो अभी भी किवाड बन रहे हैं। मरम्मत भी हो रही है। हम विश्वविद्यालय वालो की हडताल ने काफी नुक्सान पहुँचाया। खैर आशावान रहो सब शीघ्र ठीक हो जाएगा।

और यहाँ कालेज मे तीन चार दिनो मे हो मैं यूरिनल वगरह ठीक करवा दूँगा। पानी बहने वाले पाइप भी लग जायग। तुम्हारा लेटर बोड भी नया बन जाएगा। शेष चक्कर और नेतागिरी छोडो भई। हाँ, मुख्य बात पर आओ।

'मुख्य ऐजेण्डा क्या है महोदय।' रघुबीर शात रहा।

सक्रेटरी स पूछा। भाटिया हँसा तो शमा फाईल लेकर खडी हुई। उसने साहित्यिक प्रतियोगिताओ क बारे म रूपरेखा बताई और यह सूचना भी दी कि हमारे यहाँ राजस्थान के सभी शिक्षक महाविद्यालयो यानी— सरदार शहर गुलाब पुरा, डवो', उदयपुर, जयपुर आदि स्थानो स प्रतियोगी आ रहे है। हम मेजबानों को अब खूब तयारी करनी होगी। आज हमे प्रतियोगिता उसका स्वरूप आदि पर निणय कर लेना है। कृपया आप अपने सुझाव प्रेषित करें।' इतना कहकर शमा बठ गई।

तब सदस्यो म विचार विमर्श शुरू हुआ। पत्रवाचन कविता पाठ, वाद विवाद विषयो का चयन होन लगा। सबसे अहम विषय वाद विवाद के लिए शीषक खोजे गए। वतमान समस्याओ पर घिसे पिटे नाम प्रिंसीपल को नही भाए। उसने कहा— कोई ताजा अनछुआ विषय बताओ ?'

तब खेल सचिव परवेज बोला— सर, मुक्त विवाह वतमान नारी के हित मे है या नही। यानी इस पर कोई टापिक रख लिया जाए।

परवेज के बोलते ही सबने घूमकर सेक्रेटरी की ओर देखा। शमा झेंपी नहीं। वह चुप मंद मंद मुस्कराती तटस्थ भाव से बैठी रही। लेकिन इकबाल खड़ा हो गया।

'इस विषय पर बहस उचित नहीं होगी सर! अव्वल तो यह सब्जेक्ट धर्म विशेष से सम्बंधित है। दोयम इस पर वक्ता अधिक नहीं होंगे।'

'ठीक कहते हो। यह उचित नहीं रहेगा। दूसरा विषय लाओ।' फिर बड़ी बहस के बाद 'दहेज दानव' से सम्बन्धित विषय तय रखा गया।

इसके बाद अनुमानित व्यय पर बहस होकर एक मुश्त रकम के लिए कोषाध्यक्ष को अनुमति दे दी गई। जब सब विषय प्रतियोगिताएँ तय हो चुकी तो इस महाविद्यालय की स्वस्थ परम्परा के अनुसार यूनियन फण्ड से जोरदार नाश्ते का आयोजन था। भाटिया खाने पीने के मामले में कभी कंजूसी नहीं बरतता। निजी संस्थानों में यही तो मजे हैं।

चमचम, रसगुल्ले, गुलाब जामुन, रस मलाई और समोसा के साथ गम पद जब मेजों पर आए तो वह गर्म बहस, शिक्वे सभी ठण्डे पड़ गए। जब मीटिंग समाप्त हुई तो सभी सदस्य हँसते मुस्कराते बाहर निकले थे।

जदी कॉरीडोर में बैठा था। शमा फाईल्स लिए यूनियन रूम की ओर जाती हुई रुक गई। 'तुम नहीं आए मीटिंग में?'

'नहीं। दिखाओ क्या कार्यक्रम तय किया है?'

'बहुत से। पर घबराओ नहीं। 'मुता' पर बहस नहीं होगी। तैयारी में जुट जाओ। कड़ा मुकाबला होगा।' और शमा वहाँ से यूनियन रूम की ओर खिसक गई।

इसी बीच एक बार फिर जोधपुर विश्वविद्यालय में कुलपति को लेकर हंगामा मचा। राजपूत दल पक्ष में तो जाट-छात्र विपक्ष में डटे थे। विश्वविद्यालय के एक विभाग को आग लगा दी गई और सोजती गेट पर तोड़-फोड़ करते छात्रों पर पुलिस को लाठी चार्ज करना पड़ा। किंतु बी० एड०

'नहीं बुरा क्या किन्तु ! वह सहज थे । चेहरे पर कोई तनाव न था उनके । चुप थे मगर चुप्पी म क्रूरता तो न थी ।

'मासूम सी चुप्पी भारी आघात के कारण भी होती है ।'

'हैं ?' शमा हैरान होकर वफा का मुँह तकने लगी । फिर दृढ़ता से बोली—'तुम बी० ए० और मैं एम० ए० और फस्ट क्लास । नसीहत का हक मुझे है न कि तुम्हें । खुदा के लिए डरामा नहीं मुझे ।' और दोनो सहेलियाँ कालेज की छत पर जा बैठी । वहाँ एकान्त था—दोनो के लिए ।

शमा और वफा फिर बातें करने लगी । 'तुम्हारे पास डिग्री है और मेरे पास अनुभव । ले उम्र म तुमसे बड़ी हूँ न ?'

'उम्र मे तुम बड़ी हो ! कितने साल ?' शमा चकराई ।

'मुझे यह सत्ताइसवाँ है ।'

'म बाईस की हूँ । खर तब वफा शादी क्यो नही की अब तक ?'

'शादी करना या होना आज वश की बात नहीं । अनुभव बता रहे हैं कि मुसलिम समाज म लड़की का स्थान महत्वपूर्ण नहीं ।

'कुछ बताएगी या यो ही

'बता दूँगी । बहुत कुछ देख लिया है शमा मने । तभी तो तुम्हारे बारे म चिन्ता करती हूँ । वफा की आँखें डबडबाने लगी थी । शायद वह अपने अतीत म उतर गई थी ।

'शमा ला अपना हाथ दे मेरे हाथ मे ।

'लो यह रहा ।' शमा न अपनी कलाई वफा को थमा दी । तो वह अपना राज जाहिर करने लगी । वफा ने गहरा सास छोड़ा और फिर बोलना शुरू किया—

'वे दिन भटक जाने के ही थे ! खूब फिल्मे देखती और फुटपाथी साहित्य पढ़ती । दिल्ली म दिल्लगी के अनेक साधन थे —शमा । तब मुझे सब कुछ स्वप्न लोक सा मधुर मादक लगता । कालेज मे कीटस साहित्य का प्रेमी रऊफ मेरी जि दगी मे बड़े सज धज के साथ आया ।

उसने एक दिन अचानक पूछा—'जब तुम्हारा मन मेरा है तो यह तन किसका है ?'

'वह अभी सुरक्षित है।' मैंने हँसी में टालना चाहा।

'मगर किसके लिए ? प्यार मुझसे और तन और के लिए।'

'नहीं रऊफ। और कोई नहीं है।'

लेकिन शमा, वह हमेशा एकान्त मिलते ही कुरेदता—अब मैं अपने ईमान की सत्यता का सबूत क्या देती ? लिहाजा एक दिन वफा और प्यार की सचाई साबित करने के लिए तुम्हारी यह वफा खाई में उतर ही गई।

वह रऊफ अमीर बाप का बेटा था। मैं मध्यम परिवार की। और जब मुझे पता लगा कि उसकी जिन्दगी का अधिकार तो किसी अन्य को है तो मेरे होश फाख्ता हो गए। क्योंकि मैं माँ बनने वाली हो गई थी। उसे बताया तो वह बौखलाया। जानती हो।

क्या कहा रऊफ ने ?' वफा ने इधर-उधर देखा फिर उदास स्वर में बोली—'रऊफ ने कहा, बच्चा मेरा नहीं हो सकता ?

'मगर मैं तो सिर्फ तुम्हारी ही हूँ।'

'सिर्फ मेरी ही ! कोई जरूरी नहीं। जो लड़की घर वालों से बेवफाई करे, वह प्रेमी को धोखा नहीं दे सकती ? वफा, इम्तहान में नकल करने का आदी छात्र एक परचे में नकल करता है, यह किसने कहा ?' और [illegible] बड़ी देर तक ढीठता से हँसता रहा।

'खैर मैंने जिन्दगी रूपी इम्तहान में मर्यादा [illegible] का अस्मत वाला हिस्सा यों खुद ही चबा डाला।' वह सुबकने लगी तो शमा भी कातर हो उठी।

कुछ देर बाद ज्वार उतरा तो शमा ने [illegible] है अभी तुम्हारे साथ ?'

'नहीं बहिन ! यह तो मुस्कान थी। फिर मैं संभली। [illegible]

[illegible]

करवाया, बदनामी हुई, घर वालों ने दुत्कार दिया और ऐसे में मुझे कौन अपनाता ? लिहाजा रिश्ते के चचा के सहारे, यह बी० एड० कर रही हूँ। अल्ला चाहेगा तो मास्टरनी बनकर पश्चाताप की अवधि काटूँगी। शायद इस दौरान कोई मिल भी जाएगा'

इसके बाद देर तक दोनों चुप बैठी फर्श पर चित्रांकन करती रहीं। शमा ने सोचा वफा क्या चाहती है मुझसे ?

'लेकिन वफा ! मेरा सरवर जैदी, तुम्हारे रऊफ जैसा नहीं है।'

'खुदा करे न हो। पर हो गया तो?'

'तो भी पेट में पल रही संतान 'मुता' के अनुसार 'औरस' है।'

'जायज कहने से ही संतान जायज नहीं हो जाती—मेरी शमी! वह यह कह देगा मैं इस बच्चे का बाप हूँ मुझे दे दो बच्चा तो क्या तुम दे दोगी? वह संतान तुम्हें सौंप कर कुछ रुपये दे देगा। फिर तुम क्या करोगी? नदीम उसे स्वीकार लेगा ? सोचो, स्कूल में जब अपने 'मुताई बच्चे' को दाखिला दिलाओगी तो 'फादर्स नेम' का कालम कैसे भरोगी ? बहुत-सी व्यावहारिक कठिनाइयाँ आयेंगी शमा ! अतः मेरा कहा मानो 'मुता' को अव्यावहारिक मानकर अब भी पीछा छुड़ालो।'

शमा चुप होकर वफा का मुँह देखने लगी। उसका तर्क ठीक था। अब ? शमा परेशान होकर बहुत कुछ सोचने लगी। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था और पेशानी पर पसीना उभर आया था।

'वफा, मैं जैदी से आते ही बात करूंगी।' शमा सँभली। 'मुझे प्यास लग गई। नीचे चलें ?'

'जी तो मेरा भी घुट रहा है। चलो चलते हैं।' दोनों ने किताबें बटोरी और सीढ़ियों पर आ गई।' जैदी कहाँ गया हुआ है ?'

'वह अपने घर गया है। मेरे पापा तो आकर गए। उसके यहाँ से कोई आया नहीं जबकि प्रिंसीपल की शिकायत गई हुई है।'

'अच्छा, और तुम्हारा मगेतर कहाँ रहता है ?

'क्यो पूछ रही हो ?' बावजूद परेशानी के शमा मुस्कराई ।

यो ही । वफा ने जीना उतरते हुए शमा के कंधे पर हाथ रख दिया ।

'वह विदेश मे है । यहाँ एम० बी० बी० एस० करके कुवैत चला गया । वहा खूब पैसे मारता है । वैसे है भी कजूस ग्रौर लालची ।'

मुबारक हो ।' वफा हँसी 'जैसी तुम वैसा ही तुम्हारा वह ।'

'क्या जवाब दूँ ? नीचे आ गई खैर फिर कभी ।'

कभी होस्टल आओ न ।'

आऊँगी ।' ग्रौर वे दोनो चुपचाप पानी पीने लगी थी ।

अगले दिन जब शमा लायब्रेरी मे बैठी सन्दर्भ पुस्तकें देख रही थी तो स्कूटर की चाबियाँ उछालता हुआ सरवर जैदी आया ग्रौर सामने वाली कुर्सी खींचकर बैठ गया—

'क्या पढ रही हो ?

'अरे ! कब आ गए तुम ?' शमा ने प्रसन्न होकर ऊपर देखा ।

'बस अभी तो आ रहा हूँ । मकान की चाबी ?'

'यह रही । लो क्या अपने घर वालो से बात हुई ?' शमा ने किताब बन्द करदी ग्रौर उत्सुकता से उसे ताका ।

घर वालो को आश्वस्त कर आया हूँ । हाँ तुमने अभी तक चार्ट्स मॉडल्स जमा नही कराये ? जैदी ने बात बदल दी ।

'नही इरादा नही था । कॉलेज मे बडी धाँधली है । पर अब तो लगता है जमा कराने ही होगे ।'

नही मैं तुम्हारे एवजी रुपये जमा करा आया हूँ अभी । राठी बाबू मिल गया तो मैंने इस हाथ रुपये दिए ग्रौर उस हाथ रसीद ले ली ।' जैदी अकारण ही हँस रहा था ।

लेकिन शमा का ध्यान दूसरी बात मे था । उसे चार्ट मॉडल की नहीं, अपनी चिंता हो रही थी अब ? जैदी मकान की ताली लेकर चला गया था । पर वह सिर थामे वहीं बैठी थी । अब क्या होगा ? तभी किसी ने पीछे से आकर कंधे पर होले से हाथ धरा—

'तुम्हारी रजिस्ट्री है शमा !'

'क्या ?' शमा चौंक कर खड़ी हो गई। उसकी तन्द्रा टूट चुकी थी। कुलसूम मुस्कराई। 'ग्राफिस के बाहर पोस्टमैन नीचे इंतजार कर रहा है।'

'ग्रच्छा !' और शमा किताबों को वहीं छोड़कर नीचे लपकी, कुलसूम उसके पीछे-पीछे आ रही थी।

रजिस्टर्ड पत्र उसके पापा का था। पर वहीं खोलने की हिम्मत न हुई तो वह हमेशा की भाँति कॉलेज की छत पर चली गई। अक्सर जब शमा परेशान होती या उसे तन्हाई की जरूरत होती तो वह कॉलेज की छत को ही चुनती थी। उसने कांपते हाथों, धड़कते दिल से लिफाफा खोला और खत पढ़ने लगी—

शमा बेटी,

सलामत रहो !

उस दिन मैं तुमसे बगैर मिले ही वापस लौट ग्राया। इसकी एक वजह थी। तब तुम्हारे वहाँ कम्पीटिशन चल रहे थे और मैं ऐसे में तुम्हारा मूड बिगाड़ने के पक्ष में न था। कुछ कहता या बहस करता तो तुम उखड़ सकती थीं और उसका तुम्हारे अभिनय पर बुरा असर पड़ता। लेकिन एक जिम्मेदार बाप को जो कहना होता है वह मुझे भी कह देना चाहिए अपनी बिटिया को !

बहस तो मैं अब भी नहीं चाहता। बालिग औलाद से से माथा-पच्ची ठीक भी नहीं होती क्योंकि बालिग औलाद अपने को कमतर मानने की ग्रादी नहीं होती। उनका मानस अजीब सा होता है।

बिना पूछे 'किसी काम को करने का स्पष्ट मतलब यही है कि कर्त्ता स्वयं को समझदार मान चुका है। तुम भी 'समझदार हो गई लगती हो, शमा !

लेकिन तुमने जो मुता किया वह हमारे सिद्धान्तों व ग्रादर्शों के प्रतिकूल ही नहीं अवैज्ञानिक और अ व्यावहारिक भी है। फिर हम सुन्नी हैं।

'मुता' शिया लोगो मे हो सकता है—हमारे मे नहीं। बल्कि शिया लोग भी इसे अकसर तरजीह नही देते। यह व्यवस्था चन्द अय्याश नवाबों ने स्वार्थ-वश बरकरार रखी हुई है क्योकि इसमे बीबियो की सख्या पर कोई पाबन्दी नही होती।

फिर मैंने तुम्हे जोधपुर बी० एड० करने के लिए छोडा। 'मुता' करने के लिए नही। एक दिन देखोगी कि एक खुशनुमा जिन्दगी मे तुमने कीचड भर लिया है।

नदीम आया हुआ है। उसे बताना जरूरी था क्यो भेद बाद मे खुलता ही और तब होता—तलाक। सो मैंने उसे सब कुछ बता दिया। इस पर नदीम बोला—'मुझे ऐसी शमा कतई मजूर नही होगी।

मैं क्या करूँ शमा! मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा। भला तुम यह कदम कैसे उठा पाई? बहुत सोचा है मैंने। न हमारा मोहल्ला दूषित था न तेरी माँ, न मैं, न तुम्हारे खाला खालू और न ही पडोसी। और तो और तुम्हारे अध्यापक और कॉलेज का माहौल भी बुरा न था। मैंने भी तुम्हें हमेशा अच्छे सस्कार दिए पर यह कदम किस बात के परिणामस्वरूप हुई मैं नही जान पाया। 'मुता' जैसी मजबूरी क्या थी? जवाब है?

तुम एम० ए० हो। क्या कभी सोचा—मुस्लिम समाज मे सघषरत अन्य लडकियो पर तुम्हारे इस कदम से कैसा प्रभाव पडेगा? हजारो में एकआध द्वारा किया गया 'गलत' काम उदाहरण बनकर सच्ची लगन वालियो की राह का रोडा बन जाया करता है। इस प्रकार तुमने अपना ही नहीं अन्य मुस्लिम लडकियो का जो पुरानी दकियानूस पीढी से सघष कर आगे बढने हेतु जूझ रही हैं का भी अहित किया है।

खैर, अब क्या है? जो होना था वह हो चुका। किन्तु आगे के लिए तुमने क्या सोचा है? लिखना। सच मानो शमा कि शिया परिवार सुन्नी को हरगिज नही अपना सकता! हाँ अगर 'आगे के लिए' तुम्हारा जैदी तैयार है तो मुझे शिया लोगो से रिश्ता करने मे हिचक न होगी। तुम्हारा

यह 'मुता' कब तक है ? क्या एनुअल एक्ज़ाम तक ? फिर क्या करोगी ? असली मुद्दे पर कभी जैदी से बात की ? नहीं की तो आज ही करके देख लेना। फिर खुद जान सकोगी कि तुम्हारा निर्णय ठीक था या नहीं।

शमा ! आज तुम्हारी माँ होती तो मैं उसे दोष देता कि अपनी लाडली को बिगाड़ दिया, तुमने ? मगर अब ? अब ऐसा झटका लगा है कि मैं तुम्हारे कारण बीस साल पहले ही बूढ़ा हो गया हूँ। खैर बुरा मत मानना। मेरा प्लेन तैयार खड़ा है और मैं उड़ान पर जा रहा हूँ। -

खुदा हाफिज।

—तुम्हारा वालिद—जुबेर,

बाप का खत पढ़कर शमा ने उसे हथेलियों में भीच लिया और रो पड़ी। 'मैं क्या करूँ पापा ! मुझे मजहबी व्यवस्था ने ठग लिया।' और अब शमा की आँखों में वफा का रुऽक तैरने लगा।

वह देर तक घुटनों में सिर छिपाए रोती रही। उसे कानपुर स्थित अपना मकान, मोहल्ला, अड़ोस पड़ोस मृत्यु शैय्या पर पड़ी—अम्मी सलमा खाला याद आए। बाप का स्नेहसिक्त निर्विकार चेहरा आँखों के आगे घूमने लगा।

सब कुछ इतना पाकीजा इतना उजला कि शमा का अपना वर्तमान उसके आगे टिक नहीं पाया। एक तरफ उजले उजाले तो दूसरी तरफ अंधड भरी अँधेरी रात थी और अब तो उसकी रुलाई गहरा कर और जोर से फूट पड़ी। शमा की हिचकियाँ बँध गई थी।

अन्त में मन की मैल धुली तो संयत होकर वह उठी और अपनी किताबें लेने लायब्रेरी की तरफ मरे मरे कदमों से गई। वहाँ खीवराज लायब्रेरी बन्द कर रहा था। 'खीवराज ठहरो ! मेरी पुस्तकें हैं अन्दर। अभी ले लेती हूँ मैं।

शमा अन्दर गई और बिखरी किताबें सहेज रही थी कि एकाएक

उसके हाथ रुक गए। सॉइकोलोजी की किताब के प्रथम पृष्ठ पर लिखा था। 'मुताई बीबी'।

'यह किसने लिखा खीवराज?' शमा क्रोधित हो उठी।

'मुझे नही मालूम। किसने क्या लिखा है। मैं तो गेट पर बैठता हूँ।' बेचारा खीवराज अचकचाया। बात क्या हुई वह नही समझा था। भड़की शमा मन मसोस कर रह गई। उसने दूसरी किताबो के पृष्ठ भी उलटे पुलटे और फिर नीचे आ गई। उसका चेहरा उतरा हुआ था।

कैंटीन वाले ने उम्मीद से गुजर रही शमा का देखा। पर शमा तो काफी पीने के मूड मे कहा थी? उसने गैलेरी मे भी किसी की तरफ नही देखा। हाँ नोटिस बोड के पास जरूर रुकी थी वह।

और जब शमा बाहर निकली तो वहा जैमी का भी पता नही लगा। क्या घर से स्कूटर लेकर मुझे लिवाने नही आया?' वह मन ही मन भुन-भुनाई। फिर उम्मेद जनाना अस्पताल को घूरती हुई सिवाची गेट से शनिश्चर थान बस स्टैंड की तरफ बढ़ गई। वह वहाँ से शास्त्रीनगर जाने वाली सिटी बस पकड़ना चाहती थी।

हनुवत स्कूल के पास उतर कर शमा अपने मकान की ओर बढी। आज उसकी गदन झुकी हुई थी और चाल मे भी नित्य वाली चपलता नही थी। वह सोच रही थी कि पापा की नाराजगी वाजिब है। जिसे अब भूल सुधार कर वह खुशी मे नही तो शात जरूर कर देगी। जैदी मान ही जाएगा। फिर नदीम नही तो जैमी ही सही दूसरा विकल्प है भी तो नही। 'मुता' की भूल स्थायी शादी ही सुधार सकती है और जब वह मकान के ऐन करीब आ गई तो गर्दन उठाई।

यह तो भीतर से बन्द है। उसने बन्द किवाड धकेले पर वे खुले नही। शमा को आश्चर्य हुआ। बात क्या है? उसने तब की होल मे से अन्दर झाका और अन्दर जो कुछ दिखा वह चौंकाने वाला ही था।

शमा के पाँवों तले की जमीन खिसक गई। भीतर एक स्त्री स जैदा

बहस नहीं झगड़ा कर रहा था। पर वह स्त्री उस पर हावी थी। दोनों पक्ष झल्ला-झुंझला रहे थे। मगर दबी आवाज में।

'बात क्या है? कौन है यह अजनबी महिला?' शमा का दिल धड़घड़ा रहा था। उसने सब कुछेक पल सोचा और फिर लपककर बगल वाली खिड़की से जा लगी।

'तुम मेरे पीछे यहाँ क्यों और कैसे आ गई ?' जैदी चिल्लाया।

'चीखो मत ! मैं सबके सामने तुम्हें नंगा नहीं करूँगी। मैं तो यही पूछ रही हूँ कि तुमने 'मुता विवाह' क्यों किया और किससे किया। कौन है वह चुड़ैल ?'

'यहाँ शोर न करो। जो पूछना था, घर पर ही क्यों नहीं पूछ लिया ? जैदी नरमी से बोल रहा था।

'वहाँ ? वहाँ तो तुमने मुझे कुछ न बताया। हाँ भला हो उस खुदा की बन्दी भाभी का जिसने मुझे सतर्क कर दिया और हाथों हाथ तुम्हारे पीछे छूटने वाली गाड़ी में पूरे पते के साथ टिकट कटाकर भेज दिया। वैसे तुम्हें विश्वास जरूर था कि लखनऊ से यहाँ तक कौन आएगा। क्यों ?'

सरवर जैदी शायद निरुत्तर हो गया। तब कुछ क्षणों के मौन के बाद फिर नारी स्वर उभरा—'बोलोगे नहीं ? बताओ भी ?'

क्या बताऊँ मैं ?' दाँत पीस कर जैदी गुर्राया।

'यह शमा कौन है ? क्या हमेशा के लिए इसे घर में डाल लिया ? कब तक यह मेरा हक खाती रहेगी' क्या क्या खरीद दिया इसे ? बस कुछ महीने अलग रहे कि फिसल गए न ? पर मुझे दुख है मैं तुम्हारा पीछा कयामत से पहले छोड़ने से रही ! अब इस बन्दी का खेल देखना अपने अब्बा को बुलाकर चौक बाजार में तुम्हारे पूरे खानदान की धज्जियाँ न उड़ा दूँ तो मेरा नाम रशीदन नहीं।" औरत छाती पीटने लगी।

'क्या करोगी तुम ?

'मैं ? मैं भी मुता कर लूंगी। और उस जनवर से करूंगी जो तुम्हारा दुश्मन है।' - -

'बदत्तमीज चुप भी रहो। नही तो मैं तुम्हारा झोटा पकड़ कर इस पक्के फर्श पर दे मारूंगा। 'मुता' ऐसा करोगी कि फरिश्ते कूच कर जायेंगे।'

'मैं 'मुता' जरूर करूंगी। जब तुम दो दिन बिना बीबी के नहीं रह सकते तो तुम्हारी बीबी दो रात बिना खसम के कैसे रह सकती है ? न्याय तो करो। 'रशीदन ढीट हो गई थी।

'लो न्याय।' जैदी चीखा और दूसरे ही पल उसने एक भरपूर झापड़ सामने वाली के गाल पर रसीद कर दिया।

रशीदन पीछे लुढ़की और अलमारी के किवाड़ से जा टकराई। पर वह भी एक ही सेंद नी थी। चोट खाकर छिड़े नाग की नाई फिर सामने आ गई। फुफकार कर बोली। 'थप्पड मारने वाले। हर तरफ तुम्हारा ही बोलबाला नही रहने का है अब। मैं पैर की जूती नहीं जोड़ की सजीव जोड़ी हू जो हक तुम लोगे वही मैं मांगूगी। यहां तुमने मेरे साथ विश्वास घात किया मैं वहां तुम्हारे साथ बेवफाई करूंगी। मैं तुम्हारा बदला जरूर लूंगी।'

'खुदा के लिए चुप मर जाओ सैदानी की बच्ची। मैं तो बाज आया देखो वह कालेज से आती ही होगी। सुन लेगी तो क्या कहेगी।' हाथजोड़ रहा था जैदी।

'अच्छा मुझे क्या करना चाहिए ?'

'तुम्हें ? तुम्ह अभी वापस चले जाना चाहिए। मैं घर आ रहा हू। यहां जो कहना सुनना करनाहो कर लेना मगर यहां देखो रशीदन अवधि खत्म होते ही मैं उसे मक्खी की तरह निकाल फेंकूंगा—अल्ला की कसम। कसम शहीदाने करबला की।'

जैदी ने हथियार डाल दिए। मगर उसकी पत्नी अब भी बौखला रही थी। 'ये कपड़े किसके हैं।' रशीदन ने अलमारी खोल ली।

'बोलते नहीं ? और ये तस्वीरें, किसकी है एलबम। उसी का ?' जैदी निरुत्तर था। और सिर थाम कर बबस पर बैठा था।

'मुझे माचिस दो। इन्हें जलाकर अपनी जलन मिटाऊंगी मैं।'

'रशीदन यो तमाशा न बनाओ। आखिर मैं तुम्हारा शौहर हूं लोग सुन लेंगे तो मेरी इज्जत धूल में मिल जाएगी।'

'तुम्हारी इज्जत! कब से तुम इज्जत वाले। वहां शबनम, फिरोजा और रोशन को तबाह किया और यहां फिर किसी भोली भाली का सर्वनाश कर दिया। तुम पुरुषों को शर्म भी नहीं ?'

मैं कहता हूं चुप रहो। खुदा के लिए चुप रहो। नहीं तो आंतें बाहर निकाल दूंगा। रशीदन मैं नाक नाक आ चुका हूं।'

'लो। मुझे डराते हो ? डरपोक होती तो अकेली इतना सफर कैसे कर आती।

'अच्छा जाने दो। मैं यकीन दिलाता हूं शमा से अब वास्ता नहीं रखूंगा। मुझे बख्श दो बाबा।'

'फैसला पंचों में होगा। लिखत पढ़त होगी। और सब कुछ मेरे अब्बा जी के रूबरू होगा। वरना मैं अपनी हवेली लेकर सच कहती हूं 'मुता' कर अलग बैठ जाऊंगी। रोते रहियो तुम।

रशीदन हांफने लगी और फिर मू-मू रोना शुरू हो गई तो जैदी के पांव उखड़े। वह अत्यधिक घबरा गया था।

रशीदन, देखो वह आने वाली है। चुप हो जाओ। मैं तो एक तुम्हारा ही हूं। कुछ दिन मजे मारने के लिए समझौता कर लिया तो क्या हो गया।'

'क्या हो गया ? फिर मैं भी कर लूं मुता ?'

तुम स्त्री ऐसा नहीं करोगी मेरा मलका। उठो मुंह हाथ धोलो सहज हो जाओ और शमा आए तो कुछ भी प्रकट न करना। उठो।'

जैदी मनुहार, अनुनय विनय में लगा पर वह बके ही जा रही थी कि खिडकी से सटी शमा का चक्कर आया। हाथ में पकडे लोहे के सरिए उससे छूट गए किताबें बिखर गई। 'ओह!' उसने पेशानी का पसीना पोछा। सूखते होठो पर जीभ फिराई और एक ही झटके में पलट कर हनुवत स्कूल की ओर भागने लगी—विक्षिप्त सज्ञा हीन।

शाम की धूप क्रमश कम होकर खत्म हो गई तो सर्दी बढने लगी। वफा ने इधर-उधर देखा और अगडाई लेकर किताब बन्द कर दी। फिर दरी तकिया समेट कर होस्टल की छत से नीचे आ गई वह। सामने कामिनी और कुलसूम टेनिस खेल रही थी। 'क्या तुम लोग खाना खा चुकी?'

'नही। बस एक पारी और। वैसे आज भिंडी बनी है। खाए और न भी खाए। तुम खा आओ। पलेट पडी है मेरे कमरे मे।'

'खा लू गी। कुछ देर तुम्हारा खेल देख लू।' वफा कुछ देर वही खडी रही और फिर दरी तकिया कामिनी के रूम मे छोड, बाथ रूम मे चली गई।

'सर्दी मे हाथ मुँह धोना भी कठिन काम है।' वह मन ही मन बुद-बुदाती रह रहकर टोटी खोल रही थी। फिर तौलिया से मुह पोछकर वही लौट आई। 'मैं तुम्हारी प्लेट ले जा रही हूँ।'

ले जाओ। घी बरनी मे है '

'अच्छा!' वफा पलेट प्याला उठाकर खाना खाने चली गई। वह डाईनिग हाल मे घुसी ही थी कि होस्टल की बिजली चली गई। और अधेरा छा गया।

'लो एक आई तो दूसरी बिजली चली गई है।' वफा को देख कर किसी सहेली अध्यापिका ने चुटकी ली।

कम्बख्तो! मैं आ गई हूँ तो उजाला हो गया है। देखो एक, दो तीन! बिजली आजा ऽऽ ' पर बिजली नही आई तो खाना खा रही सभी अध्यापिकाए खिलखिला कर हस पडी। 'डिब्बा गुल!'

'क्या खाक गुल । देखो चपरासन माई ने तीन मोम बत्तियां जलादी हैं। लाओ पानी भरो और खाना परोसो।' वफा मेज-कुर्सी पर जम गई।

और उसे खाना खाकर सौंफ लेने के लिए अपने कमरे मे आना ही पड़ा। कमरा सदा की भाँति आज भी खुला ही था। उसने बटन ऑन किया। और पनडिब्बी से सौंफ लेकर हथेली पर साफ करके मुह मे डाल लिया। फिर गुनगुनाती हुई पीछे पलटी तो चौंक पड़ी। 'तुम? कब आई यहां? अंधेरे मे अकेली ही बैठी रही?'

हड़बड़ाहट मे वफा ने एक ही सांस मे तीन सवाल कर दिये। पर खिड़की के पास पलंग पर गठरी बनी बैठी वह चुप ही रही। 'हाय अल्ला! क्या बात है?' वफा ने भीतर से दरवाजा बन्द किया और लपक कर शमा के पास जा पहुंची। शमा भरी बैठी थी। स्नेह का स्पर्श पाकर उसकी आँखें भर आईं। 'मैं जिन्दा ही मर गई वफा! कहीं की नहीं रही।' उसका स्वर भर्रा गया। और सिसकने लगी वह।

'लेकिन हुआ क्या?' वफा हैरान थी।

शमा ने तब पापा की रजिस्ट्री, जदी की बीबी का अप्रत्याशित आना, उन मियां बीबी का झगड़ा और अपनी दयनीय स्थिति के बारे मे सब कुछ बता दिया। जिसे सुन कर वफा सन्नाटे मे आ गई। कुछ देर के लिए उससे भी बोलते न बना।

फिर असमंजस की स्थिति मे सिर हिलाकर वफा ने गहरा सांस लिया। 'यह तो होना ही था शमा! खैर ला दिखा तो फादर का खत।'

शमा ने ब्लाउज से निकाल कर वह खत वफा के आगे रख दिया।

'एक मिनट ठहर' खिड़की खोलकर वफा ने आवाज दी।

एक डाइट मेरे कमरे मे भेज देना। मेहमान के लिए। सब्जी खत्म तो नहीं हो गई?'

'नहीं। सब ठीक है। मैं अभी पहुँचा रही हूँ।' प्रत्युत्तर मिला। 'ठीक है।' वफा ने खिड़की बन्द करली और खत उठा लिया।

दिसम्बर माह की लम्बी और ठिठुरती रात थी यह। होस्टल मे दस बजे के बाद सभी लाइटें बन्द हो गई पर वफा के यहाँ आज शायद जागरण था। शमा और वह देर रात तक एक रजाई म घुसी चित लेटी किंकर्तव्य विमूढ मे जागती पडी थी।

'अब तो एबोसन ही एक रास्ता बच गया है।'

'क्या गर्भपात!' शमा अचकचाई।

'बिल्कुल, गर्भपात। चौंकती क्यो है। भूल बसे न सुधरी तो यही करना होगा। तुम्हारे अच्छे पापा के सामने स्वच्छ होकर जाओ और फिर स्वच्छ जीवन ही जीना। दुर्घटना की भांति इसे भूलना ही होगा।'

शमा चुप लेटी रही। वह बल्ब के इर्द गिर्द पतगो को देख रही थी। एक परवाना छिपकली के मुह मे फँस चुका था आह!

यह एक खतरनाक काम है। फिर जदी के दस्तखत भी होग क्या?'

नही। हम कोई जिक्र न करेंगी। अवैध गर्भ आज सरकारी तौर पर आसानी से साफ कराए जा सकते हैं।'

'अवैध गर्भ? यह अवैध नही वफा।

'हूँ वैध है यह रानी जी।' वफा ने मुह बिसूरा सो जाओ सुबह सोचगे।'

पर शमा सो नही सकी। उसने करवट बदली। 'वफा! खुदा के वास्ते मेरे होने वाले बच्चों को अवैध तो न कहो। वह औरस है।'

'कमाल। थोथी भावुकता! अरी मेरी माँ की जाई। औरस कहने मात्र से ही काम चल जाता है क्या? पगली हम जिस पुरुष प्रधान समाज मे रहती हैं वह इतना सीधा भोला और उदार नहीं है। 'मुता' वगैरह नवाबो के चोचले थे। उनके यहाँ परीखान हुआ करते थे—बेशुमार बगमे। चार बीवियो की सीमा से बचने के लिए नवाब साहब 'मुताई बेगमे रखा करते थे। और ये सख्या मे सैकडो हुआ करती थी। उनकी सताने औरस होती मगर मुताई कहलाती थी।

वफा ने जम्हाई ली। और शमा का घूरा। वह चुप लेटी पड़ी थी।

'शमा तू मुझ से ज्यादा क्वालिफाइड है। समझती क्यों नहीं ?' देख तो नवाबों ने यहाँ पालन पोषण, खाने रहने और पहनने की तो कमी थी नहीं। यों ही अनेक उनके नाम पर जिन्दगी पालते थे। बच्चे तब न बाहर निकलते थे न स्कूल कॉलेज में आते थे। न उन पर कोई उगली उठा सकता था। और बिला वजह भी बहुत सी हुशियार बीवियाँ नवाब साहब से अपना झूठा सच्चा सम्पर्क बताकर खजाने से पेंशन पाती थी। तब अधा पीसे और कुत्ता खाए वाले हालात थे।

लेकिन हम सामान्य नागरिक ऐसा नहीं कर पाते आज की परिस्थितियाँ बिल्कुल जुदा हैं। शमा तुझे इस झझट से छुटकारा पा लेना चाहिए—वरना याद रखो तुम्हारे फिसले पाव कहीं नहीं टिक सकेंगे।'

वफा ने प्यार से उसे बाहों में बांध लिया। 'आज साली सर्दी भी ज्यादा है। जरा रजाई छोड़ तो मेरी पीठ उघड़ गई है। अब सो जा।'

टेबुल घड़ी की ओर गर्दन घुमा कर वफा ने हाथ बढ़ाया और लाइट बुझा दी।

दस बजे जब सहेलियों के साथ वफा कॉलेज जा रही थी तो पाँचवीं रोड चौराहे पर एक साइकिल वाले ने उसे नमस्कार कहा। 'आप भी एड कॉलेज ही जा रही हैं न ? यह लिफाफा शमा जी को पहुचा दें। मैं आफिस जा रहा हूँ। देर हो जाएगी।

'आप हमें जानते हैं ?' वफा मुस्कराई।

'जी नहीं। आपकी यूनिफार्म से जाना है। यह जैदी साहब ने दिया था। वह रात की गाड़ी से कहीं बाहर गए हैं। मैं गुप्ता उनका पड़ोसी, अच्छा नमस्ते।' वह हड़बड़ा कर चला गया तो वफा की हंसी छूट गई।

शमा होस्टल में ही थी। कल वाले हादसे के कारण परेशान होने की वजह से आज वह कॉलेज नहीं आई। लिहाजा प्रेयर के बाद अटेंडेंस देकर वफा को वापस होस्टल लौटना पड़ा।

शमा ने पत्र खोला। मकान की चाबियाँ और एक पुरजा था अन्दर। पुरजे पर चार पाँच वाक्य बिना सबोधन के घसीटे हुए थे

'खिड़की के बाहर तुम्हारी किताबें बिखरी पड़ी मिली। और पदचिह्न भी देखे। तुम बाहर ही से लौट गई। कारण मैं जानता हूँ। सब देख-सुन लिया होगा तुमने ! खैर लौटकर बात करूँगा। अभी मैं रात की गाडी से 'बाहर' जा रहा हूँ। चाबियाँ ले लेना।'

—जैदी।

'वह बीबी को लेकर भागा है। यहाँ वह और फजीती करती।' शमा बड़बड़ाई।

'मरने दे। उठ अपन शास्त्रीनगर चलते हैं। तेरा सामान ले आए।'

टू सीटर ले कर वे दोनो शास्त्रीनगर पहुँची। शमा ने अपराधी की तरह इधर-उधर देखा। फिर ठिठक कर आगे बढ़ी। 'ताला खोलूँ ?' शमा ने वफा की तरफ पलट कर देखा।

'खोलती क्यो नही ! जल्दी कर बाहर खड़ी बुरी लग रही हैं।' शमा ने ताला खोला और मकान मे घुसी। वफा भी पीछे थी। उसने भीतर होकर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

मकान की दशा देख कर शमा को भारी दुख हुआ उधर वफा आश्चय से चकित हो रही थी।

पानी की मटकी टूटी हुई फर्श पर औंधी पडी थी। किचन मे बरतन बिखरे थे। और कमरे का हाल तो बेहिसाब बेहाल हो रहा था। अधजली फर्श पर मसली हुई तस्वीरें, गुलदस्तो के टुकडे, फटा हुआ एलबम। और मेज का काँच किरचे किरचे। पेपर वेट फर्श पर पड़ा बता रहा था कि उसे इस्तेमाल किया गया।

शमा का दिल जोरो से धडक रहा था। अलमारी खुली देख कर वह उधर लपकी। उसके कपडे अटैची से बाहर खीचे पडे थे पर गनीमत

यह रहा कि उन्हें जलाया नहीं गया। खिड़कियों के परदे भी तार-तार थे। 'उफ!' शमा सिर थाम कर वहीं बैठ गई।

'यह सारी सजावट मैंने की थी वफा। सत्यानाश हो गया। हा! तूफान गुजरजाने के बाद जैसी तबाही।' शमा विह्वल हो उठी। 'खूब झगड़े हैं मियां-बीबी। शायद हाथापाई की नौबत आई होगी' शमा विक्षिप्त सी वफा को ताकने लगी।

'तू विचार मत कर। इस कुर्सी पर बैठ और थोड़ा सुस्ता ले। अधैर्य नुकसानदेह होता है।'

'यहाँ कहाँ बैठूं। मेरे अरमानों का खून हो गया है वफा!'

'नहीं यह तो मात्र एक ठोकर है। लोग तो बार-बार गिरकर भी खड़ा हो जाते हैं। मेरी स्वयं की मिसाल तुम्हारे सामने है। अल्ला जो भी करता है ठीक ही करता है। तुझे समय रहते चेताया गया है। भई जान बची लाखों पाये अब यथार्थ सामने आ गया तो भूल सुधर जायेगी। मेरे दिमाग में एक बात आ रही है।

'वह क्या!' शमा ने वफा के हाथ थाम लिए।

'ऐसा कर कि तू आज ही अपने पापा से मिलने रवाना हो जा। वहाँ सारी बात बताकर माफी मांग लेना। तेरे अब्बा बेशक फरिश्ता हैं।' कहना बहकावे में आ गई थी अब संभल चुकी हूँ और मन लगा कर पढ़ रही हूँ। इधर अभी कॉलिज में भी पढ़ाई नहीं हो रही। चारों सेक्शस सोशल कैंप में बाहर जायेंगे। शिविर एक सप्ताह तक चलेगा और फिर वेकेशन्स-तब तक आराम से घूम आ। तेरा मन भी ठीक हो जाएगा है न?'

'आइडिया तो ठीक है। पर इसका?'

'मैं डाक्टर से बात करके तैयार रखूंगी।' वफा ने विश्वास दिलाया।

'लेकिन वहाँ कैसी दिखूंगी मैं?'

'अभी कुछ भी तो नहीं दिखता। साड़ी जरा ठीक बांधना फिर पैनी नजर तो औरतों की होती है। और तुम जा रही हो पापा के पास।'

'सच कहो। ऐसा न हो कि पकड़ी जाऊं ?'

'अल्ला कसम ! कुछ भी तो पता नहीं चलता। निभय रह। यह कातरता छोड अब, हा रुपए पैसे ?'

'अभी तो बैंक में पैंतीस सौ हैं।'

'ठीक है। चलो। उठा जो तेरा सामान है। होस्टल जाकर ही तसल्ली से तयारी करले। पीछे मैं सलट लूंगी।'

शमा को वफा का सुझाव जच गया। वह बिखरा सामान समेट कर फटाफट जमाने लगी। मानो गाडी छूटने का समय एकदम ही करीब आ गया हो।

होस्टल वाली अध्यापिकाएं पांच बजे कॉलेज से लौटी तो वफा को सामने देख कर एक ने पूछ लिया। 'तुम अटेंडेंस देकर ही चली आई। क्या तबियत खराब थी ? या वह लिफाफा देना था शमा को ?'

'शमा तो रात यहीं थी तुम्हारे कमरे में। दूसरी ने कहा।

हां उसे पत्र भी देना था। वह अपने पापा से मिलने छुट्टी चली गई है। मैं अभी दिल्ली मेल मे बिठाकर आई हूं उसे।'

'शमा गई तो पीछे ■ जदी का मन कैसे लगेगा ?' कामिनी ने मजाक किया।

उसी से जाकर क्यो नहीं पूछ आती।' वफा ने डपट दिया तो निभा मुस्कराई' वही जीजी खफा क्यो हो रही हैं ? हम हिन्दू लडकियां इस मुता मे समभी नही तो जानकारी कराओ न।'

'उस दिन कालेज मे मौलवी आए थे आ जाती तुम भी बैठक मे ?'

अरी वाह। कुलसुम ! वह तो खालिस मुसलिम कान्फ्रेंस थी। प्रिंसीपल ने सब को नहीं बुलाया था।'

'तो फिर कल्चर वीक मे यह वाद विवाद का विषय होगा न ?'

नही ! वफा मुड गई 'खुराफात छोडो और अपने कमरो मे जाकर

कपड़े बदल लो। जान मत खाओ।'

'जान कहाँ खा रही हूँ। जिज्ञासु हूँ, जानकारी चाहती हूँ।'

निभा बचपने पर उतर आई। और उछल कर वफा के कंधे पर झूल गई।

'बाबा छोड़ो। किसी दिन चर्चा कर लेंगी।'

'किसी दिन नहीं। आज ही। मिस सूपरा छुट्टी पर है। वार्डन की एबसेंस मे मजा रहता है। ये सुनो सुनो।' कामिनी ने किताबें पीटी गोया मुनादी की डुग्गी पीट रही हो—'हर खास आम को सूचित किया जाता है कि आज रात ठीक आठ बजे, मिस वफा के रूम मे 'मुता' पर खुल कर चर्चा होगी। साहिबान पधारें-'तशरीफ लाएं'

'कैसी कम्बख्त है।' वफा झुंझला कर पलट गई। तो सभी पीछे पीछे अपने अपने कमरो म बिखर गई।

आठ बजे खिलखिलाती हुई अध्यापिकाएं वफा के कमरे में घुसी। पर वहाँ वफा नही थी। 'कोई बात नही बिस्मिल्लाह करो और कार्यवाही प्रारम्भ कर दो। तब तक चुटकले और लतीफे ही सही' अदा पालथी मार कर चटाई पर जम गई।

'आज के इस इजलास की सदारत (अध्यक्षता) करेगी मोहतरमा किश्वर बानो।'

'ना ना। मैं 'मुता के बारे मे कोई इल्म नहीं रखती। खुदा के लिए माफ करो।'

खुलासा मै कर दूँगी। पर सदारत तुम्ही करो मेरी आपा!

'ताईद, ताईद।' अदा चिल्लाई तो सभी साथ हो गई। फिर तालियाँ पीटी गई। और किश्वर मुस्कराई।

'बहिनो! हमे इस विषय को मजाक मनोरंजन म नहीं लेना चाहिए। दरअसल यह एक गम्भीर मसला है—क्यों कुलसूम?'

'जी यह तो है ही। मुता दिखने मे ही मजाक है बाकी तो '

'ठीक है, ठीक है अपने विचारों से अवगत कराओ। हाँ मिस कुलसूम ?' कुलसूम सदर मोहतरमा के पहलू में आई और बोली—'मेरा चचाजाद भाई अलीगढ पढता था। उसने किसी के साथ 'मुता' किया। तब हमारे घर मे खूब हगामा मचा था। हम तब से 'मुता' को जानने लगे।'

'लेकिन यह है क्या ?' निभा से रहा नहीं गया।

'सक्षेप में, स्त्री पुरुष के अवैध यौन सम्बन्धों के लिए एक अपनी किस्म का सूदनामा' होता है।

'क्या इसे सामाजिक मान्यता है ?' कामिनी ने आगे पूछ लिया।

'मुझे नही मालूम। कुलसूम ने मुह चिढ़ाया।

'तब क्या मालूम है ?' निभा ने फिर छेड़ा।

'मुझे यह मालूम है कि तुम्हारे पीछे कौन दीवाना है ? इसके पीछे कौन, और यह किसके चक्कर लगा रही है।'

'धत् तेरे की। यह क्या बत्तमीजी है। कोई सुन लेगा। दीवारों के भी कान होते हैं।' अदा ने गोल घेरे मे आँखें घुमाई।

'अच्छा बहिनो ! माफ करो। बात यह है कि शिया सम्प्रदाय मे सु नी मुसलमानो से अधिक कठोरता है। जिनाखोर (व्यभिचारी) को बहुत बुरा माना जाता है। दण्ड भी कडा है। अपेक्षा यह है कि या तो स्त्री पुरुष मन साफ रखें या यथा 'मुता' करके व्यभिचार से बचें। 'मुता' कर लेने से स्वेच्छाचारी पुरुष जिम्मेदारी मे घिरता है। अत वह इससे बचता भी है।'

'मुता करके तो मजे कर सकता है न ! तब लडकी को भी बुराई नही मिलती न ! हाँ जैसे शमा और जदी, जैसे निभा खुद ही समझ गई थी। 'है कोई मेरे साथ मुता करने वाला !' वह उछली।

'यह बन्दा रहा।' अदा ने साडी का फेंटा बाध लिया और निभा को बाँहो मे उठा लिया तो कमरा ठहाकों से गू जने लगा। हा हा हा

तभी एकाएक वफा ने कमरे मे प्रवेश किया। 'यह क्या धिगामस्ती है ! हद हो गई भई ! भावी अध्यापिकाओ की यह हालत !'

निभा छटपटाकर जैसे प्रदा की बाहों से छूटी । 'अध्यापिकाएं इंसान नहीं होती क्या ? इनके मन होता ही नहीं ? कमाल है इंटरटेनमेंट भी लोगो को नागवार गुजरता है । देखो बड़ी जीजी, कुछ हास परिहास चलता रहे तो होस्टल की बोगस जिन्दगी भार नहीं बनती । घर से कितनी दूर पड़ी हैं हम । फिर आप हर सनडे को स्पेशल डाइट करती हैं तो स्पेशल नाइट का आयोजन क्यों नहीं रखवाती ?'

चुलबुली निभा के इस तर्ज पर सभी तालियां पीट पीटकर हँसने लगी तो वफा की भृकुटी में बल पड़ गया—'क्या मतलब ?'

'मतलब साफ और स्वच्छ है। सनडे नाइट हास्य व्यंग्य आयोजन की रात होगी, अनुमति है ?'

'विचार कर लिया जाएगा।' निभा के नखरे पर उसकी भी हँसी छूट गई ।

'हम तुम्हारे कमरे मे आई और जनाब लापता, है न कमाल ?'

'क्षमा चाहती ▮ बहिनो ! मैं इकबाल के यहाँ जरूरी काम से चली गई थी पर वह टाऊन हाल कवि सम्मेलन मे जा चुका था, मिला ही नहीं । तुम रूठो नहीं 'गुड़' जो मजाक कर ही चुकी । अब चाय पिलाती हूं तुम्हें ।'

'गुड । वफा सिद्दीकी !' प्रदा ने भुजा उठाकर नारा लगाया तो शेष बोली—'जिन्दाबाद !'

कुलसूम ने स्टोव जलाकर चाय चढ़ादी। तो कामिनी ने मरमराहट से बचने के लिए टेप चालू कर दी । कमरा मधुर ध्वनि से भर गया ।

तभी निभा ने सिर हिलाना शुरू किया—'मुझे कुछ हो रहा है लोगो !' 'हाय अल्ला क्या महसूस हो रहा है ? तबियत तो ठीक है ? प्रदा ने लपक कर उस झूमती छोकरी को थाम लिया । निभा ने शरीर ढीला छोड दिया और पलकें मूंद ली ।कोई मेरे पाँवो मे घुंघरू बाँध दे ।'

'ओह यह बात !' सब खिलखिला पड़ी और निभा के घुंघरू बांधे

गए। तो वह टेप की आवाज पर लहरा लहरा कर, थिरक थिरक कर नृत्य करने लगी। अदा अब बेवस थी। रहा नहीं गया तो वह भी निभा से आ लगी और दो युगल नत्य से वह रात भरत हो उठी।

'अब बहुत हो गया इंटरटेनमेंट! खुदा के वास्ते रुक जाओ। कोई सुनेगा तो क्या कहेगा। कहीं वार्डन आ गई तो। ठहरो!' उठ कर खुद वफा ने पकड़ा तो चकरर घिन्नी सी घूमती निभा और अदा रुक सकी। कुछ देर सुस्ता चुकी तो वफा ने कहा—'सोशल सर्विस कैम्प में कौन कौन जा रही है?'

'हम सभी जायेंगी। कॉलेज की हर एक्टीविटी में पार्टीसिपेट करना हमारा नैतिक कत्तव्य है और आप?' निभा फिर मुंह मे मुंह देने लगी।

'मुझे यही काम है। उस शमा की बच्ची के लिए रुकना पड़ेगा। न जाने कब आ जाए वह?'

'शमी! कहां चली गई है।' कुलसूम प्याले सजाने लगी।

'अपने पापा से मिलने गई है। ज्यों ही आ जाए मैं उसे लेकर किसी दल म शामिल हो जाऊंगी।'

'जो मरजी आए करना। लो चाय ले लो।' कामिनी ने प्यालो म चाय भर कर सबके मध्य रख दी।

इसके बाद कहकहो भरी वह रात वफा के कमर मे ही गुजरी। अंगीठी जलाकर अध्यापिकाओ ने शाल ओढ लिए और केरम खेलने लगीं। कुछ ज्यादा तज तर्रार थी— वे ताश की बाजियाँ लगा रही थी।

कॉलेज के चारो दल शिविरो मे चले गए। एक दल जैसलमेर गया, दूसरा-पाली, तीसरा-बालोतरा और चौथा-सीवाड। किन्तु वफा कही नही गई। वह इकबाल के घर उमदा भाभी के साथ रह गई। हां, उसने होस्टल के चौकीदार को कह रखा था कि यदि शमा आ जाए तो उसे इत्तला कर दी जाय।

22 दिसम्बर को उमदा के मकान मालिक ने बताया—बी० एच०। होस्टल से कोई फोन है तो वफा ने बात की। 'हलो! मैं वफा बोल रही हू। हूँ क्या? जरा जोर से बोलो न!'

'मैं लौट आई जल्दी होस्टल पहुंचो।'

'क्या शमा ! आ गई अच्छा ! मैं अभी पहुँच रही हूँ दस मिनट में। वैसे यहाँ आ आओ न, चमदा भाभी बुला रही है। होस्टल मे अकेली बोर होंगी हम। क्या ? नहीं आ सकती ! क्या हो गया ? तुम रो रही हो ? कमाल है—हलो हलो—ठीक मैं अभी आई।'

वफा का दिल किसी अज्ञात आशंका से धड़क रहा था। कई भले बुरे विचारों से जूझती हुई वह होस्टल पहुँची। शमा गैलेरी मे रखे लकड़ी के तख्ते पर बैठी उसे दिख गई। उसने अटैची का सहारा ले रखा था और शून्य मे ताक रही थी। 'हलो शमा !'

वफा आगे बढ़ती हुई चहकी मगर शमा राख की तरह ठण्डी बैठी रही। 'क्या बात है ?' नजदीक आकर वफा ने उसे झकझोरा। पर शमा निरुत्तर ही रही। उसने घुटनो से सिर छिपा लिया और सिसकने लगी—'वफा ! पापा मुझे छोड़ गए।'

'क्या बकती है मेरी बाई ?' वफा कांप उठी 'या वली अल्ला !'

'उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मैं अब किसके सहारे जीऊँगी—वफा !' शमा ने दुःख का काँटा निगला और रूमाल से आँसू पोछ कर सूनी आँखें उस पर जमा दी।

'कुल्लो नफसिन जायकातुल मौत। हर नफ्स को मौत का जायका चखना होता है उफ ! यह कैसे हुआ मेरी प्यारी शमा !' वफा भी विह्वल हो उठी।

मैंने तुम्हे पापा का खत दिखाया था न, बस उसे लिखकर वे उड़ान पर गए और फिर जलते हुए विमान के साथ ही जमी पर आए। मुझे बताया गया कि जोधपुर से लौटने के बाद वह बेहद परेशान नजर आए। और उड़ान के दिन तो तनाव पराकाष्ठा पर था। शायद इसी असह्य तनाव की स्थिति मे उन्होने कन्ट्रोल खो दिया और '

'ओह गाड ! आ भीतर आ जा। वफा ने अपना कमरा खोला फिर झाड़ू लगाकर बोली— यहाँ बैठ मन को कड़ा करले मैं नीचे से पानी ला रही हूँ। और वफा सुराही लेकर नीचे चली गई।

'लो यह काम आया मुता ! जायज है, वैध है, धर्म सम्मत है कोरा दिमाग का खलल ' बुदबुदाती हुई वफा ने सुराही को खूब धोकर पानी भर लिया और लौट आई। 'ये कबूतर भी अनाड़ी हैं इन्हे यहाँ कौन घोसला बनाने देगा ?' लकड़ी लेकर वफा ने रोशनदान मे जमे कपोत युगल को खदेड़ दिया फिर शमा को देखकर कहा। 'कुछ नाश्ता लेकर आ रही हूँ। तू हाथ मुँह धो आ। और थमस उठाकर बिना रुके वफा कमरे से बाहर हो गई।

नाश्ता आया पर ऐसे म क्या खाया जाता ? दोनो ने मुश्किल से दो समोसे कुतरे और कॉफी पी। 'हिम्मत रख बहन, यह घड़ी तेरे इम्तहान की है। ऐसा न हो कि तू सतुलन खो दे। पर दुख की यह चरमसीमा इस बात की द्योतक जरूर है कि तेरे दिन अब वापस शनै शनै सुधर जायेंगे। बस धीरज और थोड़ा सब्र रखेगी तो मुश्किलें कट जायेंगी।'

शमा ने सब सुना, सब्र और जब्त न रखती तो अब तक उसे भी इस जहान से कूच करना पड़ता, यह धैय और सतुलन ही तो है जो उसे वापस जोधपुर ले आया।

शमा ने निरुत्तर भाव से आँखें ऊपर उठाई। आज वे बड़ी बड़ी सुन्दर आँखें निर्जीव तितलियों सी चिपकी थी। निस्तेज, धुँधली डबाडब भरी हुई।

'लेकिन इस दुघटना की तुम्हे इत्तला नही दी गई कोई तार भी" ?'

वह पापा ने सख्ती से मना कर दिया था। जली हुई अवस्था मे अस्पताल में दो दिन जिन्दा रहे वह। उन्होने वकील बुलाया और मुझे हमेशा घुल-घुलकर मरने के लिए वारिस बनाकर आँखें मूँदलीं। यह मोहरम से पाँच दिन पहले का वाकिया है। वह वसीयत म सब कुछ मेरे लिए छोड़ गए लेकिन यह बोझ मैं नही ढो सकूँगी

शमा यह कहकर रोने लगी। और फिर धीरे धीरे कहीं गहरे मे

उतर कर गुमसुम सी बैठ गई। वफा भी खामोश थी और उसके चेहरे पर उठते-मिटते भावों को देख रही थी।

अब पीछे से कौन है तुम्हारे घर पर ?'

'हूँ अम्मा संभली। हवेली खाला को सौंप आई हूँ। जेवर और नकद जमा के बारे में जिन्दा रही तो सोचूँगी।'

क्या रस्म पर वापस जाओगी घर ?'

'सभव है क्या ? इधर देख न !' शमा ने अपने कटिप्रदेश की ओर सकेत किया—इससे छुटकारा मिले तब न ! इसी के कारण मैं वहा ज्यादा ठहर नही पाई। भेद खुल जाता तो ? खैर तुमने किसी डाक्टर से बात की ?'

गांधी अस्पताल के डाक्टर से इकबाल ने बात करली है।

'ठीक है। वफा मुझे जल्दी छुटकारा दिलाओ मैं अब बी० एड० नही करूँगी जी चाहता है हिमालय मे आकर गल जाऊँ।

यह मुझे पसन्द नही। पलायन करोगी तो हम हेल्प न करगे—क्या समझी ? जैसा बोया वही काटा है तुमने। अब भाग क्यो जाएगी ? नफा या नुकसान जो मिल रहा है, धैर्य पूर्वक भुगतो ? और मैं तो चहती हूँ कि कही पाव जमा कर दुबारा जिन्दगी शुरू करो। यही सच्चा प्रायश्चित होगा।

'क्या मेरे फिसले पाव फिर से कही जम पायेगे ?'

'जरूर जम सकेंगे। जैदी पलायन कर गया। वह शायद ही लौटे। उसे भूलकर भूल सुधारो बाकी इकबाल आया कि हम डाक्टर से मिलगे।

वफा ने झाड झपट कर बिस्तर लगाया। छोड झझट इधर आकर लेट जा। सफर की थकान होगी, थोडी नींद ले ले।'

कालेज म हवा फूट गई तब ? वह कपडे बदलने लगी।

ओखली मे सिर देकर मूसली से भय क्यो ? '23 दिसम्बर से 1 जनवरी तक वीटर ब्रेक है। हम इन्ही दिनो मे काम कर लेगे जबकि सब

छुट्टियों पर होगे।' और वफा ने खीच कर शमा को रजाई ओढ़ा दी।

इकबाल ने डाक्टर घोस को एक बार पुन सारी समस्या सविस्तार सुनाई तो वह बोला—'सरकारी आदेशानुसार अब गर्भपात वैध है। और यह अच्छी व निर्भीक बातहै कि आप नीम हकीम के चक्कर मे न पडकर अस्पताल आए। हम जरूर मदद करेंगे लेकिन पहले जाँच तो करनी ही होगी।'

'जांच कैसी डाक्टर साहब!' इकबाल अचकचाया।

देखिए हम 12 सप्ताह से अधिक का गर्भपात नही करते। क्योंकि फिर खतरा बढ जाता है।

'मैं अभी शमा को दिखा दूँगा, फिर?'

'फिर यदि अवधि अधिक नहीं हुई होगी तो काम हो जाएगा। पर ऐसा क्यो नही कर लेते कि उस युवक को यहां बुलवालो। हम शायद उसे समझा सकें और वह शमा को सदा के लिए अपना बना ले।'

यह संभव नही डाक्टर साहब!' इकबाल ने कुर्सी पर पहलू बदला।

'भला क्यो?'

वह पलायन कर गया। अब जैसा कि मैं पूर्व मे निवेदन कर चुका हूँ। यह शमा हर तरफ से अकेली पड चुकी।'

तब ठीक है भेजो उसे। अभी जाच हो जाएगी।'

इकबाल बाहर निकल आया। शमा को जाँच के लिए अन्दर भेज दिया। उसने कुछ देर बाद मेट्रन, नर्स और एक लेडी डाक्टर को भीतर जाते हुए देखा था।

बाहर वफा, उमदा और वह—तीनों अपने आप मे उलझे बेंच पर बैठे रहे। कोई आध घण्टे बाद नर्स के सकेत पर इकबाल भी भीतर गया। जिसे देखकर डाक्टर घोष ने कहा।' इसे कुछ समय अधिक निकल चुका है। फिर भी परिस्थितियों को देखते हुए हम काम कर देने को तत्पर हैं। समझ मे नही आता आज के युवा लोग सयम का जीवन क्यो नकार रहे हैं। यौन स्वतन्त्रता मे कोई आनन्द नहीं। यह निरी भावुकता है। खैर

जब तक नयी पीढ़ी वास्तविकता नहीं समझ लेती, हम उसे सँभालते ही रहेंगे। एक दिन तो सबको अक्ल आ जाती है।' डाक्टर घोष के चेहरे पर गम्भीरता उतर आई।

'डाक्टर आप बहुत अच्छे हैं। पिता से अधिक स्नेहिल और सहयोगी।' इकबाल बोल गया तो डाक्टर हँस पड़ा—

'तारीफ के लिए शुक्रिया।'

फिर शमा की पीठ सहलाकर कहा—'बेटी, हमारे समाज में अनेकों रूढ़ियाँ हैं। किस्म किस्म की अव्यवस्थाएँ और ये सभी पुरुष वर्ग द्वारा प्रस्थापित।

और ये रूढ़ व्यवस्थाएँ प्रतिदिन सैकड़ों को ठगती हैं, धोखा देती हैं। न जाने इन अन्धविश्वासों के निबीड़ अन्धकार में कितनों को ठोकर लगती हैं तथा लोग उलझ उलझ कर गिर पड़ते हैं। लेकिन कुछ ठोकर लगने पर सँभल भी जाते हैं। मेरी शुभ कामनाएँ—तुम भी सँभल रही हो न! फिर तनिक ठहर कर डाक्टर मुस्कराया—'तुम्हें भय तो नहीं लगता न? बहुत ही मामूली काम है बिल्कुल निरापद। हाँ, तुम आज ही अस्पताल में भर्ती हो जाओ। परसों तक निपटारा हो जाएगा। वैसे तुम बड़ी दिलेर लड़की हो।'

इकबाल और शमा चिक उठाकर बाहर आ गए। दोनों के चेहरों पर सन्तोष के भाव दिखे।

लेडी डॉक्टर साहनी ने दक्षता से काम किया। वह भी डाक्टर क्या, ममतामयी माँ थी। लेकिन अवधि अधिक होने के कारण रक्तस्राव ज्यादा हो गया। परिणाम स्वरूप शमा को कई दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। और रक्ताल्पता की शिकायत हो गई तो उसे डॉक्टर कैसे छुट्टी देता।

जब कॉलेज में कल्चर वीक चल रहा था। संयोगवश शमा अस्पताल में पड़ी थी। एक एक करके साहित्यिक प्रतियोगिता के सभी आयोजन होते रहे पर वह शिरकत न कर सकी।

शफा और उमदा नियमित रूप से उसकी तीमारदारी में लगी थी

श्रौर इकबाल तो खैर सँभाल ही रहा था। कभी कभार होस्टल की अध्यापिकाएँ भी आती वैसे कार्यक्रम व्यस्त था। कुछ समय भी निकाल पाना हर किसी के बूते की बात नही थी।

उदयपुर, डबोक श्रौर सरदारशहर बी एड कालेजो ने इस प्रतियोगिता मे स्थानीय मेजबान कॉलेज की शान ले ली। हर तरफ मात ही मात! भाटिया बौखलाया घूमा करता श्रौर सबको कोसता। इत्तेफाक की बात ही तो थी यह जो इसे शमा, इकबाल श्रौर जैदी सदृश कलाकारो से वचित रहना पड रहा था।

अध्यक्ष रघुवीर अस्पताल आया श्रौर इकबाल पर नाराजगी झाडने लगा—'यार इकबाल बीमार तो यह है न कि तुम। अभी भी वक्त है हमारी गिरती साख सभाल लो—कल कवि सम्मेलन है।'

'कोशिश करूँगा बशर्ते शमा ठीक रही तो।'

रघुवीर यह सुनकर झुंझलाया—'जैदी श्रौर शमा ने सब गुड गोबर कर दिया। वह तो पत्ता तोड न जाने कहाँ जा छिपा।'

उलझो नही रघु! इन्हे सहानुभूति चाहिए, हमारी खीज नही। गलती भला किससे नहीं होती ?'

ठीक है लेकिन यार मैं तो परेशान हो गया हूँ। काबिल टीचर्स के होते हुए भी हमारी शिकस्त!' श्रौर भुनभुनाता हुआ रघुवीर अस्पताल से चला गया था।

इकबाल ने सहारा देकर शमा को उठाया श्रौर अधरों से गिलास लगा दिया। 'लो तैयार है, दूध पीलो।'

शमा एक आज्ञाकारी बच्चेकी तरह इकबाल के सहारे टिकी घूट घूट दूध पीने लगी।

'इकबाल! एक बार तुम कॉलेज हो आओ। उन्हें आश्वस्त करो कि मैं कल कवि सम्मेलन मे भाग लूँगा। अगर तुमने पार्टीसिपेट न किया तो सारी बुराई मुझे मिलेगी।'

'मैं चला जाऊँगा। मना तो नहीं किया ! तुम दूध पीलो पहले।'

शमा ने धीरे धीरे दूध पिया फिर इकबाल गिलास साफ करने के लिए बाहर चला गया और जब लौटा तो शमा ने एक कागज दिया उसे।

'यह मेरी अपनी रचना है, अपेक्षित सुधार कर लेना और मौका मिले तो कवि सम्मेलन में पढ़ देना—लो।'

'है जिन्दगी धुँआं धुँआं' इकबाल ने मन ही मन शमा की वह नज्म पूरी पढ़ डाली और फिर तरन्नुम बिठाने के लिए धीरे-धीरे गुनगुनाने लगा। 'काफी अच्छी रचना है। मैं इसी से मुशायरे का आगाज करूँगा।'

'क्या सच ?' शमा महीनों बाद मुस्कराई।

'बिलकुल।' इकबाल भी मुस्कराया तो बीमार आँखों में चमक उभरी।

'काश ! मैं भी सुनती तुम्हें पढ़ते हुए।' शमा ने गहरा सांस खींच कर बदन ढीला छोड़ दिया। फिर कुछ सोचकर आहिस्ता से बुदबुदाई— 'ऐसा नहीं हो सकता कि वफा अपनी टेप भरले और फिर मुझे सुना दे मेरी बड़ी तमन्ना है इकबाल।'

'यह मुश्किल नहीं है। मैं वफा से कह दूँगा—बस !'

'शुक्रिया। इकबाल तुम काफी दयावान हो। शमा एकदम खुश हो गई।

मैं चलूँ शमा उमदा आती ही होगी खाना लेकर

'अच्छा ! लेकिन ध्यान रहे कल का मुशायरा तुम्हारा होना चाहिए।

कोशिश करूँगा। वैसे सुना है उदयपुर से आई एक मोहतरमा को कविता में कमाल हासिल है। वह भी तुम्हारी तरह फ्रेस कैंडीडेट है।'

'कोई भी हो। तुम्हारे मुकाबले टिकेगा नहीं मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ।

'अभी से !' इकबाल मुस्कराया और फिर मुड़कर वार्ड से बाहर चला गया।

इकबाल के बाहर जाते ही करवट बदल कर शमा ने आँखें बन्द करली। उसकी आँखों के आगे चलचित्र की तरह बीते दिनों की कई कतरनें आ-जा रही थीं। वह इकबाल के समीप बिताए क्षण और जैदी के साथ गुजारे लम्बे समय की तरह-तरह से तुलना करने लगी। शमा सोच रही थी कि इन्सान की सही पहचान वह क्यों नहीं कर पायी !

इकबाल को नसीहत का मसौल बनाना। उसे गलत समझना और खत का पुरजा-पुरजा करके उसी के मुँह पर बदले की भावना दर्शाते हुए फेंकना आदि कितनी ही बेवकूफियाँ उसे कचोटने लगी। आज वह किस तरह सहयोग कर रहा है। हाँ ! मैंने इस फरिश्ते को पहले क्यों नहीं समझा। यही है सच्चे रूप में सच्चा राष्ट्र निर्माता जो मुझ जैसी ध्वस्त इमारत का पुनर्निर्माण कर रहा है। इकबाल न होता तो यह सब इतनी आसानी से हो जाता ?

और जैदी ! वह तो दरिन्दा निकला अब कहाँ गया खुद और कहाँ गया उसका प्यार ! उफ ! या खुदाया—जिन्दगी तोड़ने के कितने हसीन बहाने और उसे बनाने के कितने अप्रत्याशित सहारे हैं यहाँ। दुनिया में बेशक बुरे हैं तो भला की भी कमी नहीं शमा देर तक इस सत्य असत्य और नेक बद की विवेचना में खोई लेटी रही। उसकी तन्द्रा तब टूटी जबकि नर्स ने उसे दवा के लिए छुआ।

कहाँ खोई रहती हैं आप ?' सिस्टर मुस्कराई।

'कहीं तो नहीं' शमा झेंपी फिर झेंप मिटाने की गरज से झट बोली—'कितने दिन और ठहरना है मुझे अस्पताल में ?'

कुछ नहीं कह सकती मैं तो। जब तक डाक्टर चाहेगा रहना ही है—इस बेड पर यानी पूर्ण स्वस्थ होने तक क्यों कुछ परेशानी ?'

परेशानी तो नहीं सिस्टर। उससे तो नजात मिल गई।' शमा हँसी 'लेकिन मेरी पढ़ाई गोल हो रही है।'

'कुछ नहीं अस्पताल म ऐसी चिन्ता न किया करो। एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत ! ठीक हो जाओ। बयर कर लेना स्टडी। लो यह टबलेट गिन लो।' नर्स ने शमा के हाथ पर गोली रखदी। इसके बाद यह कैपसूल लेना है।'

शमा ने दवा ली। नर्स ने पानी पिलाया और मुस्कराकर अगले बेड की तरह बढी तो मरीज बोली—'वह इन्जेक्शन सिस्टर ?'

'भूली नही हूँ। वह आज नहीं कल लगेगा।' और अब सिस्टर अगले बेड पर सक्रिय थी।

वफा आई तो शमा ने शास्त्रीनगर वाले मकान के किराये के बारे म उससे पूछ लिया। वफा बोली—'मैं शास्त्रीनगर गई थी और मकान मालकिन से बात की तो बताया—जैदी साहब ने मई तक का अग्रिम दे रखा है।'

'अच्छा!' शमा को आश्चर्य हुआ। 'वह खुद कब आयेगा ?'

'एक दिन बातो बातो म बडे बाबू से पूछा था मैंने। वह बोला। जैदी लम्बी छुट्टी पर है। और कुछ नही 'कहा जा सकता बस।'

'वह बहाना बनाए छिपा बैठा है। या क्यो नही जाता ! या यह भी मुमकिन है कि मुझे लेकर मिया बीवी मे झगडा बढ जाए और मामला कोर्ट कचहरी तक जा पहुचे। कारण उसकी पत्नी काफी गुस्सैल थी।'

'तुम छोडो भी। या इन्तजार है ?' वफा व्यग्य से मुस्कराई।

'मेरी बला से। जहन्नुम मे जाए।'

'ठीक है।' वफा ने बात बदली। 'इस बार साहित्यिक प्रतियोगिताएँ तो खूब विलम्ब से हो रही हैं।'

'सब परिस्थितियो पर निभर हैं। फिर ये सफल भी कहाँ हुई ?'

वह तो तुम्हारे 'मुता' के सदके। सनम हम डूबेंगे तुम्हे भी ले डूबेंगे। खूब बरबादी लाया तुम्हारा 'मुता।' वफा ने मुँह बिसूरा तो शमा हँसी।

'जले पर नमक छिडकने की तुम्हारी आदत कब छूटेगी वफा ?'

'तुम्हे बुरा लगा क्या ? लो हम तो अभी छोड देते हैं।' वफा ने हाथ नचाये।

'श् श् डॉक्टर राऊंड पर आ रहा है।'

'अच्छा !' वफा एक सच्चे तीमारदार की तरह सम्भल कर बैठ गई।

15 जनवरी को शमा को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। हालांकि वह अब भी 'रक्ताल्पता' के कारण काफी कमजोर थी। फिर भी इतनी नही कि बैड पर पडी रहे। अब ताकत की दवाइयां शेष रही थी जिन्हें चलते फिरते भी लिया जा सकता था।

कॉलेज मे न जाने कैसे बात फैल गई कि शमा ने गर्भपात करवाया है और जैदी कहां गया कोई पता नही। कॉलेज मे हो रही इन चर्चाओ की भनक शमा को होस्टल मे पड चुकी थी। फिर भी वह आई। इकबाल और वफा जैसे साफ किरदारो का सहारा ही अब तो उसका मजबूत सम्बल था।

यह पहला दिन उसे चुभते हुए गुजरा। आठवें कालाश तक सभी उसे अजीब नजरो से घूरते रहे थे। कभी सहेलियो के हजूम के हजूम उसे घेरे रहते वहां आज वह किसी अजविन्न वस्तु की तरह अलग थलग सी खडी थी। हां, औपचारिकता वश एक आध ने खैरियत जरूर पूछी। पर शमा के लिए यह अनुभव असह्य साबित हुआ। शमा लायब्रेरी की सीढियो के पास पीठ फिराए खडी थी कि पीछे से कुलसूम ने उसका कंधा पकडा। बहुत दिनो बाद आई हो, जी नही लग रहा न ?'

'नही तो। मैं तो यो ही सोच रही थी कि लायब्रेरी जाऊँ या नही।' शमा फीकी हँसी हँस गई।

तुम बीमारी के कारण काफी पिछड गई। प्रिंसीपल से बात करके साइकोलोजी प्रेक्टिकल्स कर लो। तुम्हारा सेकंड सेसनल टेस्ट भी तो गया। सत्रह तारीख तक ई एम एम जी के ऐसेज भी जमा करवाने हैं।'

—'सजग करने और सुझाव देने के लिए तुम्हारा शुक्रिया—कुलू। मैं सब समझ रही हूँ पर किया क्या जाए। तबियत अब भी दुरुस्त कहाँ है।

मैं तो सची, आराम करना चाहती हूँ। तू वफा से चाबी ला दे वह प्रेक्टिकल मे बैठी है। मेरा तो जी घबरा रहा है। होस्टल जाऊंगी मैं। न जाने क्यो यह भीड़ अब नहीं सुहा रही।

22 जनवरी को एनुअल फंक्शन था। पर शमा उसमे पार्टीसिपेट न कर सकी। फिर गणतन्त्र दिवस के दिन भी उसकी अनुपस्थिति सबको अखरी। भाटिया तब खिन्न हो गया और 'मुता' की इस तथाकथित व्यवस्था पर उसे एक बार फिर सदेह हुआ। लेकिन वह चुप रहा। मुसलिम रीति रिवाज उसके वश के न थे।

शमा के लिए इकबाल ने वास्तव मे दौड़धूप की और सभी विषयों के ऐसैज तैयार करवाए। कुछ स्वयं ने, कुछ वफा ने। कुछ कामिनी ने घसीटे और जसे तैसे एन वक्त पर जमा करवा दिए। लेकिन यह खाना पूर्ति थी। एक प्रतिभावान अध्यापिका के निबन्ध तो ये कतई न थे।

इसे शमा ने महसूस किया और इकबाल के बहुत समझाने के बावजूद वह नर्वस हो चली। एबोसन के कारण हीन भावना से ग्रस्त थी ही। अत उपस्थिति देने के लिए वह कॉलेज आती और फिर लौटकर होस्टल मे आ जाती। अब यही दिनचर्या थी उसकी। प्राध्यापक उसे बीमार मानकर विचार नही कर रहे थे तथा भाटिया भी ध्यान नही दे रहा था।

होस्टल मे तन्हा पडी शमा का जी खराब होता तो वह वफा की टेप खोल लेती और कविता प्रतियोगिता की रेकार्डिंग सुनती। इकबाल की आवाज मे अपनी नजम सुन कर वह अभिभूत हो उठती। उदयपुर वाली नाज जो द्वितीय रही थी कि कविता भी उसे मधुर मार्मिक लगती। शमा सोचती—अगर मैं स्वस्थ होती तो नाज से दोस्ती कर लेती। और ऐसे ही विचार उसका अन्तर मथते रहते थे।

शमा के वीतराग से परेशान होकर एक दिन इकबाल ने कहा—ऐसे कैसे चलेगा। तुम अकेली होस्टल में पड़ी रहती हो। यह ठीक नहीं है। बुरा न मानो तो मेरे घर चलो। वहाँ हर वक्त तुम्हें उमदा का

साथ मिलता रहेगा। खाने पीने और दवादारू की भी सहूलियत रहेगी।'

वहाँ बैठी वफा ने भी सहमति दर्शायी। 'बुराई क्या है! या तो कॉलेज आया करो वरना अकेली यहाँ विचारों में पड़ी रहोगी तो तनाव घटेगा कैसे ? फिर इकबाल कौन पराया है ?'

बात शमा के समझ मे आ गई और वह होस्टल से सरदारपुरा स्थित उमदा के घर आ गई थी। हालांकि अब कोई दुविधा नही थी फिर भी उसकी उदासी नही गई।

इधर फाइनल लेसन सिर पर थे। इकबाल क्या करता। शमा मे तो सुधार नजर नही आ रहा था अन्त वह खीज सा उठा—'देखो शमा! यह कातरता मुझे पसन्द नही है। भावुकता छोड कर यथार्थ को स्वीकार लो। जो घट चुका उसे भूलना तो है ही। फिर तुम भूल क्यो नहीं जाती। कॉलिज मे तुम्हारे इम्प्रेशन को घुन लग रहा है और लोग बेतुकी बातें बनाने लगे हैं। लिहाजा रोती सूरत पर पुन ताजा मुस्कान लाओ और सबके मुँह बन्द करदो।'

'मैं क्या करूँ ? कितना टूट चुकी हूँ। क्या सम्भलते वक्त न लगेगा ?'

'पर उस लगने वाले वक्त का इन्तजार कौन करेगा! कोर्स तो अपने आखिरी दौर से गुजर रहा है।'

'कोर्स ? इसे गुजरने दो। मुझे कोर्स से अब क्या लेना देना। इकबाल! मेरा भविष्य तो अन्धकार मे डूब चुका है।

'ओह! क्या मनहूस बातें करती हो। क्या जैदी की मुट्ठी मे तुम्हारा भविष्य था ? मेरे पास एक आइडिया है। एक ऐसी योजना है कि जिसे अपना कर तुम चाहो तो शानदार सम्मानजनक जीवन जी सकती हो।' इकबाल सीधा होकर बैठा। 'क्या बताऊँ ?'

'बताओ तो, क्या योजना है।' शमा ने इकबाल की आंखो में देखा।

'मरहूम जुबेर साहब इतना कुछ छोड गए हैं कि उस सम्पत्ति से तुम

एक विद्यालय खोलकर सरकारी सहायता से उसे ठाट से चला सकती हो। तुम्हारे पास एक आमों का बाग है। बड़ा मकान है। पैसा है—और प्रतिभा भी है। फिर बच्चों के प्रति तुम्हारे मन में अपार दुलार है जो किसी अध्यापक की पहली योग्यता होनी चाहिए। हमारा यह भाटिया प्रिंसीपल मैट्रिक में चार बार फेल हुआ था पर लगन तो देखो कि आज इतने बड़े संस्थान का सर्वेसर्वा है। नम्र प्रतिशत एड उठाता है यह।'

इकबाल शमा के चेहरे की प्रतिक्रिया देखने के लिए रुका और फिर उसे निर्विकार देखकर आगे कहने लगा—'ऐसा करके तुम व्यस्त रह सकोगी और व्यस्तता सो समस्याओं की एक दवा होती है। भलाई का काम होगा और मुस्लिम बच्चों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण कर पाओगी। तुम ऐसे पाठ्यक्रम लागू करना जो उन्हें इन अन्ध विश्वासों से लड़ने की क्षमता व सूझ प्रदान कर सके। तब इस बहाने अनेक मुस्लिम अभिभावकों से भी तो सम्पर्क होगा और तुम अपना मिशन चला सकोगी। फिर सबसे बड़ी बात आत्म संतोष भी तो मिलेगा।'

'यदि ऐसा न कर पाऊँ तो?' शमा मुस्कराई।

'तो तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हें जंजाल में जकड़ लेगी। दूर के रिश्तेदार भी धन के लालच में इद गिर्द आकर षड्यन्त्र रचेंगे। अतः इस सम्पत्ति को काम में लगा देना अक्लमंदी का काम होगा—शमा।'

तुम्हारी योजना नेक और उत्साहवर्द्धक है। लेकिन मैं अकेली हूँ। मेरी पीठ तो सदा उघाड़ी ही रहेगी न! पुरुष का सहारा तो चाहिए ही। और जब तक वह न मिलेगा मैं समाज में घूम रहे भेड़ियों से कैसे बचूँगी। जानते हो, बेसहारा नारी को क्या करेंगे ये? ये तो हजारों हजार शादी, मुता के पैगाम भेजेंगे और मना किया तो तंग और बदनाम करेंगे। तब मैं स्कूल चलाऊँगी कि इनसे निबटूँगी?

'शादी जरूरी है?

इस समाज में तो कम से कम बहुत ही जरूरी।'

'अच्छा !' इकबाल उठा और भीतर कमरे मे से एक फोटो उतार कर लाया—'देखो यह पसद है ? पहचानो कौन है यह?'

'यह तो तुम्हारी पांच सात साल पहले की तस्वीर है।

नहीं यह मेरा छोटा भाई हनीफ है। एम एस सी कर रहा है। बोलो ?'

'क्या बोलूँ ? अचकचाकर शमा ने तस्वीर रखदी।

'पसद है तो मैं अपने भाई को बिना दान दहेज के तुम्हारे लिए तैयार कर लूँगा। वह मेरा कहा टाल भी देगा तो अपनी भाभी का हरगिज न टालेगा। क्यो उमदा मैं ठीक कह रहा हूँ न ?'

आप हमेशा ठीक कहते हैं। हनीफ वही करेगा जो मैं चाहूँगी। तुम मुझे पसद हो ही। चांद सूरज की जोडी खूब जँचेगी। शमा, हाँ करदो अल्ला के नाम से।' उमदा मुस्कराई।

लेकिन शमा उलझन मे पड गई। झुकी गर्दन से वह अब फर्श ताकती बैठी थी क्या जवाब दे।

फाइनल लेशस शुरू मे जब फरवरी माह की गुनगुनी सर्दी थी। शमा ने एक बार फिर पाव जमाए और उत्साह के साथ मैदान मे उतरी। उसे अपनी खोई साख जो जमानी थी।

कानपुर विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ श्री मनीशदेव सुपरवाइजर बन कर महाविद्यालय मे आए। एन सी ई आर टी दिल्ली की भी एक टीम आई हुई थी। और फिर फाइनल लेशन शुरू हुए तो कालेज के सभी प्रशिक्षणार्थी व्यस्तता के कोहरे म डूब गए। इन्ही के हाथ साइकोलोजी के 'वाई वा' भी होने थे अत सुबह शाम की भी खबर न रही। हाँ कुछ मटरगश्ती करने वाले अब भी लापरवाह थे।

श्री मनीशदेव और एन सी ई आर टी के दो विशेषज्ञ कोई तीस मिनट तक शमा की क्लास मे खूटे से गडे रह। तो माटिया दौडा आया। और क्लासें भी तो हैं उन्हे कब देखिएगा ?

'ठहरो प्रिंसीपल साहब ! पाठ का आनन्द आ रहा है। देखो न, क्या कमाल हासिल है पढाने मे।'

एन सी ई आर टी वाला बोला। 'मेरी भविष्य वाणी है कि यह शिक्षा विभाग की एक बेजोड प्रध्यापिका साबित होगी—क्या कविता पढाई है। वाह ! दीवारें बोल उठी।'

शमा के प्रति यह टिप्पणी सुनकर भाटिया गदगद् हो उठा। और उनके चले जाने के बाद शमा की पीठ ठोकते हुए बोला - काग्रेच्युलेशन ! तुम्हारा पाठ बेहद सफल रहा। अब क्लास छोड दो। मुझे ही नही पूरे कॉलिज को गर्व है तुम पर—शाबाश ! जाओ अगले पाठ की तैयारी करो और जो टीचिंग एड्स चाहिए वे अभी प्रभारी से 'इश्यू' करवा लेना।'

शमा ने भाटिया का आभार प्रकट किया। फिर शिक्षण सामग्री समेटी और बच्चो को दुलार से देख कर कक्षा से बाहर हो गई। इगलिश स्कूल वालो ने आज पहली बार हि दी कविता मे अलौकिक रसानुभूति की।

शमा जब होस्टल पहुँची तो बेहद खुश थी। उसने खाना खाया, दवा ली और अगले पाठ की तैयारी करने बैठ गई। वफा ने लेटे-लेटे ही उसे देखा—'माना कि पाठ पढाने मे तुम लासानी हो पर इतना भी क्या कि शरीर का ध्यान भी न रखो। खाना खाया है, कुछ कमर सीधी कर लो भई !'

'नही, अभी मेरा मूड है। फिर न मालूम क्या हो। मुझे टोको मत। कर लेने दो लेशन तैयार। शमा ने कुर्सी खीची और मेज पर झुक कर रजिस्टर खोल लिया। 'यह लेशन परसो तो देना ही होगा।

'ठीक है भई ! एक एक करके सभी रिकार्ड तोड दो। हम तो समझे थे कि कुछ हमारे हिस्से भी छोडेगी।' वफा ने व्यग्य कसा पर शमा ने ऊपर नही देखा। तो वफा ने पलकें मू द ली।

तभी होस्टल का चौकीदार आवाज देकर ऊपर आया। शमा, आपको होस्टल वाला परवेज बुला रहा है। शास्त्री नगर वाले मकान की चाबी पूछ रहा है वह।'

'क्या ?' शमा के हाथ से पेन छूट गया। बढ़ती धड़कनों पर काबू पाकर वह बोली—'कौन है ?'

'परवेज !'

'परवेज ?' और जब वह चाबी लेकर नीचे आई तो बाहर पेड़ों के झुरमुट में सचमुच परवेज खड़ा था। उसने ज्यादा बात नहीं की। हाथ बढ़ाया और बोला—'चाबी ?'

'चाबी ! मगर किसलिए ?' शमा के पैर थरथरा रहे थे।

'जैदी मंगवा रहा है, अभी अभी गाड़ी से आया है।'

'इतने दिनों बाद लौटने की क्या जरूरत आ पड़ी उसे !'

'लेशन नहीं देने हैं क्या ? फाइनल लेशन न हो तो फिर एकजाम में कौन बैठने देगा जनाब को।' और चाबी लेकर परवेज उन्हीं कदमों वापस लौट गया। शमा हतप्रभ उसकी ओझल होती पीठ देखती खड़ी थी—'अब क्या होगा ?'

हाँफती हुई शमा जब वफा के पायते आकर बैठी तो उसकी आँख लग चुकी थी। 'वफा, उठो। नींद आ गई ?'

'अरी मुई सोने भी दे।' वफा करवट बदल कर फिर सो गई।

'उठ न, देख वह आ गया है। अब क्या होगा ?' आखिर झकझोर कर शमा ने वफा को जगा ही लिया।

गिलास में पानी ला।' जम्हाई लेकर वफा उठी और फिर ठंडे पानी के छींटे मार कर आँखें धोईं। 'अब बता क्या बात है ?'

'जैदी आ गया।' शमा ने उसे सरवर के अचानक आने की सूचना दी तो वफा मुस्कराई—तेरा अब क्या है। कोई आए कोई जाए। तेरी बला से।'

'लेकिन ? शमा ने पसीना पोंछा।

'लेकिन वेकिन कुछ नहीं तू अपना काम कर' वफा ने स्लीपर पहने और बाथरूम की ओर चली गई।

तीन बार बुलाने पर भी शमा वापस जैदी के घर नहीं गई तो वह क्रोधित हो उठा था। फिर उसे ध्यान रखने पर कैंटीन मे मौका मिल गया। शमा कैंटीन मे पहुँची तो वह भी वहाँ पहुँच गया।

'सुना है तुम काफी बीमार रही। लेकिन फायदा ही हुआ। बीमारी से उठ कर तुम पहले से कही अधिक हसीन हो गई हो। देखो तुम्हारे कपोल चमक रहे हैं। मै इनमे अपनी शक्ल साफ देख रहा हूँ।'

'शट अप! देखते नही यह कैंटीन है! बत्तमीज कहीं के।'

'कोई बात नही नाराज जो हो। दो काफी देना भई।' जदी ने कुर्सी खीच ली। शमा ने इधर उधर देखा और उठने को उद्यत हुई तो जैदी ने कलाई पकड ली।' कहाँ चल दी बैठो न। मेरी परेशानियाँ तो पूछो।'

'छोडो मुझे' शमा चीख उठी। 'अब मुझे रोकने का क्या हक है तुम्हे?'

'शोर करके हगामा खडा करना चाहती हो? और मेरा हक? जैदी विद्रूपता से हँसा 'वह भी मालूम पड जाएगा। पहले यह बताओ एबोसन किसकी इजाजत से करवाया? जैदी धृष्टता पर उतर आया था।

'क्या मतलब! शमा भी उबल पडी।

'मतलब साफ है तुम अप्रैल तक मेरी बीबी हो। ऐसे मे बगैर मेरी इजाजत तुम कुछ भी तो नही कर सकती। तुम्हारे हिमायतियो ने उलझा दिया तुम्हे।'

शमा अवाक जैदी का मुह देखने लगी।

'और जो तुमने किया है उसे भुगतना पडेगा। म गिन गिनकर हिसाब लूगा। जानती हो वह मेरी औरस सतान थी। भ्रूण हत्या का जुर्म कौन सिर पर ले सकेगा! क्या तुम? क्या तुम्हारी वफा? क्या तुम्हारा इकबाल!'

और झडप सुनकर एकत्र होती भीड को देखते हुए जैदी वहाँ से चला गया। शमा के तो पाँवो तले की जमीन ही खिसक गई। इस नई उलझन

की तो वह कल्पना भी न कर सकी थी।

'काफी।' दो प्याले सामने देखकर वह समझी। सामने मीरा और मोहनी खडी थी 'लो काफी पीओ। म अभी अभी पी चुकी हूँ' शमा ने झेंपते हुए दोनो प्याले इस हाथ ले उस हाथ उन दोनो को थमा दिए। वे दोनो मुस्कराई। 'क्या नोक झोक चल रही थी शमा!'

'कह रहा था, प्रिंसीपल से कह कर मेरे लेशन करवादो। मैं भला किस मुँह से कहूँ। इतने दिन तो न जाने जनाब कहाँ गायब रहे।' शमा ने किसी तरह बात टाल दी। मेरी तो खुद की तबियत ठीक नही।' और वह निढाल सी कुर्सी पर लुढक गई—क्या मैं अब भी जैदी की हूँ। या अल्ला यह नई उलझन कहाँ से आ गई। क्या करूँगी मैं?' पलकें बन्द किए मन ही मन अधीरता से सोच रही थी—शमा।

'किसी से निस्वत न रखकर अगर मैं पढाई से ही सरोकार रखती, कोस को कोस मान कर एकाग्र रहती तो यह मुसीबत क्यो सिर पर आती? आज बी० एड० कर रही इन तमाम अध्यापिकाओ मे ही मैं सर्वाधिक परेशान हूँ और मेरा अस्तित्व दाव पर लगा है, अब? जैदी अपना अधिकार प्रयोग करेगा तो?' शमा की आँखे भर आई। बेबसी का अजीब आलम था। सो उसने जैदी से मन्नत करने का विचार किया और वह उसके पास गई।

मगर जैदी कॉलिज कम्पाउड मे इस मुद्दे पर बात करने को तैयार न था। वह कहने लगा।'कुछ कहना या समझना हो तो मेरे साथ घर चलो। यहाँ तेरे हिमायती अभी बीच मे टपक पडेंगे और विवाद हो सकता है। शमा, मैं नही चाहता कि यहाँ तुम्हारी किरकिरी हो। आओ घर चलते हैं।

शमा अनिर्णय की स्थिति मे लुटी सी खडी रही।

'क्या सोच रही हो! इकबाल से सलाह करनी है?' जैदी शमा के करीब आकर चाबियो का गुच्छा हिलाता हुआ व्यग्य से हँस पडा।

और जिस घर को शमा सदा के लिए छोड आई थी मजबूरन आज फिर उसी म आना पडा।

जैदी ने बड़े प्यार से उसे बिठाया। उसके पापा के इन्तकाल पर अफसोस जाहिर किया और अधीर शमा की हिम्मत बढ़ाई। फिर नाश्ता लाया और अपने हाथ से जब शमा को खिलाने लगा तो उसने मना कर दिया। वह अब भी उदास थी भीतर कहीं भूचाल जो आ रहे थे।

तभी गम्भीर होकर जैदी ने कहा। 'शमी ! खुशी मनाओ कि मैं उस मरदूद से अब सदा के लिए पल्ला छुड आया।'

पर शमा कुछ न बोली। वह तो इस मकान का भीतर बाहर देख रही थी। जैदी ने लोटकर मकान को शायद फिर से व्यवस्थित कर लिया था। सफाई भी थी मगर शमा को तो वह एक खण्डहर सा लग रहा था। उसे वह दिन दिखने लगा जब जैदी और उसकी बीवी झगड रहे थे।

'मुझे मालूम है तुमने हम मियां बीवी का झगडा सुना, देखा और दुखी होकर यहां स यानी उस बाहर वाली खिडकी से ही वापस भाग छूटी। मैंने और भी बातें कही जो निश्चय ही तुम्हारी शान के खिलाफ थी मगर करता क्या ! सफाई तो उसे देनी ही थी। उस कर्कशा को शात करने के लिए यह जाहिर करना जरूरी हो गया कि मैं तुम्ह (शमा) कुछ दिनो के बाद दुत्कार दू गा। पर यह ऊपरी मन और मजबूरी की सफाई थी !

देखो शमी, मोहरम की पांच तारीख को इमाम बाडे मे उसने अपनी बिरादरी की जमात इकट्ठा करके मुझे जलील किया। उसका बाप भी बडा बगैरत निकला। कहने लगा। मैंने तुम्ह कितना दान दहेज दिया। स्कूटर, मकान और नकदी और फिर तुम कमीने निकले। यो बात बढ गई। और शमी मुझे जब यह बहाना मिल गया '

'कैसा बहाना ??' शमा होले से बुदबुदाई।

'यानी मैं उस कम्बख्त को तलाक दे आया।'

'क्या ?' शमा ने अविश्वास से उसे देखने के लिए सिर उठाया—

'जैदी यह तो बहुत बुरा किया तुमने।'

'नही शमी, म बहुत दुखी था। बरसो स परेशान। और यही

स्वभाव मुझे इधर उधर भटकाता रहा है। मैं प्यार की शीतल छाया की तलाश में था जो मुझे तुम से मिली। तुम्हारा साथ मिला तो मैंने सोचा मेरी मंजिल तुम्ही हो। सो मैंने तुम से 'मुता' कर लिया।'

'मुता ही क्यो ? शादी क्यो नही की।'

'मुता इसलिए कि मैं तुम्हें और तुम मुझे देख समझ सको। अगर हमारे विचार मिल गए तो फिर शादी अ यथा मुता की अवधि के बाद हम अलग अलग शादी मे बधने के बाद छूटना बडा टेढी बात होती है। अब सब तरह से मैं तुमसे स तुष्ट हूँ और शायद तुम भी लिहाजा हम इस मुता को स्थायी विवाह मे बदल लेंगे क्यो, ठीक है न।'

'नही, यह ठीक नहीं है। यदि तुम्हारी बीवी मे कोई कमी थी तो तुम उसे सुधारते। कम से कम कोशिश तो करते' फिर मुझे पाने के लिए ही यदि उसे तलाक दिया है तो बहुत बुरा हुआ क्योंकि एक के हित के लिए दूसरे का अहित न्याय सगत नही है।'

'कमाल है मब तुम्हे मझधार में छोड देता! मैं इतना गिरा हुआ नही हूँ शमी!'

'शुक्रिया। पर तुम मझधार म तो छोड ही गए थे।'

'नहीं, यही तो गुस्से की बात है। मैं तुम्हारा बच्चा चाहता था। कहा भी कि 'मुता' की सतान जायज होती है। तुम नही जानती कि मेरे अपनी उस बीवी स कोई सतान नहीं थी। और मैं पुत्र के लिए तरस रहा था। किन्तु तुमने बहकावे मे आकर भ्रूण हत्या की। मैं दुखी तो बहुत हूँ पर अब क्या करूँ ? जैदी हाथ मलने लगा।

'दुख न करो जैदी मैं कौन सी सुखी हूँ। लेकिन तुम्हारे पलायन ने मुझे उजाड दिया। और मैंने जान जोखिम मे डाल कर गलत काम कर लिया।'

'तुम नही करती, तुम्हें उस इकबाल के बच्चे ने बहकाया था। मैं उसे खूब जानता हूँ बडा ईर्ष्यालु है।'

'खैर। छोडो अब आगे क्या इरादा है ?' शमा ने जैदी को देखा।

'मैं जून मे यानी छुट्टीयो में तुम से शादी कर लूँगा।'

'लेकिन एक बात स्पष्ट कर दूँ। पापा की सारी सम्पत्ति मैं खैरात कर चुकी हूँ। मेरे पास पाच कपडो के सिवाय कुछ न होगा।'

'मुझे सिर्फ तुम्हारे प्यार की जरूरत है।'

'अच्छा! और अगर मैं शादी न करना चाहूँ तो ?' शमा ने जैदी की प्रतिक्रिया देखने के लिए हिम्मत जुटाई।

'क्या कहती हो ? मैंने यह सब सिर्फ तुम्हारे लिए ही तो किया है।'

ठीक है जैदी। मगर अब शादी के नाम से मुझे चिढ हो रही है। मैं सोच रही हूँ कि स्वस्थ उद्देश्य के अभाव मे पुण्य भी पाप हो जाते हैं। 'मुता' व्यवस्था पता नही ठीक ही होगी पर पुरुष वर्ग की इस मामले मे नीयत साफ नही होती। अत यह नारी के लिए अभिशाप बन जाता है। पुरुष का क्या उसकी तो पाचो घी मे होती हैं।'

जैदी आरोप बर्दाश्त नही कर सका, तिलमिला कर बोला मैं आश्चर्य मे हूँ कि बराबरी के, राजीरजा सौदे मे भी पुरुष को ही दोष दिया जाता है। जबकि स्त्री भी उतनी ही भागीदार होती है। क्या यौन सुख मात्र पुरुष ही पाता है ? हर बार हविश पुरुष पर लादी जाती है जैसे स्त्री को कोई 'भूख' उगती ही नही।

उखडो नही मेरा मकसद तो समझो !'

'मैं सब समझ गया। तुम तो शख हो जो दूसरे की फूक से बजता है। तुम्हारी नकेल इकबाल के हाथ मे जो है।

इकबाल ऐसा वैसा नही है वह तो फरिश्ता है।'

'ठीक है वह फरिश्ता और म शतान ! जैदी आपे से बाहर हो गया। शमा कुछ न बोली। उसकी स्थिति तो साप छछूदर वाली हो रही थी।'

'जैदी नाराज क्यो होते हो। मेरी हालत तो देखो। मेरा सब कुछ

लुट चुका है। इस मुता ने मेरे अब्बा को छीना, मेरी अस्मत ली। मेरी प्रतिष्ठा को धक्का लगा और स्वास्थ्य और धन लूट लिया।' बात बिगडती देख कर सरवर जैदी ने पैंतरा बदला। वह प्यार से बोला—'जो हुआ उसे भूलो। अब लाख दुखो की एक ही दवा बची है और वह है—शादी।'

'लेकिन मेरा विचार यह नही है। जैदी।'

तुम्हे यह विचार करना होगा। नहीं तो बिगाड ही होगा।'

'कौन करेगा मेरा विगाड ?' शमा का चेहरा तमतमा उठा।

'एक बीबी का बिगाड उसका शोहर कर सकता है मानी शमा को जैदी का कहा मानना ही होगा। वरना वह अपने अधिकार का प्रयाग करके बीबी को कोर्ट मे खडी कर देगा।'

जैदी ढीटता से हँसा और फिर शमा की ठुडडी ऊपर उठाकर उसकी आँखो मे झाँकता हुआ बुदबुदाया—'सच शमी। बीमारी से उठकर तुम कितनी लाजबाब हो गई हो। मेरे मन का सयम टूट रहा है करीब आओ प्लीज।' यह बात उसने दूसरी बार कही थी।

'नहो। शमा हट कर खडी हो गई। 'मुझे अब छूना नही सरवर।'

'अप्रेल तक तो छूने का हक है। आगे तुम्हारी मरजी।' और शमा को जैदी न बलात बाँहो मे भीच कर चूम लिया। किन्तु शमा तुरन्त छटपटा कर छूट गई और अपने कपोलो को पोछ कर उस घृणा से देखने लगी।

'प्यार की राह मे स्त्री जाति दो ही गुण अर्जित करती है—या तो वह बेहद प्यार करेगी या फिर बेहद नफरत। शमा तुम अब दूसरी विशेषता पर चल रही हो। पर मुझे गम नही क्योंकि यह सब किसी गैर की सीख के परिणाम स्वरूप है।

'मैं यह सब पराई सीख से नहीं, बल्कि आप बीती के कारण करने को मजबूर हुई हूँ। जैदी अच्छा रहे अब मेरा पीछा छोड दो।'

'पीछा छोडने पर अच्छा कैसे होगा? उल्टा मैं कही अमानुष बन

जाऊँगा अब मुझे तुम्हारे सहारे की आवश्यकता है। मैं कुछ गलत भी हूँ तो खुदा के लिए मुझे सुधारो। मैं कहीं का न रहा। बीबी को भी तो तलाक दे आया। शमी! मुझे हिंसक न बनाओ—प्लीज।'

'मैं मजबूर हूँ, मुझे माफ कर दो जेमी।

'ज्यादा ही कहती हो तो मैं छोड़ सकता हूँ लेकिन शर्त यह कि 30 अप्रैल तक मुता के अनुसार तुम मेरे साथ रहोगी। इकबाल और वफा से कोई बात न करोगी। अगर मुझे भनक पड़ गई तो मैं बशक एबोसन वाले मामले में तुम्हें फाँस कर पूरा हिसाब चुकता करूँगा। तब बदनामी होगी, 'मुता' व्यभिचार कहलाएगा और तुम्हें कुलटा की सजा मिलेगी।

सकते की हालत में खड़ी शमा यह सुन कर संज्ञा हीन हो गई। उस का दिमाग सुन्न पड़ने लगा। कानों में सू सू की आवाज आने लगी। फिर किसी तरह से बोली—'मैं अब चलूँगी।'

'शाम को आ रही हो न? बीबी को खाविंद की यही नेक सलाह थी कि सामान लेकर अपने घरौंदे में लौट आओ। मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा।'

इतना दबाव तो कोई शादी शुदा पति भी नहीं गाठता। फिर मुता तो मात्र ऐच्छिक समझौता है। लेकिन शमा मकड़ी के जाले में फंस चुकी थी। अतः उसे लहू का घूंट पीकर चुप रहना पड़ा। तब वह हाँ बोली न 'ना'। अन्यमनस्क सी दरवाजे से बाहर निकल गई।

बिस्तर पर लेटी शमा करवटें बदल रही थी। वफा ने लाख पूछा पर वह जवाब ही नहीं दे रही थी। 'आखिर बात क्या है? अचानक यह क्या हो गया है तुम्हें?'

मेरा पीछा छोड़ो। मुझे क्या होना है। बार बार क्या छेड़ रही हो!'

'अच्छा बाबा! खफा न हो। वफा ने अब उसे कुछ न कहा और किताब खोल कर पढ़ने बैठ गई।

शमा देर तक अन्तर्द्वन्द्व में उथल पुथल होती रही। वह आकाश से

गिरकर खजूर मे अटकी थी। क्या करे, क्या कहे ? अजीब म- स्थिति मे गुजर रही थी।

'आज इकबाल का भाई आया हुआ है। तुम्हे इकबाल ने कालेज म देखा पर तुम मिली नही।'

वफा ने यह सूचना दी तो शमा चौकी पर बोली नही। हा उसका द्वन्द्व और बढ गया था। उसने सोचा—'इकबाल का भाई यहाँ क्यो आया है ? क्या, मुझे देखने के लिए ! इक्बाल ने उससे मुझे मिला दिया तो ! और पसद करने की बात उठी तो मैं—क्या करूँगी ? और—? अप्रेल के बाद ? या अल्ला !' शमा कुछ भी तय नही कर पा रही थी। खूब फसी वह।'

वफा ने चैप्टर खत्म किया और जम्हाई लकर शमा की ओर देखकर मुस्कराई। रानी जी बहुत परेशान हो। कुछ कह भी दो।' शमा ने वफा के सवाल का जव ब न देकर अपनी बात कही। मैं किसी दूसरे कमरे मे एडजेस्ट हो जाऊं ! कई कमरे खाली पडे हैं।'

'मगर क्यो ? मेरे साथ क्या दिक्कत है ! वफा हैरान हुई।

'दिक्कत है या नही। छोडो मै एका त चाहती हूँ मुझे न टोकना ! और शमा कोनर वाले कमरे की ओर गुमसुम सी देख रही थी।

'अरे, तुम इस कमरे मे कब आ गई ?' बरामदे से गुजर रही शिवर ठिठकी। फिर दरवाजे को पकड कर खडी हो गई। 'क्या वफा से झगडा हो गया ?'

लेकिन शमा ने जवाब नही दिया तो वह भीतर आकर तख्ते पर बठ गई। 'किससे झगड आई ?'

'किसी से भी नही।' शमा अलमारी झाड रही थी।

'फिर ? शिवर के कौतूहल का ठिकाना न था।

'फिर, फिर, फिर ! यह क्या लगा रखा है तुम लोगो ने। मै पूछती हूँ मेरा पीछा कब छोडोगी। मै एकान्त चाहती हूँ, खुदा के लिए मुझे तन्हा छोड दो।'

किश्वर हतप्रभ रह गई। उससे बोलते न बना। बस चुपचाप वहाँ से खिसक ली। लेकिन आशंका ने उसे उकसाया और रात्रि मे उसने शमा को तन्हा नही छोडा। उसने जबरन बराबरी वाले तख्ते पर अपना बिस्तर लगाया और लेट गई।

किश्वर ने शमा की परेशानी को महसूस किया और जी बहलाने के लिए इधर उधर की बातें करने लगी फिर उंगली पकडते पकडते पहुँचा थाम कर प्यार से पूछा—'शमा मानसिक तनाव बडा घातक होता है। इसे क्यो बढा रही है। जो समस्या है बतादे। यहाँ तो माँ बाप भाई बहन हमी सहेलियाँ हैं।'

शमा ने'किश्वर की तरफ करवट बदली। 'मैं मजबूर हूँ किशी! उसने कुछ भी बताने से मना कर दिया है। मेरी तो जान अब उसकी मुट्ठी म है।'

'किसने मना कर दिया ?' किश्वर की समझ म कुछ न आया।

'जैदी मेरे पीछे फिर पड गया है। उसने कहा—इक्बाल और वफा से बात की तो मुझ सा बुरा कोई न होगा!

'ओह! यह बात! खैर मैं तो वफा हूँ न इकबाल। मुझे तो कहा ही जा सकता है।

आखिर शमा ने किश्वर को सारा माजरा बयान कर दिया और नेक सलाह माँगी ताकि साँप मर जाए और लाठी न टूटे।

मसला वाकई टढा था। किश्वर भी सोच मे पड गई। मगर कुछ तो बताना ही था न बताती तो वह वफा से हल्की हो जाती। लिहाजा उसने अपने दिमाग को इधर उधर खूब दौडाया। लेकिन उसकी मोटी अक्ल मे कोई अच्छा समाधान आ ही नही रहा था। फिर यह सोचकर कि चाकू नही कटेगा तो खरबूजा ही उसने शमा को अपनी अमूल्य सलाह सौंप दी।

'अगर 'मुता' स्थायी विवाह मे बदल जाता है तो सोने म सुहागा है। यह काम हो जाता है तो तुम्हारे मरहूम अब्बा की रूह पाक को भी सकून

मिलेगा। जुबेर साहब यही तो चाहते थे। और अगर तुमने इ कार किया तो जैदी बिफर सकता है क्योंकि आखिर वह भी तो अब परेशान है। फिर जो झगडा हुआ कि ढाल की पोल खुल जाएगी और जो 'मुता' आज एक धार्मिक छूट है कल व्यभिचार सिद्ध होगा। लोग यही समझेंगे कि मुसलमानो मे सेक्स के मामले मे बडा घपला है।

किश्वर कुछ ठहरी और फिर कहने लगी— देखो जग ह साई न हो और हमारी धार्मिक व्यवस्था पर आच न आए यही करना चाहिए। मेरा तो यही कहना है कि दीवार गिराओ भी तो अ दर गिराओ—तुम जैदी से शादी करलो।

शमा कुछ न बोली उसका दिमाग तो जवाब दे चुका था। वह बस किश्वर की ओर टुकुर टुकुर देख रही थी।

वह बेचारा तुम्हे पाने के लिए अपनी ककशा बीवी को तलाक दे आया। बताओ यह किस आधार पर ? तुम्हारे विश्वास पर ही न ! अब तुम उसका विश्वास तोडोगी तो ठीक कैसे होगा ! फिर उसके सतान भी नही और तुमने उसका हमल गिरवा दिया। वह इसे माफ कर रहा है यही क्या कम है। वरना शोहर ऐसे मामलो मे बीवी को भून कर रख देता है।'

'मगर मै उसकी पक्की बीबी कहा रही।

'मुताई बीबी तो रही हो न ! बात एक है ही मोहतरमा।'

'अच्छी वकील है तू। खैर और कुछ।'

और तुम यदि जैदी को अपना लेती हो तो हीन भावना से मुक्त हो जाओगी। तुमने यौन सबध बनाए पर पति ही से न ! दूसरे के साथ शादी करोगी तो मन उद्विग्न रहेगा ' हमेशा एक कचोट उठती रहेगी।'

'हे गुरुवर ! धन्य हो। और कुछ फरमाइयेगा।' शमा ह सी।

'और कुछ क्या बच्ची। तू नादान है।' किश्वर भी ह स पडी। तो यह भारी भरकम माहोल कुछ हलका हुआ।

'तू चाँद तो जैदी सूरज। तुम्हारा पहला पहला प्यार सदव जिन्द

पिसले पाँव/

रहेगा। यह भी बड़ी बात होगी।'

'जय हो! और कुछ!'

'सबसे बड़ी बात यह होगी जेनी जो निश्चय ही दुखी इन्सान रहा है तुम्हारे प्यार से सुधर जाएगा। एक मुसलमान को सुधारना क्या तुम्हारा ऐन फर्ज नहीं?'

'शायद है। और कुछ कहिएगा?'

'और अंतिम तक यह है कि तुम सौभाग्यवती रहोगी क्योंकि यों तुम्हारी जिन्दगी में एक ही पुरुष का प्रवेश होगा। इस निरन्तरता के कारण 'मुता' जैसी कटुता को भूल जाओगी और लगेगा यह विधिवत शादी ही थी।'

'तुम्हारे तर्क ठीक तो हैं मगर फिर धोखा हो गया तो!' शमा उठ बैठी। 'आज 'विशी' कुछ गर्मी भी ज्यादा है!'

'परेशान व्यक्ति को गर्मी ही महसूस होती है। रही धोखे की बात। सो ऐसा लग नहीं रहा। यदि ऐसा होता तो जेनी अपनी बीबी को तलाक क्यों देता? वह बिना तलाक लिए ही अप्रैल तक तो तुम्हारे पर हक रखता ही था। फिर तू बच्ची तो नहीं। कुछ सभल कर रहना। शादी से पहले हाथ न लगाने देना।'

'वह मानेगा नहीं। मुता में सब कुछ जो होता है।

'फिर भी बीमारी का बहाना बनाना। कहना डाक्टर ने मना किया है मैं तो अब तुम्हारी ही हूँ सब्र रखो न! शायद मान जाएगा। अब शादी से पूर्व समर्पण घातक होगा--समझी!

'समझ गई।'

'तब ठीक मुझे नींद आने लगी है तू भी सो जा। टेनसन कम ही होगा।' किश्वर सो गई पर शमा की आँखों में नींद घुलते, घुलते—घुली।

ऊहापोह की स्थिति से सोई शमा को सपनों ने घेर लिया। उसने देखा—'ब्लेक बोर्ड पर चाक से बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है—'मुताई बीबी—शमा' उसने पीछे मुड़ कर देखा तो पीठ वाले तख्ते पर लिखा पाया—

'गमपात।' ओह घबरा कर वह सबसे पीछे रखी तीन कुर्सियो मे मध्य वाली पर बैठी कि दो युवक लपके हुए आए और शमा के अगल बगल वाली कुर्सियो पर बैठ गये। वे बहुत भयानक लग रहे थे।

शमा भय से कांपने लगी। तभी एक बोला—'इक्बाल इसे अपने भाई के लिए इसलिए फांस रहा है कि जुबेर साहब की सारी सम्पत्ति उसे हासिल हो सके। वह चालाक और कमाल काइयाँ हैं।'

'छोड यार! इसका कुसूर तो गमपात है। हां! तेरा बच्चा!'

'मेरा कहा था? वह तो अवैध गम था। न जाने किसका'

शमा ने पलट कर देखा यह जैदी कह रहा था। 'नही!' वह एक दम चीखी तो किश्वर हडबडा कर उठी शमा! क्या बात है?'

फिर उसने बढकर शमा को झकझोरा, 'क्या डर गई?'

'हा ऽ ऽ मैने एक भयानक स्वाब देखा है। बहुत ही बुरा।'

शमा इधर उधर देखने लगी तो किश्वर ने बत्ती जलादी और उसे पानी पिलाया।

'पगली! सपनो से कैसा डर! सपने तो सपने ही होते हैं। इनका वास्तविकता से क्या सबध!'

लेकिन शमा चुप रही। उसने अपनी हथेलियो को चूमा और फिर होठो ही होठो से कोई कलाम पढती हुई पुन लेट गई।

और अगले दिन शमा किश्वर के समझाने पर सपने के भय से जो भी हो, मरे मन से वापस सरवर जैदी की शरण मे चली गई। यह उसकी मजबूरी थी जिसका जैदी फायदा उठा रहा था।

शमा अब वफा से और इकबाल से कतराया करती है। ऐसा न हो कि जैदी नाराज हो जाए और उससे फिर गिन गिन कर बदला ले।

उधर इकबाल और वफा भी कम हैरान न थे। उन्हें भय था कि शमा फिर पांवो मे कुल्हाडी मार लेगी। पर उन्होने उसका पीछा नही

किया। कुछ पूछताछ भी नहीं की। क्योंकि उसका जानबूझ कर कतराना और बिना पूछे ही वापस जैदी ने यहाँ चले जाना उन्हें अखरा था।

शमा चाहती थी कि वह कॉलेज आए ही नहीं। पढ़ाई तो अब घर पर भी की जा सकती है। कॉलेज में कभी वफा ने पकड़ कर कुछ पूछ लिया तो! अत वह एक दिन प्रिंसीपल के चेम्बर में गई।

'मे आई कम इन सर?'

'यस, कौन शमा? आओ।' भाटिया मुस्कराया—'क्या है?'

'कुछ नहीं सर! यों ही। मेरी तबियत ठीक नहीं चल रही। क्या मैं यहाँ न आकर घर पर ही तैयारी करती रहूँ। आप इजाजत दें तो!'

'हम पाँच अप्रेल से प्रिप्रेशन लीव कर रहे हैं न?

'लेकिन सर! अभी कुछ दिन शेष रहते हैं?

'अच्छा तो तुम वहीं तैयारी करती रहो। वैसे ध्यान रखना बीमारी की वजह से तुम काफी पिछड़ी हो।'

'आप निश्चित रहें। मैं कोई कसर न रहने दूँगी।

'तब ठीक। जहाँ ज्यादा सहूलियत और साधन हो वहीं अभ्यास करो।'

'थैंक्यू सर!' शमा विनम्रता से झुकी।और बाहर निकल आई। उसने जो चाहा वही हो गया था। अब शास्त्री नगर न वफा आएगी न इकबाल।

चार अप्रेल तक यह सेसनल टैस्ट हो गए। और फिर,5 से 16,तक प्रिप्रेशन लीव घोषित हुई तो शमा ने राहत की सास ली। यह टेस्ट उसने नहीं दिया क्योंकि यह जरूरी नहीं होता।

यूनिवर्सिटी ने थ्योरी एक्जाम 17 अप्रेल से 25 तक निर्धारित किए। एक स्पेशलाइजेशन का ऐच्छिक पेपर 28 को तय था। परीक्षा की तैयारी में अब सभी रात दिन एक करने लगे। किसी का किसी को खबर न थी।

और आनन फानन मे 25 अप्रेल को सातवाँ परचा प्रात 10 बजे खत्म हो गया। अब केवल 28 तारीख वाला बचा था जो जरूरी भी न था। स्पेशलाइजेशन मे कोई आठ विषय थे। और अलग अलग अपना अलग 2 विषय वाले थे। जो पास हो गया उसका विषय सर्टिफिकेट मे मेशन कर दिया जाता और जो फेल होता या परीक्षा ही नहीं देता उसका कालम छोड दिया जाता। बाकी बी एड परीक्षा फल पर इसका कोई प्रभाव नही पडता था। अत टीचस इसे महत्त्व नहीं दे रहे थे।

सेसन की समाप्ति के इस अन्तिम दौर में अब बिछुडन का पूर्वाभास सभी को होने लगा था। अध्यापक अपनी बुक बैंक की किताबें जमा कराने लगे और यह कहते हुए खूब स्नेह से मिलने लगे कि अब न जाने पुन कब मिलना हो। चाय और नाश्तो के दौर चलने लगे थे।

शमा ने भी जून मे अपनी शादी के बारे मे इकबाल और वफा को छोडकर सबको सूचित किया। सहेलियो को पता नोट कराया और शादी मे शिरकत की दावत दी।

कामिनी 'मुता' की तारीफ करने लगी। 'यह ठीक व्यवस्था रही। चार छह माह साथ रहकर एक दूसरे को खूब जाँच परख लिया जाए और फिर शादी।'

शमा मुस्कराती इठलाती यहाँ वहाँ घूम रही थी। और जब काफी देर बाद कॉलेज से बाहर निकली तो जैदी का स्कूटर वहाँ नही था। 'कहीं गया होगा, अभी आ जाएगा आ कैंटीन मे बैठती हैं' कामिनी उसे वापस भीतर ले गई। 'उसे भी तो अब सब से मिलना है।'

'तभी तो बाहर गया है।' शमा इतजार करने के लिए बैठ गई लेकिन जब दो बज गये तो वह उठी और परेशान सी सिटी बस में होती हुई शास्त्रीनगर पहुँची।

जब वह सीढ़ियाँ चढ कर आगे बढ़ी तो उसे आश्चर्य हुआ। दरवाजे पर ताला झूल रहा था। 'क्या यहाँ भी नहीं पहुँचा ?' वह सोचती हुई इधर उधर दृष्टि दौडा रही थी कि मकान मालकिन आई। उसने शमा को

पिछले पृष्ठ/1

चाबी दी और कहा—'साहब जरूरी काम से बाहर गया है। उसके साथ एक महिला भी था।

शमा ने धड़कते दिल से दरवाजा खोला और भारी मन से भीतर घुसी। सामने मेज पर पेपरवेट के नीचे दबा एक सफेद लिफाफा देखकर, उसने उठा लिया। लिफाफे में एक छोटा पत्र था—

"'शमी, मैं आवश्यक काम से बाहर जा रहा हूँ। तुम मकान में अकेली मत रहना। होस्टल चली जाना। वैसे अब हमारे 'मुता' की भी अवधि समाप्ति पर है। 28 तारीख वाला पेपर मैं नहीं दूँगा। हाँ उस दिन तक वापस जोधपुर लौट सकूँगा।'

—तुम्हारा जैदी।

सीधे खड़े वृक्ष की एक ही वार में जैसे सभी जड़ें काट डाली जाएँ और वह भरभरा कर जिस अवस्था में जमीन पर गिरता है, शमा भी उसी तरह चकरा कर फर्श पर ढह गई।

देर बाद जब उसके होश ठिकाने हुए तो देखा—वहाँ जैदी का एक भी सामान नहीं था। शमा का कलेजा मुँह को आ गया और वह पागलों की भांति खड़ी होकर दीवारों से बात करने लगी। किंतु उसका यह मौन प्रलाप किसने सुना? झरती आंखों से उसने अपना सामान खुद उठाया गोया अपनी मय्यत उठा रही हो। लेकिन बोझा उठा नहीं। उसने एक बार उस सामान को बिखेर दिया और घूरती बैठी रही।

फिर एलबम पर दृष्टि पड़ी तो तस्वीरें निकाल निकाल कर तोड़ी-मरोड़ी और फाड़ी। इसके बाद पेपरवेट उठाकर दीवार पर टंगी जैदी की फोटो पर दे मारा। वह निर्जीव फ्रेम भरभरा कर फर्श पर आ गिरी और बिखर गई। कांच के टुकड़े ही टुकड़े हो गए।

'दगाबाज! तूने मेरे साथ दगा की।' आंसुओं से तर शमा के पतले अधर हिले। वह देर तक जैदी की तस्वीर पर मुक्के मारती रही और फिर हांफ कर दीवार से टिक गई। उसकी आंखों में विभिन्न स्थानों पर जदी

का प्रेमालाप आता जाता रहा। प्यार का वह पहला दिन और आज का यह दिन।' शमा भू भू रोने लगी। विवाहपूर्व मान्यता प्राप्त यौन संबंधो की परिणति थी यह।

28 तारीख को बी एड का स्पेशलाइजेशन का परचा दस बजे खत्म हुआ तो प्रशिक्षणार्थी अध्यापक तावड़तोड़ क्लीयरेंस सर्टिफिकेट लेकर अपने अपने घर गांवो को दौड़ने लगे। बहुतो का तो प्रयास दो वाली मेल पकड़ने का था। कोर्स हो या कॉलेज छूटते ही सब भागने की सोचते हैं। टीचर्स ने हिसाब किया, किताबें वगैरह जमा कराईं, काशन मनी ली और नौ दो ग्यारह हुए।

इकबाल यूनियन कक्ष पर भीड़ देख कर उधर गया। अध्यक्ष रघुवीर अपने साथियो सहित वहाँ प्रभारी से भड़ा हुआ था।। क्योंकि इस सत्र की पत्रिका अंतिम तारीख तक छपी नही थी।

'हमे आप अपने एड्रेस दे दें।, पत्रिका छपते ही भेज दी जाएगी।'

'पिछली साल की भेजा आपने? वह नही छपी तो यह क्यो छपेगी?'

'यार मारो गोली। ये हर वर्ष मैगजीन की फीस डकार जाते है?'

'क्यो डकार जाएं! हमारी कमजोरी है यह।'

'है। जरूर है। चलो प्रिंसीपल के पास। और रेला आगे बढ गया तो वफा इकबाल के पास आकर बुदबुदाई।

'मैं जा रही हूँ। भाईजान आ गए मुझे लिवाने। लो मेरा पता यह है। कभी खत दोगे न!'

'जरूर दूंगा। पर वह शमा?'

'होस्टल मे ही पड़ी है। मैं क्या करूँ बोलती तो वह है नही। अभी आबेदा को छोड़ आई हूँ उसके पास। संभालना—अच्छा खुदा हाफिज' वफा की आँखें नम हो उठी। 'तुम खूब याद आओगे। उमदा भाभी को सलाम कहना अच्छा।'

और मटकी हिलाती हुई शमा भीड़ में खो गई। इकबाल बुत सा वहीं बुत बना खड़ा रहा। लोग प्रिंसीपल के सामने शोरगुल कर रहे थे कि वह सोते से जागा—'भाओ होस्टल चलें। अब शमी की स्थिति सभालनी होगी।'

इकबाल और उसका साथी होस्टल पहुंचे।

'तुम यहीं ठहरो। मैं ऊपर जाता हूं जब बुलाऊं तो आना।' इकबाल सीधा ऊपर गया। आज वीमेन होस्टल में चौकीदार भी न था क्योंकि करीब करीब सभी अध्यापिकाएं होस्टल छोड़ चुकी थीं।

जलती दुपहरी थी वह। सूने होस्टल की खुली, अधखुली खिड़कियां सिर भिड़ा कर 'खटाखट' का शोर कर रही थी। गर्म लू भरी हवा के जोर से गलेरी का कचरा आवारागर्दी करता उड़ रहा था।

और टूटे रोशनदानों में दुबके बैठे कबूतर युगल मटर मटर आंखें घुमा रहे थे। कितना भोला परिन्दा है यह। लेकिन जब इकबाल ने पलट कर दूसरी तरफ देखा तो शमा के कमरे के आगे लगी हरी बेल पर लटका सा कौआ, कांव-कांव कर रहा था। उसे बरामदे में चाट चटनी से भरे लुढ़कते दौने दिख रहे थे।

हलसती के वक्त ऐसे में खाना कौन बनाता! सब ने शायद चाट पकौड़ी से काम चलाया। और छू हो गई। इकबाल ने यह सोचा और गैलेरी में रखी दो चार मटकियों को खोल-खोलकर देखा। सब सूखी पड़ी थी अतः वह आगे बढ़ा।

तभी उसे आबेदा दिख गई। पदचाप सुनकर वह कमरे से बाहर निकल आई थी। सदा मुस्कराते चेहरे को भी आज उदास देखकर इकबाल ने पूछा—'हलो, सब खैरियत तो है। शमा?' उसने सवालिया अंदाज में हाथ हिलाया।

'शमा भीतर कमरे में गुमसुम विराजी है। पहले देर तक नमाजें पढ़ती रही। सिजदे में सिर रखे रोती रही और अब कुछ पढ़ रही है। आओ हम अभी यहीं बैठें।'

आबेदा और इकबाल बरामदे में पड़े तख्ते पर बैठ कर इस नाजुक मसले पर विचार करने लगे।

'तुम मुसलमान भाइयो को क्या हो गया है! क्या एक बहिन की भी हिफाजत न कर सकोगे? जैदी एक और तुम सब! कमाल है वह दरिंदा इसे फिर रौंद गया।'

'आबेदा, हम क्या करें? क्या शमा बच्ची है? फिर दुबारा इसने हमसे कोई बात नही की। पता नही क्या हमसे छिपती रही है। शायद दूसरी मरतबा यह अपनी मरजी से खाई मे गिरी।'

'नहीं। जैदी ने इसे धमकाया था।' आबेदा ने शमा के कमरे की तरफ नजर उठाई 'खैर अब क्या करना चाहिए! मुझे तो डर लग रहा है कहीं यह कुछ गलत सलत न कर बैठे। इसकी यह चुप्पी अल्ला कसम मुझे तो भयभीत कर रही है—इकबाल।

'क्या यह घर जाने को तैयार नही?

'नही। मैंने समझाया। कहा लोकल हूँ। मेरे घर चलो। तबियत सभल जाए तो चली जाना। अपनी खाला को बुलाओ पर यह तो जनाब टस से मस नही हो रही। होठो ही होठो मे बुदबुदा रही है।'

'आघात लगा है। मरदूद जैदी ने इसे तबाह कर दिया। ओह! आज गर्मी भी सिद्दत की है। मेरा तो पसीना ही नही सूख रहा।' इकबाल कमीज के पल्ले से हवा करने लगा।

'क्या हम इसके मगेतर नदीम को इत्तला करें?'

'वह विदेश मे है। फिर अब मगेतर नही है वह। शमा के बारे मे सब कुछ जान गया सो रिश्ता तोड लिया।'

'वह तो पता है मुझे। लेकिन शायद धन के लालच मे आ जाए। मरहूम जुबेर साहब काफी सम्पत्ति छोड गए है।'

इकबाल कुछ न बोला। उसने सिगरेट सुलगाई और सोचने की मुद्रा में बैठा रहा।

'मेरा तो विचार है। यदि नदीम मान भी जाए तो भी शमा को उसके साथ शादी नहीं करनी चाहिए।'

'क्यों ?' श्रावेदा पाँव समेट कर सीधी बैठ गई।

'नदीम, शमा का खालाजाद यानी मौसेरा भाई है। फिर भाई के साथ बहन की शादी! तौबा! मेरे दिमाग में यह लिजलिजी व्यवस्था बैठ नहीं रही।' इकबाल ने धुआं छोड़ा।

'लेकिन हमारे समाज में ऐसा जायज है।' हँसी श्रावेदा।

'जायद तो यह 'मुता' भी है ?' लेकिन कुछ कहते-कहते रुक गया वह।

'लेकिन अब औचित्य नहीं तो सुधार होना चाहिए, क्यों ?'

'बेशक !' इकबाल ने फिर लम्बा कश खींचा।

'बेशक !' श्रावेदा ने मुँह बनाकर इकबाल की नकल की तो वह हँसा।

'तुम्हारा क्या विचार है ?'

'मेरा विचार है कि गलत मान्यताओं से हमें छुटकारा मिले। लेकिन हमें पहले बड़ी समस्याओं पर विचार करना चाहिए।'

'मसलन ?'

'मसलन—शिया और सुन्नी मुसलमानों की वर्तमान समस्या !

'मैं इसी मसले पर बहुत दिनों से विचार कर रहा हूँ। हम युवा लोगों को इस दिशा में एक नियोजित अभियान चलाना चाहिए। दोनों सम्प्रदायों को करीब लाने में वैवाहिक संबंध महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

'तो तुम किसी शिया युवती से शादी करोगे !

'मैं तो शादीशुदा हूँ। हाँ अपने भाई को इसके लिए तैयार करूँगा।

'कोई है नजर में ?'

'कुलसूम मुझे जच गई है। सीधीसादी अध्यापिका है वह।'

'लेकिन यह इरादा कब किया ?'

'जब से शमा के साथ ट्रेजेडी हुई। पहले मेरा विचार शमा के लिए था। लेकिन तभी मालूम हुआ कि शमा के साथ अगर जैदी ने फिर दगा किया तो 'अमुक' उसे साथ दे सकेगा।

'कौन है यह अमुक। हम भी तो जानें।'

'जो भी है सामने आ जाएगा। पहले हमें शमा का मन देखना है।'

'लेकिन तुम्हारे अभियान के अनुसार शमा के लिए भी तो 'शिया युवक चाहिए। आबेदा ने चश्मा उतार कर पोंछा और फिर से लगा लिया।

'जो युवक मैंने तजबीज किया है—वह शिया ही है। मैं उसके वालदैन तक से बात कर आया हूँ। समझने पर वे मान गए हैं।'

'और अगर शमा ने शिया को मना कर दिया तो। जैदी के कारण उसे इन लोगों से नफरत हो गई हो।

'इसी विचार को बदलने के लिए तो कर रहा हूँ मैं। मेरी कोशिश ही यह है कि शमा यह मानने को बाध्य हो जाए कि 'शिया' लोग बुरे नहीं, बल्कि कुछ 'जैदी' ही बुरे होते हैं। आबेदा मैं ऐसा प्यारा युवक शमा को पसन्द कराऊँगा जो उसके तमाम दाग धो देगा। दुआ करो कि खुदा मुझे कामयाबी दे।

'लेकिन इस 'शिया सुन्नी' के झमेले में बुजुर्ग ऐतराज करेंगे।'

'जरूर करेंगे लेकिन उन्हें समझाया जाएगा। और वे समझेंगे भी। विनय और दृढ़ता पूर्वक किया गया आग्रह फलीभूत होता है। हम अध्यापक हैं। कुछ अब बनेंगे सो अपने जीवन का एक लक्ष्य यह भी बनालें तो शिया और सुन्नी मुसलमानों के मध्य बनी यह खाई पाटी जा सकती है।

'शायर साहब। यह योजना अच्छी ही नहीं बहुत उपयोगी।'

'तुम्हारा समर्थन मिलेगा न।' इकबाल मुस्कराया।

'मैं तो हर तरह से तैयार हूँ। कहो क्या, हुक्म हासिल है?'

'अभी कुआरी हो न।' शरारत की इकबाल ने।

'शक है क्या?' आवेदा ने मुँह बनाया।

'नहीं, नहीं। फिर ऐसा करो कि किसी 'शिया' के लिए सोचो।'

'मुझे ऐतराज नहीं पर पापा ने लड़का देख लिया है।'

'खैर छोड़ो। शमा इबादत से फारिग हो गई होगी। चलो उसे देखते हैं।'

शेष बचा सिगरेट का टुकड़ा बूट तले मसल कर वह खड़ा हो गया।

'मैं यहीं बैठी हूँ तुम जाओ।' आवेदा ने इकबाल को धकेल दिया। इकबाल शमा के कमरे पर आया। शमा किवाड़ के पीछे खड़ी थी। और शायद आवेदा व उसकी बातें सुन चुकी थी। इकबाल को देखकर पीछे हट गई। वह।

'मुझ गुनाहगार तक तुम क्या आए हो?'

'गुनहगार। तुम गुनहगार कैसे हो गई?' इकबाल तपस्वी सदृश उसके हावभाव देखकर चकित था। काले लिबास में थी शमा। उसके हाथ में लाल जिल्द वाला 'पंजसूरा (कुरान की पाँच विशेष सूरतों का संग्रह) था। बाल खुले कंधों पर छितरे थे। बरसाती रात में घटाओं के मध्य धुले चाँद सा उसका गोरा मुखड़ा, दिव्य और आकर्षक लग रहा था। इकबाल को शमा बहिश्ती हूर सी पाक तनस लगी।

कमरा शांत निस्तब्ध। लोबान की सुगंधी से भरा हुआ।

'शमा। तिलावत कर रही थी तुम?'

लेकिन शमा संगमरमर की मूर्ति बनी अविचल खड़ी रही।

अपना सामान तैयार करो।' इकबाल ने फिर कहा तो उसके अधर हिले—

'आखिरत का सामान बाँध चुकी म। मरने को उद्यत हूँ। भेजो मौत का फरिश्ता शमा ने पलकें बन्द कर ली। जैसे तलवार के वार की प्रतीक्षा में हो और वह वाए इकबाल करेगा।

'अपने भाई के रहते बहिन मर नहीं सकती शमा।

इकबाल की आँखें भर आईं। 'तुम मुझे पराया मान रही हो?'

शमा ने अचरज से आँखें खोल दी। तो इकबाल हिम्मत करके आगे बढ़ा। और उन निर्निमेष आँखों में देखता हुआ बुदबुदाया—

'जैदी ही मारने और जिलाने वाला नहीं। मुसलमान हो खुदा पर यकीन रखो। वह निहायत मेहरबान और तौबा कुबूल करने वाला है। शमा भावुकता छोड़ो। पलायन प्रवृत्ति पर विजय पाओ और नई जिन्दगी शुरू करो। बीते वक्त को साँप की केंचुली की तरह उतार कर नया कवच धारण कर लो।

लेकिन मेरे सभी सहारे टूट चुके। बपा को बहुत रोका पर वह रुकी नहीं।' शिशिर में एकाएक सावन उमड़ आया।

'मैं तो कहीं नहीं गया! उस वक्त तक साथ दूँगा जब तक कि तुम्हारे पाँव जम नहीं जाते यकीन करो—शमा।'

इकबाल और आगे बढ़ा तो शमा का जिस्म लरजने लगा। वह बादल की तरह इकबाल पर झुक गई और उससे लिपट कर फफक-फफक कर रोने लगी। अचानक।

'रोओ नहीं बहिन! मैं तुम्हारी मनोदशा समझ रहा हूँ। सामान बाँधो और घर चलो। मैं तुम्हारा क्लीयरेंस ले आता हूँ। उमदा प्रतीक्षा कर रही होगी!' इकबाल ने शमा की पीठ सहलाई। उसे धीरज बँधाया।

लेकिन उसने इकबाल को छोड़ा नहीं। अजीब मिलन था यह। आबेदा भी अन्दर आ गई थी और अपने आँचल से आँसू पोंछ रही थी।

'मैंने तुम दोनो का वार्तालाप सुन लिया। पर अब तो मन को कुछ नही भायेगा। इकबाल मैंने तुम्हे समझने मे भूल की। सको तो मुझे माफ कर देना।'

'तुम धीरज से बैठो तो।' मुश्किल से इकबाल ने शमा को बिठलाया। उसके अश्रु पोछे।

'निराश मन को समझाओ। तुम्हारे यो टूटने पर जोड़ी की बन आयेगी। कहा मानो तुम सब कुछ कर सकती हो। तुम्हे वापस इज्जत की जिन्दगी मिलेगी।

'यह समव नही। मेरा मन और इच्छाएँ मर चुकी।

'मैंने एक बार अपनी योजना बताई थी तुम्हे। अपना तन, मन, धन अभागे अशिक्षित बच्चो के लिए अर्पित करेंगे। एक स्कूल खोलना। सरकार 'एड' देगी। अपनी प्रतिभा का उपयोग करना। लोग तुम्हारे सम्पर्क से सुधरेंगे। मुसलमानो म जागति का बीडा उठाओ। यह हमारा सामाजिक सच्चा धम है।

कल्पना करो स्वच्छ वातावरण, हरेभर पेडो के झुरमुट मे एक सफद सुथरी पाठशाला। किलकारियाँ मारते मासूम बच्चे और उन्हे शिक्षित करती तुम सी गरिमामयी अध्यापिकाएँ। सरकारी नही। वह तुम्हारी निजी सस्था होगी अत सफलता पूवक चलेगी - बहना! रोआ नही अपना और नन्हे नागरिको का निर्माण पुनर्निर्माण करो

इकबाल शायर था। आखें मूँद कर कल्पना म खो गया तो शमा अवाक् उसे देखने लगी। उसके अन्तर मे हूक सी उठी। यह हो जाए तो कितना सुन्दर भविष्य होगा और इस विचार के आते ही उस मृत मन मे जिजीविषा जागत हुई। तूफान से चटकी शाख पर पुन कोपल फटन लगी।

शमा हर्षातिरेक आंखो स बह रहे आसुओ को दोनो हथेलिया म रोकने का असफल प्रयास करने लगी।

'मैं मरूँगी नहीं। खुदकुशी नहीं करूँगी इकबाल भाई।'

'शाबाश! क्या तुम्हारे मन में शिया सुन्नी का फर्क है?'

'नहीं। मैं शिया नहीं, सरवर जैदी से नफरत करती हूँ।'

'थोडी त्रुटि रह गई शमा!'

'जैदी से भी नहीं। उसकी कलुषित भावना से नफरत—बस?'

'हाँ यह ठीक है। पानी है गला सूख गया।' यह सुनते ही आबेदा ने सुराही से पानी भरा और दोनों को पिलाया। अशांत मन शांत हुए। तो इकबाल धैर्यपूर्वक बोला। 'जैदी के बारे में क्या खयाल है?'

'उसका नाम न लो मेरे सामने। वह हर कोण से धोखेबाज निकला। शमा का चेहरा कुंचित हो गया। होंठ दुहरे हुए।

'तब तुम मेरी पसंद देखो। अपनी तो देख ही चुकी।'

'क्या मतलब?'

'मतलब यह कि मैं चाहूँगा तुम शिया के साथ शादी करो।'

शमा निरुत्तर हो नीचे देखने लगी। फिर उसने उसाँस भरा और बोली—

'भाई, बहिन के लिए बेहतर सोच सकता है।'

'खुदा करे तुम्हारा यह विश्वास बना रहे।' इकबाल मुस्कराया। फिर इधर उधर की कुछ बातें हुई। और कानपुर का प्रसंग छिड़ गया। तो शमा ने स्पष्ट कहा—

'राजस्थान उत्तर प्रदेश से मिला है। और कानपुर से जोधपुर। मैं राजस्थान में एडजेस्ट हो सकूँ तो ठीक रहेगा। रहा वहाँ का हिसाब। सो अवसर पाकर वहाँ जाऊँगी और कोई तस्फिया हो जाएगा। खाला और रिश्तेदारों का त्यागने का विचार नहीं है। पर अब भावी जीवन का निर्धारण तुम करोगे भाईजान!

'मैं अपनी जिम्मेदारी का यथाशक्य निर्वाह करूँगा—नि स्वार्थ। पर तुम्हारा सदैव यही प्रयत्न रहना चाहिए कि हम मुसलमान एक हैं तथा बड़े छोटे का भेद मिटाने की सोचेंगे—ठीक।'

'मजूर है।' शमा ने गर्दन हिलाई।

तुम कायरता छोड़ोगी। यह निर्मूल भय अनर्थों की जड़ होता है। भला साप के मुँह से छूट कर वापस उसकी बाँबी में क्यों गई ? और फिर हमें पूछा तक नहीं।'

'मुझे जैदी ने भय दिखाया। कहा—'मुता' के दौरान मुझे पूछे बिना तुम हस्पताल क्यों गई ? मैं तुम्हें कोर्ट में खड़ा कर दूँगा। ऐसे में फजीती होती सो मुझे झुकना पड़ा।'

'वह और कोर्ट में खड़ा कर देता ? खैर अब क्या हो। वह बात तो गई। भविष्य में निर्भीक बनोगी न ?

'बनूँगी नहीं। अब बन चुकी हूँ।'

'तो वह कौन है जो तुम अपनी बहिन के लिए तय कर चुके हो ?'

आबेदा स्त्रीसुलभ जिज्ञासा रोक नहीं पा रही थी। 'बताओ न !' उसने इकबाल का कधा झकझोरा।

मितभाषी मृदुभाषी नजीला सजीला सा युवक है वह। जिसे देखते ही 'हाय अल्ला' कह कर दिल थाम लोगी तुम !'

'नाटक छोड़ो। बताओ न कौन है ?'

'अभी बताता हूँ। पहले तुम एप्लीकेशन लिख दो। मैं कॉलेज से तुम्हारा हिसाब ले आऊँ ताकि फिर फी हो सकें। देखती नहीं पूरा होस्टल खाली हो चुका है।'

इकबाल ने जेब से कागज निकाला और पेन खोल कर शमा के आगे कर दिया तो उसने अथॉरिटी लिख दी।

आओ आबदा अपन लोग चलें।'

'और मैं यहाँ अकेली रहूँगी ?' शमा खड़ी हुई।

'क्यों, अभी तक तो थी।' 'वह हँसने लगा।' तुम 'उससे' बात करो और अपना सामान बाँध लो देखो वह आ रहा है। 'अरे नीचे वाले, ऊपर आओ भई! तुम्हें तुम्हारी जिन्दगी बुला रही है --'

सीढ़ियों मे पदचाप हुई। तो शमा और आवेदा ने एक दूसरी का मुँह देखा और वे बरामदे मे आ गई। इकबाल रवाना हो चुका था।

शमा का दिल बुरी तरह से धड़क उठा। उसने इधर उधर कनखियों से देखकर सामने नजर उठाई तो वह खिल गया --'अरे यह तो 'परवेज' है दोनों के मुँह से बेसाख्ता निकल गया।

'आवेदा, तुम नीचे आ जाओ' इकबाल ने बाहर से पुकारा तो शमा को आगे धकेल कर आवेदा ने चप्पलें पहन ली।

'मुबारक हो। यह ब्रह्मचारी कैसे चक्कर मे आ गया' और वह भी नीचे उतर गई।

अब परवेज शमा के एकदम सामने खड़ा था।

'शमा जी '

'जी !' शमा अचकचाई।

'मैं अजनबी हूँ ?'

'नहीं। हम दस माह से एक साथ ट्रेनिंग कर रहे हैं।'

'धन्यवाद। पाँचों उँगलियाँ समान नहीं होती न!'

'कदापि नहीं!' शमा की गर्दन झुकी आ रही थी।

तो ज्यादा कहना निरर्थक है। आओ 'हमराही' नए सफर के लिए अपना सामान बाँधे' और शमा खड़ी रही पर परवेज उसका सामान जमाने लगा था। 'इकबाल भाई कमाल के हैं उन्होंने मेरे मम्मी डैडी को भट तैयार कर लिया। शिया सुन्नी के मामले मे पहले वे झिझके पर फिर मान गए। मेरे फादर राजस्थान रोडवेज जोधपुर संभाग मे अधिकारी हैं '

परवेज ने संक्षिप्त परिचय दे दिया। शमा चकित थी।

'इकबाल ने जब तुम हस्पताल में थी, सॉरी जब 'आप' हस्पताल में थी मुझसे बात की थी। और मैं आपके बारे में सोचने लगा था। फिर मैंने जदी से बात की। उसका मन जाचा तो जवाब नकारात्मक मिला। वह 30 अप्रेल से आगे आपके बारे मे विचार नहीं रख रहा था। उसके एक मित्र ने भी ऐसा फितूर पाला था जिसका अजाम घटिया ही निकला और यह भी बता दूँ कि जदी ने बीबी को तलाक नहीं दिया है। 25 तारीख को स्टेशन मिला था मुझे '

परवेज रुका तो शमा ने गर्दन उठाई—'वहाँ?'

'वहाँ उसने अपना सामान बुक करा दिया। अब आप कभी भी रफू चक्कर हो जाएगा। उसका चरित्र ठीक नहीं है शमा जी! कल वह आशा के साथ पाली मे था आज शायद यहाँ आए अभी तो 28 ही हुई है बड़ा हलका निकला "दो दिन आपको और चाहेगा—'

'अब तो मैं उसे कच्चा न चबा जाऊँ ' शमा बिफरी।

'रहने दो मैं ही काफी हूँ। उसकी बेजा हरकतों ने ही मुझे उसके विरुद्ध बोलने पर मजबूर किया है खैर छोड़ो आप के दुर्दिन अब लद गए। मैं और मेरा परिवार आपको फिर चमकने का मौका देंगे। हमारे घर परदा नहीं है शमा जी।'

शमा कुछ न बोली।

'और हमारी शादी डैडी जोधपुर म ही करेंगे ' वह मुस्कराया तो शमा खुश हो उठी। वक्त गिरगिट की भाँति खूब रग बदलता है।

'आओ चलें' शमा और परवेज होस्टल से निकले। उन्होंने सड़क पर आकर टैक्सी को आवाज दे दी।

किन्तु आश्चर्य, तभी सामने से जैदी आता हुआ दिखाई पड गया।

'हलो शमा तुम किधर जा रही हो? जैदी ने परवेज को घूर कर देखा—

'तुम यहाँ इसके साथ ?'

'यह मेरे साथ जा रही है आपको मतलब?'

'मतलब तो यही कि मेरे साथ शमा स्थायी विवाह भी करेगी।'

'बीवी को गोली मारोगे? उनका मेरे नाम खत आया है। कहाँ दिया आपने तलाक? लिखित तलाक नामा है?' परवेज गम हो रहा था।

'तुम झूठे हो। कोई खत नहीं तुम्हारे पास। मेरे पास तलाकनामा लिखित है।'

जैदी हड़बड़ी में कह गया तो परवेज ने ठहाका लगाया—पकड़े गए न! शिया लोगों में तलाकनामा लिखित नहीं, होना दो गवाह होते हैं' फिर पलट कर शमा को देखा—'बैठ गई आप? चलो, नई सरदार पुरा, फस्ट रोड और खुद भी टक्सी में बैठ गया तो टैक्सी दौड़ गई। अब जैदी बड़बड़ाता सड़क पर अकेला खड़ा था।

□□□